❑ अनुक्रम ❑

# अणुव्रत

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

वर्ष : 55 ■ अंक 3 ■ 1-15 दिसंबर, 2009


| | | |
|---|---|---|
| ❑ महिलाएं युग को सही दिशा दें | *आचार्य तुलसी* | 3 |
| ❑ पारिवारिक जीवन : समस्या और समाधान | *आचार्य महाप्रज्ञ* | 5 |
| ❑ स्त्री सशक्तिकरण | *डॉ. सरोज कुमार वर्मा* | 9 |
| ❑ नारी अस्मिता को कसता विज्ञापन का मायाजाल | *सुप्रिया* | 13 |
| ❑ नारी जागृति प्रश्नों के घेरे में | *रूपनारायण काबरा* | 15 |
| ❑ नारी की गरिमा का मूल्यांकन हो | *साध्वी जयमाला* | 17 |
| ❑ साम्प्रदायिकता उन्मूलन में स्त्री की भूमिका | *विभा प्रकाश श्रीवास्तव* | 19 |
| ❑ उन्मूलन दहेज का नहीं बल्कि अनीतियों का | *सविता लखोटिया* | 23 |
| ❑ जब अपने ससुराल की दहलीज पर कदम रखा? | *प्रीति 'स्वीटी'* | 24 |
| ❑ नारी कितनी सुरक्षित व स्वस्थ | *हीरालाल छाजेड़* | 25 |
| ❑ नारी : परिवार की धुरी | *कुसुम जैन* | 27 |
| ❑ किसान महिलाओं की पहचान हो | *नरेन्द्र देवांगन* | 29 |
| ❑ विद्यादान सबसे बड़ा पुण्य | *डॉ. रामसिंह यादव* | 30 |


♦ संपादक ♦
डॉ. महेन्द्र कर्णावट

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

■ ***सदस्यता शुल्क :***

- **एक प्रति :** बारह रु.
- **वार्षिक :** 300 रु.
- **त्रैवार्षिक :** 700 रु.
- **दस वर्षीय :** 2000 रु.

■ ***विज्ञापन सहयोग:***

- **मुख पृष्ठ रंगीन 4 :** 10,000 रु.
- **मुखपृष्ठ रंगीन 2-3 :** 8,000 रु.
- **साधारण पृष्ठ पूरा :** 3,000 रु.
- **साधारण पृष्ठ आधा :** 2,000 रु.

■ ***शुल्क भेजने का पता :***

**अणुव्रत महासमिति,** 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2 (भारत)

- **फोन:** 23233345, 23239963
- **फैक्स:** (011) 23239963
- **E-mail :** anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
- **Website :** anuvratinfo.org

■ **स्तंभ**


- ❑ संपादकीय 2
- ❑ राष्ट्र चिंतन 14
- ❑ कविता 12, 16, 20, 21, 22
- ❑ झाँकी है हिन्दुस्तान की 26
- ❑ अ. महासमिति कार्यसमिति सूची 32
- ❑ अणुव्रत आंदोलन 31-39
- ❑ कृति 40




www. Terapanthinfo.com

# तार-तार हुआ लोकतंत्र

**समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध,**
**जो तटस्थ है, समय लिखेगा उनके भी अपराध।**

राष्ट्रभाषा हिन्दी के शिल्पकार रामधारी सिंह 'दिनकर' की ये पंक्तियां भारतीय राजनेताओं के चरित्र को उजागर करती हैं। आजादी के सातवें दशक में 9 नवम्बर 2009 को नवगठित महाराष्ट्र विधानसभा में राष्ट्रभाषा हिन्दी में शपथ लेने के कारण महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के विधायकों ने लोकतंत्र के साथ खिलवाड़ करते हुए समाजवादी पार्टी के विधायक अबू आजमी पर सदन में गुंडई ढंग से हमला कर हाथापाई की, थप्पड़-घूंसे मारे और माइक को छीन तोड़ डाला। यही नहीं इन विधायकों ने एक महिला सदस्य के साथ भी धक्का-मुक्की की। सदन में इन उद्दण्ड विधायकों ने 20 मिनट तक सदन की सारी मर्यादाओं को तोड़ते हुए हंगामा किया। बलिष्ठ भुजाओं वाले विधायकों की इस हरकत से भारतीय लोकतंत्र तार-तार हो गया। प्रांतवाद और भाषा के नाम पर पिछले वर्षों में क्षेत्रवाद और अलगाववाद का जो स्वरूप महाराष्ट्र में भड़काया जा रहा है, जिन शोलों को हवा दी जा रही है, उससे क्या देश की एकता-अखंडता पर आंच नहीं आयेगी? क्या यह लोकतंत्र और भारतीय संविधान का मखौल नहीं है?

संविधान में क्षेत्रीय भाषाओं में अभिव्यक्ति का अधिकार दिया गया है निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को। यह विधायक-सांसद की अपनी इच्छा पर निर्भर हैं कि वह किस भाषा में अपनी अभिव्यक्ति देता है। भाषा के नाम पर इस तरह की गुंडागर्दी, विखंडनवादी प्रवृत्ति राजद्रोह की श्रेणी में आता है। अतः इस बर्बरतापूर्ण कार्यवाही का पूरे देश में विरोध होना चाहिये क्योंकि मनसे विधायकों का यह कुकृत्य देश को तोड़ने की साजिश है।

मराठी अस्मिता के नाम पर ठाकरे बंधुओं ने पिछले वर्षों में जो राजनीति खेली है उसने प्रांतवाद को पनाह दी है। इस राजनीति ने भारत एक है, अखंड है इस सच्चाई को झुठलाने का प्रयास किया है। महाराज शिवाजी ने भारत की अखंडता के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया, लेकिन आज के तथाकथित राजनेता अपनी राजनीति चलाने के लिए देश की अखंडता को भी दाँव पर लगाने से नहीं चूक रहे हैं यही वह दुर्भाग्यपूर्ण पृष्ठ है जिस पर अकेले महाराष्ट्र को नहीं वरन् समूचे भारतवर्ष को सोचना है। लोकतंत्र को जीवित रखने के लिए इन अलगाववादी, सामंती, गुंडई तत्वों से हमें संधर्ष करना ही होगा।

विद्युत संचार 'इलेक्ट्रोनिक मीडिया' पर 9 नवम्बर को मनसे प्रवक्ता शिरीष पारकर, राम कदम जिस तरह से बोल रहे थे, सदन में जिस भाषा का उपयोग कर रहे थे उससे वे समझ रहे थे कि हमने जो कुछ किया है, सही किया है तथा हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा नहीं है। इसीके साथ यह भी कह रहे थे कि हम हिन्दी का सम्मान करते हैं, संविधान का सम्मान करते हैं पर मराठी संस्कृति हमारे लिए सर्वोपरि है। मराठी भाषा और संस्कृति की सर्वोच्चता को बनाये रखने के लिए ही हम संघर्ष कर रहे हैं। मनसे प्रवक्ता एवं विधायकों से यह पूछा जाय कि क्या उनके बच्चे मराठी स्कूलों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, क्या उनके घरों पर दैनिक जीवन में मराठी संस्कृति का चलन है? स्वयं विदेशी संस्कृति में पले-पुसे और वोटों के लिए मराठी भाषा-संस्कृति का राग अलापें, देश के संविधान को चुनौती देकर अपमान करें, राष्ट्रीय अखंडता को चोट पहुंचायें तो क्या यह हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह नहीं है?

भाषा और क्षेत्रवाद की वकालत करने वाले भूल गये कि लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने महाराष्ट्र में हिन्दी का अखबार शुरू कर आजादी के स्वर को बुलंद किया था। हिन्दी-मराठी के बीच खाई पैदा करने की साजिश को दरकिनार करते हुए हमें संकीर्णता और क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर भारत के जनतंत्र को बचाना है।

लोकतंत्र की अक्षुण्णता के लिए आवश्यक है कि धनबल, बाहुबल, जातिबल, भाषाबल, धार्मिकबल, क्षेत्रबल को नकारा जाये और देश के संविधान की मर्यादा पर जो हमला करते हैं, ऐसे तथाकथित बाहुबलियों को धूल चटाई जाये।

◆ **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

**महिलाएं सहनशील बनें, छोटी-छोटी बातों में उलझना छोड़े, नारी-सुलभ गुणों का ह्रास न होने दें और आत्मविश्वास को जागृत करें। ऐसा होने से ही वे प्रगति के शिखर तक पहुँच सकती हैं।**

# महिलाएं युग को सही दिशा दें

• आचार्य तुलसी •

डार्विन ने क्रम विकासवाद का सिद्धांत दिया। उसके अनुसार बन्दर का विकसित रूप मनुष्य है। यह सिद्धांत सत्य की कसौटी पर खरा नहीं उतर पाया है, पर मनुष्य ने बहुत बातों में क्रमिक विकास किया है और कर रहा है। यह तथ्य सूरज के प्रकाश की भांति स्पष्ट है। विकास के संदर्भ में पुरुष और महिला को अलग-अलग बांटा नहीं जा सकता। पुरुषों के लिए विकास अपेक्षित है, इसी प्रकार वह महिलाओं के लिए भी आवश्यक है। विकास विकास ही है, फिर चाहे वह पुरुष का हो या महिला का। विकास के कुछ बिन्दु सर्वसाधारण है। उन्हें केन्द्र में रखकर विचार किया जाए तो पुरुष और महिला दोनों के लिए समान रूप से विकास का प्रयत्न होना चाहिए। वे बिन्दु हैं ज्ञान, आस्था, चरित्र, मानवीय गुण आदि। कुछ बातों में स्त्री और पुरुष के बीच नैसर्गिक अन्तर है। उस प्राकृतिक अन्तर को ध्यान में रखते हुए महिलाओं के विकास पर विशेष बल देने की अपेक्षा है जिसको समय-समय पर धर्म, समाज और राजनीति के क्षेत्र में अनुभव किया जा रहा है।

महिला मानव समाज का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। समाज के हर घटक का अपना स्वतंत्र मूल्य है। उसकी पूर्णता से ही समाज पूर्ण बनता है। वर्तमान मानव-सभ्यता के आदिकाल में स्त्री और पुरुष के मध्य कोई लम्बी-चौड़ी भेद-रेखा रही हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। मध्ययुग में कई कारणों से समाज में पुरुष की प्रभुसत्ता स्थापित हो गई। फलतः स्त्री के अस्तित्व की उपेक्षा को शिकार होना पड़ा। उपेक्षित व्यक्ति कितना ही सक्षम और प्रतिभा-संपन्न हो, उसमें आत्मविश्वास की कमी हो जाती है। आत्मविश्वास के अभाव में विकास का स्वप्न कभी साकार नहीं हो सकता। इस दृष्टि से सबसे पहले अपेक्षा यह है कि महिलाएं अपना आत्मविश्वास जागृत करें।

शिक्षा के क्षेत्र में आज तीव्रगामी विकास हो रहा है, किन्तु महिलाओं की दृष्टि से उसकी गति मंद है। स्कूलों और कॉलेजों में छात्राओं का परीक्षा परिणाम अच्छा आता है। फिर भी अधिक लोग उनकी ऊँची शिक्षा के पक्ष में नहीं हैं। गांवों की स्थिति तो और भी चिंतनीय है। वहाँ तो प्राथमिक शिक्षा से आगे पढ़ाने की बात सोची ही नहीं जाती। बुजुर्ग माताएं स्वयं अशिक्षित हैं। उन्हें अक्षरज्ञान करने का अवसर भी नहीं मिला। ऐसी स्थिति में वैज्ञानिक ढंग से जीवन-यापन करने और परिवार का संचालन करने की बात बहुत कठिन है। इस समस्या से निपटने के लिए प्रौढ़-शिक्षा केन्द्रों की स्थापना और नयी पीढ़ी के लिए ऊँची शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा हो, यह अपेक्षा महसूस की जा रही है।

विगत दो दशकों में महिला समाज एक सीमा तक कुरूढ़ियों से मुक्त हो गया है। किन्तु इस प्रगतिशील युग में भी राजस्थान आदि कुछ प्रांतों की महिलाएं रूढ़ियों की गिरफ्त में सर्वथा मुक्त नहीं हो पायी हैं। एक रूढ़ि समाप्त होती है, दूसरी जन्म ले लेती है। **किसी रूढ़ि पर सामाजिक प्रतिबंध लगता है तो दूसरे रास्ते खोज लिये जाते हैं। उच्चवर्ग या साधन-संपन्न लोग जिस परम्परा का सूत्रपात करते हैं, वह समाज के लिए लक्ष्मणरेखा बन जाती है। मध्यम श्रेणी के लोग भी तथाकथित प्रतिष्ठा के व्यामोह में उस परम्परा का निर्वाह करते हैं और एक दिन वह रूढ़ि बनकर समाज का शोषण करने लगती है।** अनुकरण, आडम्बर और प्रदर्शन की मनोवृत्ति भी रूढ़ि-उन्मूलन के मार्ग में बाधक है। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें बुद्धि और विवेक के साथ विकास करने की अपेक्षा है।

पारिवारिक जीवन में शांत सहवास हर युग की न्यूनतम आवश्यकता है। महिलाओं के लिए यह और अधिक आवश्यक है। संदेह, ईर्ष्या, पक्षपात, असहयोग, स्वार्थी मनोभाव, कर्त्तव्यनिष्ठा की कमी आदि कई कारण हैं जिनसे शांत सहवास खंडित होता है। जहाँ शांत सहवास नहीं होता, वहाँ वातावरण दूषित और बोझिल हो जाता है। इससे आर्तध्यान बढ़ता है, मानसिक संतुलन बिगड़ता है और व्यवहार में कटुता आ जाती है। सामाजिक या पारिवारिक दृष्टि से भी यह स्थिति घातक है, धार्मिकता का बीज तो यहाँ अंकुरित ही नहीं हो पाता। इस परिस्थिति में सुधार होना नितांत अपेक्षित है, अन्यथा महिला विकास का नारा मात्र नारा बनकर रह जायेगा।

मुझे ऐसा लगता है कि महिलाओं में भीरुता, संकोच, लज्जा, कुंठा, अधीरता

आदि ऐसी मनोवृत्तियां हैं, जिनसे थोड़ा-बहुत लाभ होता होगा, पर नुकसान अधिक होता है। जो बहन अपने सुख-दुःख की बात तक प्रकट नहीं कर सकती, वह भला परिवार और समाज के लिए क्या कर सकती है? यदि मन पर किसी घटना का प्रभाव न हो जीवन-क्रम सामान्य हो तो यह स्थिति विशेष घातक नहीं है। किन्तु भीतर आकंठ भरी हो और उसे अभिव्यक्त करने की क्षमता न हो, तब उस स्थिति का निराकरण कैसे हो सकता है? निराकरण के अभाव में व्यथा बढ़ती है और कुंठा गहरी होती है। इस दिशा में हमारी ओर से काफी प्रयत्न हुआ है। उससे स्थिति में अन्तर भी आया है, पर वह पर्याप्त नहीं है।

महिलाओं के विकास में दूसरी बड़ी बाधा यह है कि अनेक रचनात्मक माध्यमों के द्वारा तो उन्हें प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा बल मिलता है, पर अब तक भी उसके प्रति परिवार और समाज के दृष्टिकोण में अपेक्षित परिवर्तन नहीं हुआ है। उसकी भीरु, संवेदनशील और भावुक प्रकृति का लाभ उठाकर उसे प्रताड़ित किया जाता है, जिससे वह अवसादग्रस्त होकर कुछ भी करने की क्षमता खो बैठती है। कुछ परिवार और कुछ महिलाएं इस स्थिति की अपवाद भी हैं, पर उनकी संख्या नगण्य-सी है।

सामान्यतः महिलाएं अपने सामाजिक व्यक्तित्व का निर्माण नहीं कर सकती। कारण, हर महिला के सामने परिवार की जिम्मेवारी ही प्रमुख है। उसकी अहम् भूमिका परिवार तक ही सीमित है। किसी विशेष आयोजन में भाग लेना, सभा-संस्था में काम करना, संगोष्ठियों में सम्मिलित होना, विचार-विकास की दृष्टि से विचार-चर्चा करना जैसी प्रवृत्तियों के लिए उसके पास समय ही नहीं बचता। ऐसी स्थिति में वह सामाजिक दायित्व निभा सके, महिलाओं का नेतृत्व कर सके, सेवा या सुधारमूलक कार्यों में हाथ बंटा सके, यह संभव ही नहीं होता। जब तक महिलाओं में कोई शक्तिशाली वर्ग तैयार नहीं होगा, उसमें अपनी जाति के लिए काम करने की तड़प जागृत नहीं होगी, तब तक महिला समाज के संबंध में हमारा जो स्वप्न है, वह पूरा कैसे हो सकेगा?

**■ नारी सुलभ गुणों का ह्रास न होने दें**

पुरुष शक्ति और नारी शक्ति परस्पर-सापेक्ष शक्तियां हैं। कभी पुरुष नारी को सहारा देता है और कभी नारी पुरुष का आलम्बन बनती है। नारी द्वारा पुरुष को पोषण मिलता है और पुरुष नारी को पोषण देने वाला बन जाता है।

नारी जीवन के प्रत्येक मोड़ पर पुरुष की संरक्षिका होती है। बचपन में पुरुष की सुरक्षा और पालन-पोषण का समग्र दायित्व माता पर होता है। यौवन में पुरुष की देखभाल उसकी पत्नी करती है। वृद्धावस्था में पुरुष की सेवा का काम उसकी पुत्रियां जितनी निष्ठा से करती हैं, पुत्र नहीं कर सकते। पुत्र व्यवसाय में व्यस्त रहते हैं। पिता की देखभाल के लिए उनके पास समय ही नहीं होता। पुत्रियां अपनी गृहस्थी की गाड़ी खींचती हुई भी वृद्ध पिता की बीमारी का संवाद पाकर दौड़ी-दौड़ी आती हैं और उसकी सेवा कर परम संतोष का अनुभव करती हैं।

**महिलाएं इस सत्य को सामने रखकर चलें कि कोई भी महापुरुष या देव उनका कल्याण नहीं कर सकता। वे स्वयं जागें और काम करें।**

हमारे यहाँ स्त्री और पुरुष के मूल्यांकन में कोई आग्रह नहीं है। अपने क्षेत्र में पुरुष का जितना मूल्य है, स्त्री का भी अपने क्षेत्र में उतना ही मूल्य है। दोनों में परस्पर सामंजस्य बिठाया हुआ है। इतना होने पर भी इस सत्य को तो नकारा नहीं जा सकता कि समाज में नारी जाति के प्रति अत्याचार हुए हैं, अन्याय हुए हैं। ऐसा क्यों हुआ? इस प्रश्न के संदर्भ में यदि कारणों की खोज की जाए तो सबसे पहले कारण है महिलाओं की अपनी दुर्बलता और सुषुप्ति। एक कहावत है जो सोता रहता है, उसकी भैंस पाड़े को जन्म देती है। इसका वाच्यार्थ यह है कि सोये हुए व्यक्ति को कोई भी धोखा दे सकता है। महिलाएं अपनी सुषुप्ति को तोड़कर उठीं तो उन पर होने वाले अत्याचारों का सिलसिला रुक-सा गया। आज भी जो महिलाएं सोयी हुई हैं, वे स्वयं पर होने वाले अन्याय को रोक नहीं सकतीं। इसलिए अपेक्षा इस बात की है कि अब महिलाएं जागें, करवट लें और अपनी क्षमताओं की पहचान कर गति करें।

महिलाएं यदि सोचती हैं कि कोई उन्हें जगाने के लिए आएगा, यह उनका भ्रम है। कोई क्यों जगाएगा उन्हें? वे स्वयं जागें और काम करें। महिलाएं इस सत्य को सामने रखकर चलें कि कोई भी महापुरुष या देव उनका कल्याण नहीं कर सकता। एक डाकू ने एक पंडित को लूटने की कोशिश की। पंडित अपना सब कुछ उसे देने को तैयार हो गया, पर एक पुस्तक वह अपने पास रखना चाहता था। डाकू ने पूछा क्या है इस पुस्तक में, जो तू इसे नहीं दे रहा है? पंडित सहमता हुआ बोला यह मेरी धर्म की पुस्तक है। इसमें धर्म है। डाकू उत्तेजित होकर बोला इसमें धर्म है! धर्म पुस्तक में नहीं, जीवन में उतारो, तभी कल्याण होगा। यह तो कमा खाने का रास्ता है। दुनिया को धर्म के नाम पर धोखा देते हो। मैं इसे जरूर लूंगा।

एक डाकू ने कितनी अच्छी शिक्षा दे दी! दूसरों का सहारा ताकते रहने से व्यक्ति का जागरण नहीं हो सकता। महिलाएं कब तक परमुखापेक्षी बनकर बैठी रहेंगी। वे स्वयं साहस करें और आगे बढ़ने का संकल्प स्वीकार कर चलना शुरू कर दें। पीछे देखना कायरता है। कायरता विकास की सबसे बड़ी बाधा है। विकास करने के लिए अभय और धैर्य की अपेक्षा है। बहनें सहनशील बनें, छोटी-छोटी बातों में उलझना छोड़े, नारी-सुलभ गुणों का ह्रास न होने दें और आत्मविश्वास को जागृत करें। ऐसा होने से ही वे प्रगति के शिखर तक पहुँच सकती हैं।

# पारिवारिक जीवन : समस्या और समाधान

**परस्पर के संबंधों में आ रही कटुता, तलाक और आपराधिक कृत्य के पीछे एक बड़ा कारण शराब भी है। परिवारों को तबाह और बर्बाद करने में इसकी प्रमुख भूमिका होती है। शराब पीकर आदमी की मनःस्थिति क्या होती है, बताने की अपेक्षा नहीं है। उसका खामियाजा सबसे ज्यादा पत्नी को भुगतना पड़ता है। रोज-रोज की मारपीट और कलह से तंग आकर पत्नी अपने पति से संबंध विच्छेद के लिए विवश हो जाती है अथवा आत्महत्या जैसा खतरनाक निर्णय लेती है।**

● आचार्य महाप्रज्ञ ●

आचार्य तुलसी ने समाज के दो चित्र प्रस्तुत किये थे-स्वस्थ समाज और बीमार समाज। क्या उस समाज को स्वस्थ समाज कहा जा सकता है, जिसमें व्यवस्थागत बहुत तरह के दोष हैं? अगर समाज की व्यवस्था त्रुटिरहित हो तो कोई व्यक्ति दहेज की मांग नहीं कर सकता। दहेज प्रथा को मैं नम्बर एक की समस्या मानता हूँ। भ्रूणहत्या का स्थान नम्बर दो पर है। पहली बीमारी है दहेज की। दहेज के डर से ही भ्रूणहत्या हो रही है। लड़की पैदा हुई तो दहेज की व्यवस्था करनी पड़ेगी। लड़का हुआ तो उससे वंश परंपरा चलेगी और वह बुढ़ापे का सहारा भी बनेगा। यह सोच है आज के आदमी की।

भ्रूणहत्या मूल समस्या नहीं है। इसकी पृष्ठभूमि में है दहेज की समस्या। भ्रूणहत्या तो समस्या का एक फलित है। दहेज की समस्या है इसलिए लड़कियों से छुटकारा पाने की बात आदमी के मन में आ सकती है। भले ही आगे की बात वे सोच न पा रहे हों कि लड़की नहीं होगी तो बहू कहाँ से मिलेगी?

आगे की बात आदमी बहुत कम सोचता है। एक ही बात उसके दिमाग में उभरती रहती है कि लड़की होगी तो लाखों रुपयों का इंतजाम करना पड़ेगा। पालन-पोषण में जो लगेगा, वह अतिरिक्त। हर तरह से नुकसान ही नुकसान। मानवीय पक्ष पर भी आदमी नफे और नुकसान की दृष्टि से सोचता है। धन और पदार्थ आदमी के मन-मस्तिष्क पर इस तरह हावी है कि मानवीय सरोकारों को भी वह लाभ-हानि की दृष्टि से ही देखता है।

समाज में सभी लोग साधन-संपन्न नहीं हैं। ऐसे लोग भी हैं जो साधनहीन और गरीब हैं। दहेज की मांग पूरा करने में वे असमर्थ हैं। उसके लिए सरल उपाय यही है कि समस्या की जड़ को ही काट दो। लड़की समस्या है। जन्म लेने से पहले ही उसे समाप्त कर दो। आपराधिक घटनाओं पर विचार करें और सर्वे करें तो पाएंगे कि बहुत सारे अपराधों की पृष्ठभूमि में धन और संबंधों की ही प्रमुख भूमिका है।

हैरानी की बात यह है कि महिलाओं की प्रताड़ना में महिलाओं का सबसे बड़ा हाथ है। दहेज के लिए जला कर मार डालने में सास और ननद इन दोनों का बड़ा हाथ होता है। अगर स्त्रियां यह संकल्प कर लें कि उनके द्वारा किसी स्त्री का अपमान और उसकी प्रताड़ना नहीं होगी तो स्थिति में बहुत बड़ा बदलाव आ जाएगा। संभव-लालच और लिप्सा स्त्री में ज्यादा हो परिवार में दहेज न लाने की या कम लाने की शिकायत प्रायः सास के द्वारा ही सबसे पहले होती है।

आज दहेज की बीमारी कैंसर से भी अधिक घातक बन रही है। वह अनेक कन्याओं की बलि ले रही है। कन्या या तो भ्रूण के रूप में ही समाप्त कर दी जाती है अथवा जन्म भी लिया है तो आगे तिल-तिल कर उसे मरना पड़ता है। सैकड़ों कन्याएं अपनी उपेक्षा और स्वयं को माता-पिता की चिंता का कारण समझते हुए आत्महत्या का रास्ता भी अपना लेती है। यह एक बहुत बड़ी त्रासदी है। समय रहते इस विषय में समाज सचेत नहीं हुआ तो मानव जाति अपने लिए बहुत बड़ा संकट खड़ा कर लेगी। प्रकृति का संतुलन जब भी गड़बड़ाता है, कोई न कोई बड़ा संकट जरूर खड़ा होता है। आश्चर्य यह है कि समाज के चिंतनशील लोग भी इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

अतिरिक्त मुफ्तखोरी की लत भी समाज में बहुत ज्यादा विकसित हो रही है। बिना पुरुषार्थ किये, मिलने वाला धन बहुत कार्यकारी और सार्थक नहीं होता। ऐसा धन बहुधा बुराई में ले जाता है। मैंने देखा कि जिन युवकों ने अपने पुरुषार्थ और परिश्रम से धन कमाया, अर्जित किया, वे तो सफल रहे किन्तु जिन्होंने विरासत के रूप में अपनी पैतृक संपत्ति पाई या जिन्होंने जुए, सट्टे के द्वारा धन कमाया, वे जल्दी ही कुमार्गगामी हो गए। थोड़े ही दिनों में उनका धन समाप्त हो गया।

समाज में तीसरी समस्या है संबंध विच्छेद या तलाक की। आज तलाक के मामले बहुत ज्यादा सामने आ रहे हैं। मैंने एक बार कहा था कि अब कुछ नए कोर्स शुरू होने चाहिए। शिक्षा और व्यापार के साथ नए-नए कोर्स आ रहे हैं। कम्प्यूटर कोर्स ने कई नई संभावनाओं के द्वार खोल दिये हैं। क्या अब विवाह के पूर्व वर और कन्या के लिए दाम्पत्य जीवन को सुखी और सफल बनाने का कोर्स नहीं होना चाहिए? जैसे विवाह के पूर्व जन्म-कुंडली का मिलान होता है,

क्या वैसे ही दोनों के संवेग, उनकी रूचियों, आदतों, मनोवृत्तियों और स्वभाव का भी मिलान नहीं होना चाहिए? क्या इस बात का प्रशिक्षण नहीं मिलना चाहिए कि वैवाहिक जीवन को किस तरह शांतिपूर्ण एवं खुशहाल बनाया जा सकता है? केवल धन-संपत्ति के आधार पर रिश्ता जोड़ा, पहले से कोई प्रशिक्षण नहीं दिया तो क्या उसका परिणाम तलाक और संबंध विच्छेद के रूप में सामने नहीं आएगा? यह अवश्य है कि माता-पिता का अपनी संतान के प्रति दायित्व होता है। पाल-पोस कर उसे बड़ा कर देने और शादी-विवाह कर उसका घर बसा देने के बाद वे अपने दायित्व को पूरा मान लेते है किन्तु इस दायित्व को भार समझकर माता-पिता जैसे-तैसे इस बोझ को उतारने की कोशिश करने लगें तो क्या इसे सम्यक् दायित्व निर्वाह कहा जाएगा? किसी तरह पैसे का प्रबंध कर लड़की को घर से विदा करने का प्रयत्न होता है, वह कितना उपयुक्त है? कोई कह न सके कि लड़की कुंआरी रह गई, इस लोकलाज से बचने के लिए संभवतः ऐसा किया जाता होगा।

यह भी प्रतीत होता है कि माता-पिता का जितना ध्यान धन-संपत्ति की ओर रहता है, उतना अपनी कन्या के शुभ भविष्य की ओर नहीं रहता। कई बार ऐसा सुना जाता है कि धनवान परिवार के अनुपयुक्त व्यक्ति के साथ लड़की का रिश्ता कर दिया गया है। ऐसे भी कई प्रसंग सामने आए कि रात को शादी हुई, विदा होकर लड़की ससुराल गई और शाम को तलाक की स्थिति आ गई। इस तरह की स्थितियां पश्चिमी देशों में तो हैं। वहाँ शादी-विवाह कोई खास मायने नहीं रखता। एक व्यक्ति के जीवन में कितनी ही लड़कियां आती हैं। एक महिला के जीवन में कितने ही पुरुष आते हैं। किन्तु भारतीय संस्कृति में 'पाणिग्रहण' की प्रथा रही है। एक बार जिसका हाथ थाम लिया, जीवन भर उसे निभाना पड़ता है। भारतवर्ष का इतिहास इसका साक्षी है। यहाँ अगर तलाक की समस्या प्रबल बनती है तो यह सचमुच चिंतनीय बात है।

परस्पर के संबंधों में आ रही कटुता, तलाक और आपराधिक कृत्य के पीछे एक बड़ा कारण शराब भी है। परिवारों को तबाह और बर्बाद करने में इसकी प्रमुख भूमिका होती है। शराब पीकर आदमी की मनःस्थिति क्या होती है, बताने की अपेक्षा नहीं है। उसका खामियाजा सबसे ज्यादा पत्नी को भुगतना पड़ता है। रोज-रोज की मारपीट और कलह से तंग आकर पत्नी अपने पति से संबंध विच्छेद के लिए विवश हो जाती है अथवा आत्महत्या जैसा खतरनाक निर्णय लेती है।

एक बार आचार्यश्री के पास राजस्थान की एक बहन का पत्र आया। उस पत्र में उस बहन की दर्द भरी कहानी थी। उसने लिखा था 'गुरुदेव! मेरे पति शराब बहुत पीते हैं। उसका खामियाजा मुझे भुगतना पड़ता है। काम-धंधा कुछ नहीं करते और शराब के लिए मुझसे पैसे की मांग करते हैं। मैं उनके लिए पैसे का प्रबंध कहाँ से करूँ? मेरे पिता और भाई आर्थिक दृष्टि से इतने संपन्न नहीं है। वहाँ से भी मैं किसी प्रकार की आर्थिक मदद नहीं ले सकती। जब मैं पति के सामने असमर्थता व्यक्त करती हूँ तो वे मुझे शारीरिक रूप से प्रताड़ित करते हैं। वे अभद्रता पूर्ण व्यवहार की लक्ष्मण रेखा को भी लांघ देते हैं। एक दिन उन्होंने कहा 'मुझे तुम पैसे लाकर दो, चाहे इसके लिए शरीर ही क्यों न बेचना पड़े।' मैं शराब और मन दोनों से टूट चुकी हूँ। एक बच्चा है, उसका मुंह देखना पड़ता है, अन्यथा मैं कभी अपने जीवन का अंत कर लेती। आप मुझे मार्गदर्शन दें। आपकी शरण में हूँ।'

एक बहन ने अपने शराबी पति की दास्तान सुनाते हुए कहा 'जब तक मेरे पास गहने थे, उन्हें बेचकर पति की आवश्यकता पूरी करती रही। गहने समाप्त हो गए तो पीहर से उधार लेकर काम चलाती रही। अब मेरे लिए कहीं से कोई सहारा नहीं है। पति से इसी तरह मार खाती रही तो जल्दी ही अपंग हो जाऊँगी। मेरा जीवन नरक बन गया है।'

शराब के नशे में सब कुछ संभव है क्योंकि शराब से विवेक चेतना पूरी तरह नष्ट हो जाती है। अपराधों की जो लंबी सूची है, नशा उनका मुख्य कारण है। गरीबी, अभाव और दुःख ये आदमी को शराब जैसी बुराई की ओर धकेल देते हैं। मेरे पास एक महिला आई। बड़ी देर तक वह अपनी गरीबी का रोना रोती रही। महाश्रमण ने पूछा 'पति कोई काम करता है या नहीं?'

वह बोली 'उसकी क्या बात पूछते हैं महाराज! वह तो दिन-रात शराब में डूबा रहता है।'

अब बताएं कि जिस घर का मुखिया शराब पीकर दिनभर घर में पड़ा रहे, उसका परिवार खुशहाल कैसे रह सकता है?

पंडित रविशंकर महाराज गुजरात राज्य के प्रसिद्ध समाज सुधारक संत रहे। गांधीजी के पक्के अनुयायी और अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष। आचार्य तुलसी के प्रति उनकी बड़ी श्रद्धा थी। एक बार उन्होंने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा एक बार गुजरात में श्रमिकों के बीच मेरा जाना हुआ। श्रमिकों ने कहा 'हमारी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर है। हमें जो वेतन मिलता है, उससे जीवन बहुत कठिन हो रहा है। आपका प्रभाव तो बहुत ऊपर तक है। सरकार भी आपकी बात पर ध्यान देगी। कृपा कर हमारे वेतन में वृद्धि करवा दें।'

मैंने कहा 'वेतन बढ़े या न बढ़े, किन्तु आपकी बचत को बढ़ा देने का सूत्र मेरे पास है। अगर आप लोग उस पर अमल कर सकें तो निश्चित रूप से आपकी आय बढ़ जाएगी।'

श्रमिकों ने सूत्र जानना चाहा तो मैंने कहा 'आप अपनी कमाई का कितना भाग बीड़ी पर खर्च करते हैं?'

श्रमिकों ने हिसाब लगाकर कहा 'महीने में इतनी रकम हमारी इस लत पर व्यय हो जाती है।'

मैंने पूछा 'और शराब पर?'

श्रमिकों ने बड़े संकोच के साथ कहा 'महीने में डेढ़-दो सौ रुपये खर्च हो ही जाते हैं।'

'तो फिर आप इन बुराइयों को छोड़ दें, प्रतिमाह तीन सौ रुपये की बचत होने लगेगी।'

इन बुराइयों से मुक्त होने का प्रयत्न जरूरी है। आचार्य तुलसी ने नैतिकता से शून्य धर्म की हमेशा आलोचना की, उसके प्रति सावधान भी किया। अर्थ के पीछे इतनी ज्यादा आसक्ति बढ़ गई है कि उसके सामने धर्म-कर्म सब गौण हो रहा है। माता-पिता का लड़के के प्रति विशेष मोह होता है, लड़की के प्रति कम। लेकिन आज तो ऐसी घटनाएं भी हो रही हैं कि बड़े लड़के ने आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होते ही माता-पिता को किनारे कर दिया। जीवन-यापन के लिए एक निश्चित राशि की व्यवस्था कर दी और अपनी अलग दुनिया बसा ली। अनेक लोग मेरे पास आंसू बहाते हुए कहते हैं 'सोचा था पढ-लिखकर लड़का बुढ़ापे का सहारा बनेगा, किन्तु उसी ने जीवन का सबसे बड़ा दर्द दिया। अब हम उसे एक भार की तरह लग रहे हैं। हमारे साथ उसका व्यवहार अमानवीय है। हम उपेक्षित जीवन जी रहे हैं।'

पता नहीं क्यों यह धारणा बना ली गई कि बेटा कमा कर खिलाएगा, आराम देगा। लोग बेटे में सुख और बेटी में चिंता और दुःख देखते हैं। मेरे पास एक वृद्ध व्यक्ति आया। मैंने देखा उसकी आंखों से आंसू टपक रहे थे। उसने कहा 'महाराज! बेटों ने घर से निकाल दिया। एक बेटी है, अब वही मेरी सेवा कर रही है। उसी के घर में रह रहा हूँ।'

बेटी-बेटे में अंतर करने का दृष्टिकोण बदलना चाहिए। ऐसे भी परिवार देखने को मिले कि पांच-सात बेटे हैं और अकेली माँ किसी तरह बचे हुए जीवन के दिन काट रही है। व्यक्तिवादी सोच के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, समाज में एक अकल्पित बदलाव आया है।

संस्कृति के संक्रमण ने इसमें अपनी भूमिका निभाई। आज के ग्लोबलाइजेशन के युग में दुनिया सिमट कर बहुत छोटी हो गई है। एक ही दिन में आदमी कई देशों का भ्रमण कर लेता है। स्वाभाविक है कि इससे उसकी विचारधारा प्रभावित होगी। भिन्न परिवेश में रहकर वह अपनी संस्कृति और सभ्यता को कब तक अपनाए रख सकेगा?

बहुत जरूरी है कि सकारात्मक परिवर्तन के लिए धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में भी क्रांति हो। अहिंसा भी क्रांति का विषय है। हिंसा का संबंध केवल मारने और न मारने से ही नहीं है। प्रचलित सामाजिक बुराइयों से कैसे छुटकारा मिले, इस पर भी ध्यान केन्द्रित होना चाहिए। इसके लिए परिवार में प्रशिक्षण का क्रम चले। विद्यालय और संस्थानों में जो प्रशिक्षण चलता है, वह कार्यदक्षता बढ़ाने का प्रशिक्षण है, बुद्धि को कुशाग्र बनाने का प्रशिक्षण है। आदमी के सोच-विचार से उसका संबंध नहीं है। पारिवारिक जीवन में सौहार्द कैसे बढ़े, उस प्रशिक्षण का कोई प्रावधान नहीं है, कोई कोर्स नहीं है। यह प्रशिक्षण तो एक अलग तरह का प्रशिक्षण है, जिसमें जीवन के मूलभूत तत्त्वों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

**व्यक्ति और परिवार अगर स्वस्थ है तो समाज और राष्ट्र के स्वस्थ होने का सपना भी साकार हो सकता है। परिवार स्वस्थ नहीं है, परस्पर में असहिष्णुता है, खींचातान है तो समाज में उसके स्पष्ट लक्षण दिखाई पडेंगे। अगर आदमी में भावनात्मक विशेषताएं और गुण आ जाएं तो निश्चित रूप से वह अपने परिवार को खुशहाल रख सकता है।**

जीवन के लिए दो चीजें बहुत जरूरी हैं लक्ष्य और संकल्प। जीवनयात्रा के लिए ये दोनों बहुत आवश्यक है। जिसने जीवन का न तो कोई लक्ष्य बनाया, न कोई संकल्प किया, वह जीवन भर भटकता रहेगा। कहाँ जाना है? अगर यही पता नहीं है तो फिर व्यर्थ में चलते रहने से फायदा क्या?

गांव का एक देहाती रेलवे स्टेशन पर गया और बोला 'बाबूजी! मुझे एक टिकट दो।'

'कहाँ का?' बुकिंग काउंटर पर बैठे बाबू ने पूछा।

देहाती शरमा कर बोला 'बाबू, मुझे अपनी ससुराल का टिकट चाहिए।'

'ससुराल है कहाँ?'

'यह तो मुझे पता नहीं।'

टिकट देने वाला टिकट कहाँ का देगा? किस स्टेशन का कुछ पता नहीं, वह पहुँचेगा कहाँ? पहले हमारा लक्ष्य स्पष्ट हो कि हमें पाना क्या है?

लक्ष्य है शांति। मुझे शांति के साथ जीना है। लड़ाई-झगड़ा करते हुए नहीं जीना है, तनाव के साथ नहीं जीना है। रोते-रोते नहीं जीना है। गालियां देते-देते नहीं जीना है। जो दिन-रात कलह और तनाव का जीवन जी रहे हैं, उनके बारे में कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने जीवन का कोई लक्ष्य नहीं बनाया।

विवाह सामाजिक दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। यहाँ से भविष्य का एक निर्धारण होता है। विवाह को व्यक्ति अपनी जीवन यात्रा के लिए आश्वासन मानता है। बड़ी आशाओं और उम्मीदों के साथ वह घर बसाता है। किन्तु उसके साथ प्रायः कोई गंभीर चिंतन नहीं होता। केवल रंग-रूप देख लिया, शैक्षिक योग्यता देख ली और बात पक्की हो गई। जिसके साथ पूरा जीवन व्यतीत करना है, क्या उसकी योग्यता का मापदंड सिर्फ रूप और सौन्दर्य ही पर्याप्त है?

हर व्यक्ति का भाव और संवेग अपना-अपना है। पति का अपना और पत्नी का अपना। जहाँ संवेगों का इतना बड़ा भेद है, वहाँ एकरूप होना बड़ा कठिन काम है। पहले से अगर लक्ष्य हो कि हमें शांति के साथ रहना है तो विवाह जैसे मामले में लोग अपने जीवन साथी का चुनाव बहुत गंभीरता से करेंगे।

सुखी और सामंजस्यपूर्ण जीवन का सबसे बड़ा सूत्र है सहिष्णुता। अगर विवाह के पूर्व कोई यह लक्ष्य बना लेता है कि वैवाहिक जीवन के प्रथम क्षण के साथ ही मुझे शांति, समता और सहिष्णुता का विकास करना है तो उसका जीवन शांतिपूर्ण रहेगा। अगर सहन करने की शक्ति नहीं है तो जीवन भर पति-पत्नी में कलह चलती रहेगी। हमारे सामने इस तरह का दुःखी जीवन जी रहे कितने ही लोगों की राम कहानी आती रहती है। कारण एक ही मिलता है कि सहन करने की शक्ति नहीं है। सहिष्णुता का विकास करने को कोई तैयार नहीं है।

मुनि जीवन और गृहस्थ जीवन दोनों में अनुकूल, प्रतिकूल स्थितियां आती हैं। जो मुनि आने वाली अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों को सहन करना नहीं जानता, वह मुनि जीवन के पालन में सफल नहीं हो सकेगा। महावीर ने एक मुनि के लिए बाईस परीषहों का विधान किया। ये बाईस परीषह उसकी कसौटी हैं। मुझे पता नहीं, बाईस परीषहों की सूची विवाह करने वालों के लिए क्यों नहीं बनाई गई? उनके सामने भी एक कसौटी होती-वैवाहिक बंधन में बंधने जा रहे हों इन परीषहों को सहन की क्षमता हो और सहन करने का संकल्प हो, तभी विवाह करो। यह होना चाहिए था, वह मानदंड या कसौटी सामने होती तो शायद जीवन को सुखमय बनाने की दृष्टि प्राप्त हो जाती।

मुनि बनने से पहले एक साधक को मुमुक्षु अवस्था में प्रशिक्षण के दौर से गुजरना पड़ता है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में और हमारे पास रहकर लंबे समय तक अध्ययन और शिक्षण-प्रशिक्षण लेना पड़ता है। पूरी ट्रेनिंग के बाद परिपक्व हो जाने पर ही उसे मुनि दीक्षा दी जाती है।

क्या विवाह भी एक दीक्षा नहीं है? अंतर इतना ही है कि एक सामाजिक दीक्षा है, दूसरी धार्मिक और आध्यात्मिक दीक्षा। दीक्षा कैसी भी हो, वह पूरे प्रशिक्षण के बाद ही दी जानी चाहिए। स्कूल और कॉलेजों में विज्ञान आदि विषयों की लिखित, मौखिक शिक्षा भी दी जाती है। क्या विवाह कोई गुड़िया-गुड्डे का खेल है जो उसके लिए कोई प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं? किसी से पूछा जाए कि विवाहसूत्र में बंधने जा रहे हो, इसके लिए कोई प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं? किसी से पूछा जाए कि विवाहसूत्र में बंधने जा रहे हो, इसके लिए कोई प्रशिक्षण लिया या नहीं? तो शायद अधिकांश लोग यही कहेंगे कि इसके लिए क्या प्रशिक्षण?

मेरे पास एक परिवार आया। साथ में एक युवती। परिवार वालों ने बताया महाराज! इसे गुस्सा बहुत आता है। गुस्से में कभी गली में, कभी चौराहे पर जाकर बैठ जाती है। बड़ी मुश्किल से इसे मनाकर घर लाते हैं। कोई कुछ कह दे तो रूठ जाती है और दो-दो दिन तक अन्न-पानी छोड़ देती है।

लोग विवाह के अवसर पर लड़के-लड़की की जन्मकुंडली का मिलान करवाते हैं कि गण मिल रहे हैं या नहीं? गण मिलते हैं तो रिश्ता पक्का हो जाता है। वास्तविक गण तो तभी मिलेगा, जब प्रशिक्षण मिला होगा। आजकल लड़के-लड़कियों को इतने लाड-प्यार से पाला जाता है कि उन्हे जीवनोपयोगी शिक्षा देना मां-बाप जरूरी नहीं समझते। विवाह के बाद लड़की जब दूसरे परिवेश में पहुँचती है तो उसे स्वयं को उसके अनुसार ढालना पड़ता है। अगर वह ससुराल के वातावरण में ढल जाती है तो उसका निर्वाह हो जाता है, अन्यथा जीवन भर समस्याएं ही सामने आती हैं।

प्रशिक्षण बहुत जरूरी है। लक्ष्य बनाएं कि जीवन को सार्थक बनाना है, जीवन को शांति के साथ जीना है। उन्नत जीवन मूल्यों को जीवन में स्थान देना है। जीवन भी तो एक साधना है। कर्मवाद की भाषा में क्रोध, अहंकार, माया, छल-कपट, लोभ-इनको शांत करने की साधना करना है। लक्ष्य स्पष्ट है और साथ में साधना का संकल्प है तो फिर जीवन शांतिपूर्ण व्यतीत हो सकता है।

गृहस्थ जीवन मुनि जीवन से कम बड़ी साधना नहीं है। इसमें पग-पग पर विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इसके लिए प्रतिदिन साधना और प्रशिक्षण का क्रम चलते रहना चाहिए।

मेरी दृष्टि में शांति से बड़ी जीवन की कोई और उपलब्धि नहीं हो सकती। पास में करोड़ों की संपत्ति है, फिर भी ऐसे लोगों को मैंने आंसू बहाते हुए देखा है। जीवन में शांति नहीं, दिमाग पूरी तरह से गर्माया हुआ है, आदमी रोएगा नहीं तो क्या करेगा? इसलिए शांति जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है, बड़ी दौलत है।

हर व्यक्ति शांति से रहना चाहता है। अशांति से जीना किसी का शौक नहीं, मजबूरी हो सकती है। हर व्यक्ति की यह अभीप्सा होती है कि मेरे घर में शांति रहे, पर रहती कहाँ है? प्रायः हर परिवार में लड़ाई-झगड़े और आपसी मन-मुटाव होता है। अशांति का चूल्हा चौबीस घंटे जलता रहता है। लकड़ी से जलने वाले चूल्हे तो बहुत कम हो गए, किन्तु लड़ाई-झगड़े का चूल्हा तो चौबीस घंटे जलता रहता है। क्या इसे शांत करने का कोई उपाय हो सकता है?

इस पर चिंतन करें और ऐसी व्यवस्था बनाएं कि घर-परिवार में भी संयम का प्रशिक्षण चले। कठिनाई यही है कि इस तरह के प्रशिक्षण की जरूरत नहीं समझी जाती। घर में कलह और अशांति है तो इसके शमन का उपाय नहीं खोजा जाता। ध्यान दूसरी-दूसरी चीजों पर जाता है। प्रशिक्षण के द्वारा स्थिति पूरी तरह से बदल सकती है और सुखमय पारिवारिक जीवन जिया जा सकता है।

व्यक्ति और परिवार अगर स्वस्थ है तो समाज और राष्ट्र के स्वस्थ होने का सपना भी साकार हो सकता है। परिवार स्वस्थ नहीं है, परस्पर असहिष्णुता है, खींचातान है तो समाज में उसके स्पष्ट लक्षण दिखाई पडेंगे। अगर आदमी में भावनात्मक विशेषताएं और गुण आ जाएं तो निश्चित रूप से वह अपने परिवार को खुशहाल रख सकता है।

# स्त्री सशक्तिकरण

• डॉ. सरोज कुमार वर्मा •

**स्त्री कमजोर है। इसलिए उसे शक्तिवान बनना है। मगर सवाल उठता है कि स्त्री कमजोर हुई कैसे? उसे कमजोर बनाया किसने? जाहिर है पुरुषों की बनाई हुई समाज-व्यवस्था में इसका सबसे ज्यादा श्रेय पुरुषों को ही जाता है। पुरुषों ने स्त्रियों को कमजोर बनाया है और इसका आधार लिंग-भेद है।**

स्त्री सशक्तिकरण स्त्रियों की स्वतंत्रता और समानता पर आधारित अवधारणा है। यह वह आंदोलन है जो ठोस जमीन पर स्त्रियों को मजबूती से खड़ा करना चाहता है। यद्यपि इसका लम्बा इतिहास है, परन्तु इसे इस नई सदी के द्वार पर स्त्रियों के आसन्न भविष्य का नक्शा कहा जा सकता है। यह इस स्थापना में विश्वास करता है कि जिस प्रकार पानी गर्म होते-होते वाष्प में बदल जाता है, उसी प्रकार परिवर्तन की मात्रा बढ़ते-बढ़ते अंततः एक गुणात्मक अंतर में बदल जाती है। धीरे-धीरे ही सही, स्त्रियों की स्थिति में जो तब्दिली आती जा रही है, वह भविष्य में पूर्णता को प्राप्त कर लेगी।

परन्तु इस पूर्णता को प्राप्त करने वाली प्रक्रिया को और तीव्र करने के विकल्पों पर विचार करने के पूर्व 'स्त्री सशक्तिकरण' शब्द-विन्यास की अर्थवत्ता पर विचार कर लेना आवश्यक है। इस शब्द-युग्म की उत्पत्ति इस लक्ष्य की स्वीकृति से हुई है कि स्त्री कमजोर है। इसलिए उसे शक्तिवान बनना है। मगर सवाल उठता है कि स्त्री कमजोर हुई कैसे? उसे कमजोर बनाया किसने? जाहिर है पुरुषों की बनाई हुई समाज-व्यवस्था में इसका सबसे ज्यादा श्रेय पुरुषों को ही जाता है। पुरुषों ने स्त्रियों को कमजोर बनाया है और इसका आधार लिंग-भेद है। पुरुषों ने पुरुष होने के कारण अपने लिये जो नियम-कानून बनाये, स्त्रियों के लिये वे सब वर्जित कर दिये। इसीलिये 'सीमोन' कहती हैं "औरत? औरत के लिये कोई स्वप्नद्रष्टा एक बड़ा ही सीधा सूत्र उच्चारित करता है। औरत? औरत एक गर्भ है, अंडाशय है और एक औरत है ये शब्द काफी हैं उसको परिभाषित करने के लिये। पुरुष फिर भी अपनी पाशविक प्रकृति के लिए लज्जित नहीं होता, बल्कि उसको इस बात का अभिमान होता है कि वह एक पुरुष है। औरत शब्द इसलिए अपमानजनक नहीं है कि औरत का होना पुरुष के लिए एक विद्वेषपूर्ण स्थिति है। अपनी इस भावना का औचित्य पुरुष जीव-विज्ञान में खोजना चाहता है। औरत सुस्त, चंचल, बेवकूफ, कठोर व वासनात्मक, क्रूर और अवमानित कुछ भी हो सकती है। पुरुष एक ही साथ इन सारे गुणों को उस पर आरोपित करता है। वस्तुतः इन सारे विरोधाभासों के बावजूद औरत सिर्फ एक औरत रहती है।" 'स्त्री : उपेक्षिता' (द सेकेण्ड सेक्स का हिन्दी रूपांतरण, रूपांतरकार : डॉ. प्रभा खेतान, पृ. - 32, हिंद पाकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड।

भारत में वैदिक युग में तो स्त्रियों का पूजनीय स्थान था। तब स्त्री-पुरुष, एक-दूसरे के पूरक रूप में स्वीकृत थे। स्त्रियों को समानता और शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। परंतु कालांतर में ये अधिकार छिनते चले गये। स्त्रियां परतंत्र, असमान और अशिक्षित होती चली गईं। पुरुषों ने उन्हें घर में कैद करके पति की सेवा, संतानोत्पत्ति और गृह कार्य को उनका एकमात्र दायित्व सुनिश्चित कर दिया। मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति और दयनीय हो गई। वे एक बेजान वस्तु की भांति हो गईं और उनकी हर सांस पर पुरुषों का अधिकार हो गया। यद्यपि ऐसा होने के आर्थिक, सामाजिक ओर भी कई कारण थे, परंतु इसका सर्वाधिक मुख्य कारण लिंग-भेद था अर्थात् स्त्री का स्त्री होना। इसे स्वीकारते हुए 'सीमोन द बोउवार' भी लिखती हैं "मैं बस इतना ही कहना चाहूँगी कि शारीरिक भिन्नता के बावजूद ये सीमायें औरत की अनिवार्य और स्थायी नियति के रूप में नहीं स्वीकारी जा सकती। शारीरिक भिन्नता यह नहीं स्थापित करती कि औरत अन्या, गौण या यौनजनित सोपानीकरण में नीचे की सीढ़ी पर बैठी हुई है। ये जैविक परिस्थितियां औरत को अधीनस्थ भूमिका स्वीकारने के लिए मेरी समझ में बाध्य नहीं कर सकती।" (वही, पृ. - 36)।

ऐसी ही समझ भारत में आधुनिक काल में भी विकसित हुई, जिसके फलस्वरूप स्त्रियों की स्थिति सुधारने के प्रयास शुरू किये गये। उनके लिए शिक्षा, समानता और स्वतंत्रता की वकालत की गई और आर्थिक भागीदारी में अवसर उपलब्ध कराये गये। यद्यपि तब इसकी मात्रा न्यूनतम थी, परंतु एक प्रक्रिया शुरू हुई जो पिछली सदी में तेजी से आगे बढ़ी। इसमें पश्चिमी नारीवादी आंदोलनों का भी भरपूर योगदान किया। प्रसंगवश यहाँ उल्लेख कर देना आवश्यक है कि पश्चिम में स्त्री की मुक्ति के लिए चलने वाले नारीवादी आंदोलन यह प्रमाणित करता है कि चाहे पूरब हो या पश्चिम, स्त्रियों की स्थिति कमोबेस सब जगह एक-सी ही है। लिंग-भेद का शिकार दोनों जगह है, इसलिये दोनों ही जगह उसे पुरुष शोषण से रू-ब-रू होना पड़ता है। इसीलिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 1975 का वर्ष 'अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष' घोषित किया गया। यह दुनिया भर में विभिन्न स्तरों पर महिलाओं के प्रति बरती जा रही असमानता एवं उसके कारणों की

**पुरुष से संघर्ष कर अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के क्रम में स्त्रियां पुरुष का जो अनुकरण मात्र कर रही हैं; यानी पुरुष जैसे कपड़े पहनना, पुरुष जैसे बाल कटाना, पुरुष जैसे सिगरेट- शराब पीना, पुरुष जैसे चलना-बोलना, उठना-बैठना आदि, वह स्त्री स्वतंत्रता नहीं बल्कि दोयम दर्जे का नकली पुरुष होने का उपक्रम मात्र है। यह लिंग-भेद की समस्या का समाधान नहीं; बल्कि उसका स्थगन है और प्रकारांतर से पुरुष-श्रेष्ठता की स्वीकृति भी।**

ओर ध्यान दिलाने की संयुक्त राष्ट्र की कोशिश थी।

यद्यपि इस तरह के राजनैतिक प्रयास एक बार सामाजिक जीवन में स्वीकृत नहीं हो जाते, परंतु इससे एक प्रक्रिया का प्रारंभ जरूर होता है जो अंततः सामाजीकरण की ओर ले जाता है। नारी स्वतंत्रता के संबंध में भी ऐसा ही हुआ है। पिछली सदी में नारी ने अपनी स्वतंत्रता की दिशा में एक लंबी दूरी तय की है। अब उसकी उस छवि में बदलाव को स्वीकृति मिलने लगी है जो नारीत्व का प्रतिमान और उसकी आत्मोपलब्धि का पर्याय थी। लेकिन इस स्वीकृति के बावजूद वह उस छवि में मनचाहा रंग भरने का सामर्थ्य अब भी पूरी तरह प्राप्त नहीं कर सकी है। स्त्री सशक्तिकरण इसी संपूर्ण सामर्थ्य के लिये किया गया प्रामाणिक और प्रतिबद्ध प्रयास है। इस प्रयास की पहली परिणति अपना निर्णय स्वयं लेने का अधिकार है, जिसमें अपना कार्य और अपनी छवि दोनों को निर्धारित करने का अधिकार शामिल है। यह अधिकार किसी के देने से मिलने वाला नहीं है, बल्कि स्त्रियों को स्वयं आगे बढ़कर हासिल करना है। यह संतुलित शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और विवेक संपन्न आत्मबोध से संभव हो सकता है। इस आधार पर स्त्री सशक्तिकरण का मूल्यांकन स्त्री-समुदाय को चार वर्गों में बांट कर किया जा सकता है।

पहला उन स्त्रियों का है जो आर्थिक रूप से परतंत्र और आत्मबोध से शून्य हैं। इनकी स्थिति सबसे ज्यादा पिछड़ी हुई है, क्योंकि आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मबोध दोनों से वंचित रहने के कारण इन्हें न तो भविष्य की चिंता है, न वर्तमान से शिकायत और न अतीत पर कोई अफसोस। जैसी जिंदगी उन्हें मिल गई है उसे चुपचाप जी रही हैं। ये पिता के घर से डोली में बैठकर पति के घर इसलिये आती हैं कि अब यहाँ से उनकी अर्थी ही निकलेगी। यह चिंताजनक है। लिंग-भेद के आधार पर स्त्रियों का शोषण करने वाला पुरुष-समाज इस सहनशील वर्ग का अपने शोषण के लिए ढाल की तरह प्रयोग करता है। इस वर्ग को इस यथास्थितिवादी स्थिति से बाहर निकालना है। इसके लिये इस वर्ग की स्त्रियों को समुचित शिक्षा देना, समस्याओं के प्रति जागरूक करना, स्थिति के प्रति असहिष्णु बनाना तथा आंतरिक स्तरों पर बेचैन करने की आवश्यकता है।

इस तरह की बेचैनी, असहिष्णुता तथा जागरूकता दूसरे वर्ग की स्त्रियों में पायी जाती है, क्योंकि दूसरा वर्ग उन स्त्रियों का है, जो आर्थिक रूप से परतंत्र परंतु आत्मबोध से युक्त है। आत्मबोध के कारण इनमें निर्णय करने की क्षमता होती है, परंतु आर्थिक परतंत्रता के कारण उनकी इस क्षमता को अवसर नहीं मिलता। उनका भरण-पोषण करने वाला पुरुष उनके निर्णयों को स्वीकार नहीं करता, उल्टे अपने तमाम निर्णयों के पालन किये जाने की अपेक्षा करता है। परिणामस्वरूप ऐसी स्त्रियों की स्वतंत्रता बाधित हो जाती है और उनका आत्मबोध कुंठित हो जाता है। फिर वे छलावा, दीनता, हिंसा, प्रतिशोध तथा आक्रामकता का शिकार हो जाती हैं, जिसके कारण परिवार में सामंजस्य नहीं बिठा पातीं। ऐसी स्त्रियों को यदि संभव हो सके तो अर्थोपार्जन के अवसर तलाशने चाहिए और उनके पुरुषों को उदार होते हुए उनके निर्णयों का सम्मान करना चाहिए ताकि पारिवारिक समरसता बनी रहे।

तीसरा वर्ग उन स्त्रियों का है जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र परंतु आत्मबोध से शून्य हैं। इनकी स्थिति भी बेहतर नहीं है। इस वर्ग के अंतर्गत ज्यादातर मेहनतकश कामगार स्त्रियाँ आती हैं, जो इतनी कमजोर और लाचार होती हैं कि अपनी आय पर भी अपना अधिकार नहीं रख पातीं। इनके आय का उपयोग इनके निकम्मे या कमाऊ पति अपने दारू पीने या जुआ खेलने जैसे कामों में करते हैं। ये स्त्रियां लगातार अगवा, बलात्कार तथा मार-पीट का या तो शिकार होती रहती हैं या इस तरह की आशंकाओं से त्रस्त रहती हैं। अतः इस वर्ग की स्त्रियों के लिये भी स्वतंत्रता और सशक्तिकरण जैसे शब्दों की कोई अर्थवत्ता नहीं रह जाती। ये शब्द उनके लिए अर्थवान हो सकते हैं यदि उन्हें आत्मबोध से युक्त किया जाये।

परंतु इन तीनों वर्गों से भिन्न और एक हद तक बेहतर स्थिति चौथे वर्ग की है, इसलिये कि यह वर्ग उन स्त्रियों का है जो आर्थिक रूप से स्वतंत्र और आत्मबोध से युक्त दोनों हैं। **अर्चना वर्मा** के अनुसार "भारतीय संदर्भों में यह अभिजात समुदाय है। वर्तमान भारतीय जगत् में आभिजात्य की निशानी पश्चिम के साथ वैचारिक संपर्क, सांस्कृतिक संगति और भाषिक समर्थता है। स्वभाविक है कि इस श्रेणी के लिये

भारतीय नारीवादी आंदोलन का वैचारिक उपजीव्य पश्चिम का नारीवादी विमर्श हो। उसके लिए आत्मनिर्णय के अधिकार का अर्थ होगा। ऐसी स्वतंत्रता जिसमें सुरक्षित एकल जीवन, अविवाहित दाम्पत्य अथवा 'लिव इन' संबंध, अविवाहित मातृत्व या विवाह के भीतर भी मातृत्व से इंकार का अधिकार, अनचाहे दाम्पत्य से बाहर निकल आने की सुविधा, एकाधिक विवाह या मनचाहे प्रेम-प्रसंगों और संबंधों के स्वच्छंद जीवन जैसे चुनावों की निर्बाधता हो। संक्षेप में कहें तो जो चाहे सो करने और होने की स्वतंत्रता नितांत निजी एकांतों से लेकर व्यावसायिक दायरों तथा सार्वजनिक विस्तारों तक। बहुत छोटा-सा एक ऐसा समूह भी अस्तित्व में आ चुका है जो अपने लिए एक पुरुष निरपेक्ष स्वायत्त स्त्री संसार रच लेने का अभिलाषी है और समलैंगिक मित्रताओं, संबंधों की वकालत में व्यस्त है।'' ('सशक्तिकरण पिछली सदी के स्वप्न का आगामी यथार्थ', ''वागर्थ'', अंक-75, सितंबर 2001, पृ. -162, भारतीय भाषा परिषद्, 36 ए, शेक्सपीयर सरणी, कलकत्ता- 700017)।

चूंकि यह चौथा वर्ग आत्मबोध से युक्त और आर्थिक रूप से स्वतंत्र है इसलिए स्वभावतः भारतीय स्त्रीवादी आंदोलन का नेतृत्व भी इसी के हाथ में रहा और इसने बाकी स्त्री-समाज के उत्थान के लिए प्रयास भी किये, परंतु सफल नहीं हो सका, इसलिए कि इसने स्थानीयता का ख्याल नहीं रखा। यद्यपि इसने स्वतंत्रता, समानता, मानवीयता, न्याय तथा सम्मान आदि से संबंधित कई आधारभूत सवाल उठाये, मगर अपनी स्थानीयता से कटे होने के कारण ये सारे सवाल अप्रासंगिक हो गये, उनका व्यावहारिक कार्यान्वयन नहीं हो सका। पश्चिमी स्त्रीवादी आंदोलन का अनुकरण करते हुए इस वर्ग के लिए भी स्त्री, उसकी देह और उसकी खूबसूरती उपभोग

की वस्तु मात्र होकर रह गई। यद्यपि इस उपभोगवाद की जड़ में सुनियोजित बाजारवाद है, जो गहने, कपड़े और सौंदर्य प्रसाधन से लैस हो जाने को ही मुक्त जीवन का पर्याय मानता है; लेकिन इस विचलन के बावजूद स्त्रियां इसकी गिरफ्त में आ रही हैं। फैशन मॉडल्स, ब्यूटी कम्पिटीशन, ग्लेमर्स हीरोइनें तथा विश्व-सुंदरियां आदि का आदर्श इसके प्रमाण हैं। ऐसी स्थितियां अनियंत्रित जीवन-दर्शन की समर्थक बन जाती हैं और उन्मुक्तता को ही स्वतंत्रता की संज्ञा देने लगती है। नैतिकता का मुद्दा यहीं पर जटिल समस्या का रूप ले लेता है।

क्योंकि नैतिकता निरपेक्ष नहीं होती। वह स्थान और समाज सापेक्ष होती है। इसीलिए जिस तरह की नैतिकता पश्चिम के लिए स्वीकृत है, उसी तरह की नैतिकता भारत के लिए स्वीकृत नहीं है। देह-उद्योग, यौन-स्वच्छंदता, अविवाहित दांपत्य, अविवाहित मातृत्व आदि कुछ अपवादों को छोड़कर सामान्यतः बाकी स्त्री वर्ग के लिए सत्य नहीं है, इसलिए उनका अभीष्ट भी नहीं है। भारतीय नारीदेह और यौन आधारित इस तरह की जीवन शैली के बगैर भी अपनी स्वतंत्रता और समानता के लिए सचेष्ट और सजग है। वह सुखमय दांपत्य, अनुकूल परिवार और किलकते बच्चे जैसी आकांक्षाओं की तुला में देह और यौन संबंधी आकांक्षाओं को गौण स्थान पर रखती है, क्योंकि वह समझती है कि भारतीय नैतिकता, संस्कार और परिवार के संदर्भ में स्त्री इनके बगैर भी स्वतंत्र हो सकती है।

मगर अभी स्त्री सशक्तिकरण के लिए जो आंदोलन चल रहा है, वह शोषित मनःस्थिति के पहले चरण में है, जिसमें अक्सर शोषित वर्ग शोषक वर्ग का प्रतिरूप बन जाना चाहता है, क्योंकि इसी में उसे अपनी मुक्ति का आभास होता है। परंतु, यह समाधान नहीं है, क्योंकि प्रतिरूप होने का तात्पर्य मूल होना नहीं बल्कि उसका नकल मात्र है, जो उसे दोयम दर्जे का बनाकर और शोषित स्थिति में स्थापित कर देता है। इसलिए पुरुष से संघर्ष कर अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के क्रम में स्त्रियां पुरुष का जो अनुकरण मात्र कर रही हैं; यानी पुरुष जैसे कपड़े पहनना, पुरुष जैसे बाल कटाना, पुरुष जैसे सिगरेट-शराब पीना, पुरुष जैसे चलना-बोलना, उठना-बैठना आदि, वह स्त्री स्वतंत्रता नहीं बल्कि दोयम दर्जे का नकली पुरुष होने का उपक्रम मात्र है। यह लिंग-भेद

की समस्या का समाधान नहीं; बल्कि उसका स्थगन है और प्रकारांतर से पुरुष-श्रेष्ठता की स्वीकृति भी।

इसलिये इस व्यामोह से अब मुक्त होने की जरूरत है। **पुरुष स्पर्धा और पुरुष-अनुकरण दोनों अप्रासंगिक हो गये हैं। आर्थिक स्वतंत्रता ने स्त्रियों को पुरुष-निर्भरता से मुक्त कर दिया है। भौतिक जरूरतों के लिए वह स्वनिर्भर है। परंतु इस परनिर्भरता और स्वनिर्भरता के अंतर्द्वन्द्व में जो परिवार टूट रहा है वह समस्या का समाधान नहीं बल्कि उसे और जटिल बनाना है।** परिवार का कोई विकल्प अब तक नहीं ढूंढा जा सका है और संभवतः आगे भी नहीं ढूंढा जा सकेगा। इसका सबसे ज्यादा खामियाजा बच्चे को भुगतना पड़ता है। बच्चे की सुरक्षा और उसके बेहतर विकास के लिए संतुलित एवं सुखमय परिवार की आवश्यकता होती है, जो स्त्री-पुरुष की आपसी समझ और पारस्परिक सहयोग से निर्मित होता है।

इसलिए स्त्री सशक्तिकरण के लिए चलाये जाने वाले आंदोलन को स्त्री बनाम पुरुष की लड़ाई में बदल कर लड़ने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यदि स्त्रीवादी विमर्श की इस बुनियादी स्थापना को स्वीकार लिया जाये कि बनी-बनाई स्त्री जैसी कोई चीज नहीं होती बल्कि ऐतिहासिक क्रम में सामाजिक क्रियाओं-अनुक्रियाओं द्वारा बनायी जाती है, जिसे पुरुष अपने शोषण के लिए मातृत्व, कोमलता, स्नेह, समर्पण आदि गुणों से परिभाषित कर देता है; तो फिर यह भी स्वीकारना पड़ेगा कि पुरुष भी कोई बनी बनाई वस्तु नहीं होता, बल्कि ऐतिहासिक क्रम में सामाजिक क्रिया-अनुक्रिया के द्वारा ही बनता है, जो अपने आप में खोखला, अपूर्ण, भयभीत और आक्रामक होता है। अतः स्त्रीत्व और पुरुषत्व दोनों शब्द कल्पित हैं, जिन्हें फिर से परिभाषित करके इनके अर्थों को रूपांतरित किया जा सकता है। केवल पुरुष वर्चस्व की जगह स्त्री वर्चस्व को स्थापित कर देने से समस्या का समाधान संभव नहीं है। यह शोषक और शोषित के बीच स्थान की तब्दीली मात्र है। इससे स्त्री न तो मुक्त होगी न सशक्त। बल्कि वह और कमजोर और दूसरी तरह के बंधन से ग्रस्त हो जायेगी। इसके लिए परिवार की महत्ता को स्वीकारते हुए स्त्री और पुरुष दोनों को अपने-अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त होने की जरूरत है। यह तभी हो सकता है जब पुरुष अपने भीतर थोड़ी-सी स्त्री और स्त्री अपने भीतर थोड़ा-सा पुरुष सृजित कर ले। ऐसा करने से स्त्री-पुरुष का संबंध द्वन्द्वात्मक न होकर योगात्मक बनेगा। भारत पुरुष-प्रकृति, शिव-शक्ति और अर्द्धनारीश्वर का देश है। अपनी इसी परंपरा से जुड़कर यहाँ की स्त्रियां सशक्त हो सकेंगी और स्त्री सशक्तिकरण का यह आंदोलन सफल हो सकेगा।

*6, व्याख्या आवास, खबड़ा रोड, विश्वविद्यालय परिसर,*
*मुजफ्फरपुर–842001 (बिहार)*

## करना नहीं भ्रूणहत्या माँ

**मां जग में रहने दो।**
**इस जग में जीने दो।।**
**मैं हूँ बन्द सीप की मोती।**
**प्रेम मिलन की पावन ज्योति।।**
**जीवन सागर की लहरों में,**
**मानव-तन पाने दो। माँ जग....**
**ममता के आंचल में लिपटूं।**
**पल-पल गोद सुहानी पलटूं।।**
**अंग-रस की धारा को ओ माँ**
**अविरल ही बहने दो।। माँ जग....**
**पैरों में बजती पायलिया।**
**जाने किस घर की दुल्हनिया।।**
**दीप-तले की बाती हूँ मैं,**
**अंधियारा मिटने दो।। माँ जग....**
**आज किसी की अर्थी निकली।**
**कौन अभागन थी वो पगली।।**
**दहेज-प्रथा के लाचारों को,**
**फाँसी पर चढ़ने दो।। माँ जग....**
**मैं लक्ष्मी झांसी की रानी।**
**जन-गण की इन्दिरा हिन्दुवानी।।**
**मेरे देश की रक्षा करने,**
**सीमा पर जाने दो।। माँ जग....**
**वैज्ञानिक भारत की कल्पना।**
**मैं तेरी नींदिया की सपना।।**
**अंतरिक्ष अभियान में जाना,**
**यान मेरा बनने दो।। माँ जग....**
**मैं हूँ 'कमल' नयन ऊजियारी।**
**विश्व-सुंदरी इच्छा-धारी।।**
**परियों की शहजादी सरपे,**
**ताज़ वरण करने दो।।**
**करना नहीं भ्रूणहत्या माँ।**
**लाज बचाऊँगी सत्या माँ।।**
**सिला-सत की बन जाऊँगी,**
**राम कहीं मिलने दो।। माँ जग....**

■ **कमल चन्द्र यादव 'कमल'**
*सूरज पौल बाहर, यादव मोहल्ला, कांकरोली*
*(राजसमंद–राजस्थान)*

# नारी अस्मिता को कसता विज्ञापन का मायाजाल

• सुप्रिया •

पिछले दो दशकों से हमारे आधुनिक जीवन पर विज्ञापन प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं और इन विज्ञापनों में असरदार ढंग से नारी को ही शोषित किया जा रहा है। यहाँ तक कि वर्तमान रूप में इसे ही आधुनिक परिभाषा कहा जा सकता है।

विज्ञापनों को प्रभावशाली बनाने के लिए आजकल दो असरदार हथकण्डों का किसी भी सीमा तक प्रयोग हो रहा है, ये है 'संगीत' और 'नारी देह'। वस्तु चाहे नारी उपयोग की हो अथवा न हो परन्तु नारी देह का उपयोग करके विज्ञापन कम्पनियां पुरुष की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति का पूरी तरह से अपने व्यवसाय में इस्तेमाल कर रही हैं। आकर्षक नारी देह पुरुष की नजर को आकर्षित करती है और इस तरह प्रचार होता है विज्ञापित वस्तु का। ब्लेड और बनियान अथवा शेविंग क्रीम पुरुषों के उपयोग की सामग्री है मगर यहाँ भी नारी को ही बीच में ले आया जाता है। जैसे अमुक ब्लेड से शेविंग करने पर कोई खूबसूरत मॉडल ने उक्त पुरुष के व्यक्तित्व के निखार से प्रभावित होकर उसका संस्पर्श कर लिया। ऐसा विज्ञापन देखकर भला आपके अचेतन में परिष्कृत रूप से विज्ञापन में बोली गयी भाषा काम क्यों न करें।

चौराहों, दीवारों पर लगे पोस्टरों, पत्र-पत्रिकाओं के रंगीन पन्नों या फिर दूरदर्शन के पर्दे पर आज के विज्ञापनों को देखकर कोई भी सुसंस्कृत व्यक्ति एक क्षण के लिए अपनी पौराणिक संस्कृति को याद कर ठिठक जाता है। जन-संचार के माध्यमों का दायरा व्यापक होने के बावजूद यह माध्यम जहाँ जन-चेतना जगाने और लोगों को शिक्षित करने का काम कर रहा है वहीं यह प्रचार माध्यम उपभोक्ता संस्कृति का मात्र लक्ष्य बन गया है। और आम आदमी को येन-केन प्रकारेण आकृष्ट कर धन बटोरने का काम कर रही है। विज्ञापनों में सेक्स और नारी देह प्रदर्शन हावी होता चला जा रहा है। गौरतलब यह है कि संचार के तीनों माध्यमों पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो व दूरदर्शन में से दूरदर्शन ही नारी देह का प्रदर्शन सर्वाधिक कर रहा है। दूरदर्शन के कड़े नियमों और कानूनों में बंधे होने के बावजूद कुछ प्रायोजकों को इस तरह के विज्ञापनों की छूट मिल जाती है अब जबकि स्वयं एक सरकारी माध्यम 'दूरदर्शन' इस प्रवृत्ति का शिकार है किसी स्त्री की सुंदर आकृति को साबुन के झाग में लिपटे अधनंगा दिखा देने मात्र से पुरुष या महिला दर्शक उस साबुन की ओर आकृष्ट हो जायेंगे, तो अन्य माध्यमों को कहाँ तक दोष दिया जाये और फिर अंधानुकरण तो इस देश की प्रवृत्ति है। दूसरे रूप में इस शॉर्टकट की संस्कृति भी कहा जाये तो गलत नहीं होगा।

विज्ञापनों में नारी देह का शोषण रोकने के लिए 1986 में राज्यसभा में एक बिल पेश किया गया। भा.दं.सं. की धारा 292 से 294 में अश्लील विज्ञापन विरोधी प्रावधान रखे गये परन्तु ये सब बेअसर निकले क्योंकि बिल लाने से मानसिकता नहीं बदलती और मानसिकता यह कि विज्ञापन में साबुन हो, सिगरेट हो या कोई अन्य उत्पाद हो। टी.वी. उसे विज्ञापित करने के लिए इस्तेमाल होना चाहिए न कि नारी और उसकी कोमल-कमनीय देह, गोया नारी देह और विज्ञापन एक-दूसरे के पर्याय बन गये हों।

भारत में सबसे पहले सन् 1905

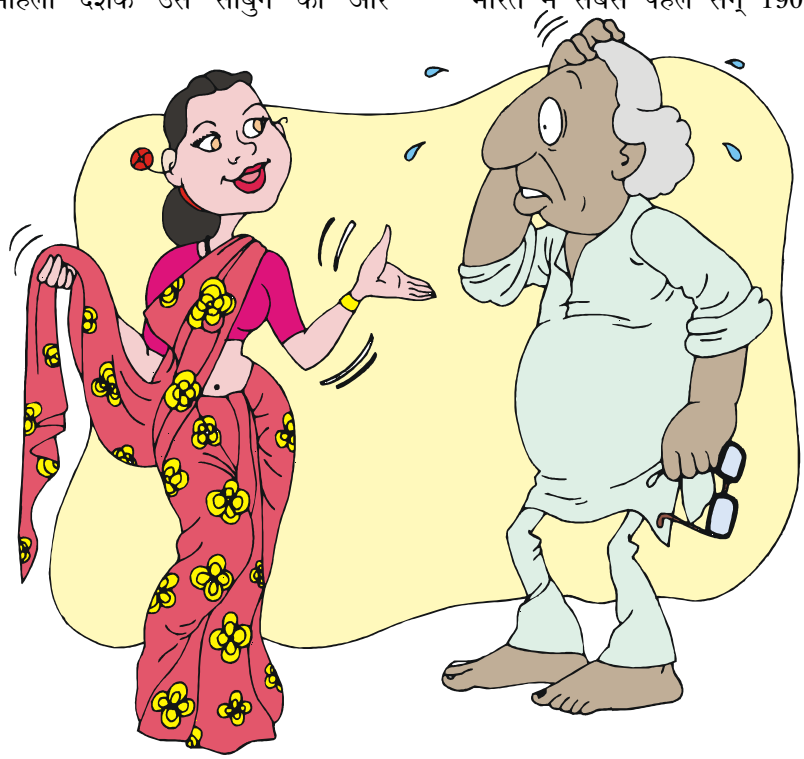

में 'बी. दत्ताराम एंड कम्पनी' नाम से विज्ञापन एजेंसी की स्थापना हुई। उसकी सफलता को देखकर 1925 में कलकत्ता में 'सेंट्रल पब्लिसिटी सर्विस' खुली और फिर देखते-देखते आज 6 सौ से भी ज्यादा विज्ञापन एजेंसियां काम कर रही हैं। दुनिया की सबसे बड़ी विज्ञापन संस्था न्यूयार्क में जे. वॉल्टर कॉम्पसन कम्पनी है, जिसने वर्ष 1971 में 77 करोड़ डॉलर से अधिक आमदनी करके दुनिया में रिकॉर्ड कायम किया। विज्ञापनों से सबसे अधिक आमदनी 'दिस वीक' नामक पत्रिका को हुई। इस पत्रिका के बीच के चार रंगीन पृष्ठों के विज्ञापन के लिए 18,200 डॉलर लिये गये। मई 1968 में यूनी रॉयल नामक संस्था ने रीडर डायजेस्ट के अमरीकी संस्करण में 40 पेजों के परिशिष्ट के लिए एक लाख 50 हजार डॉलर दिये। विश्व का सबसे शानदार विज्ञापन चार जुलाई, 1925 को फ्रांस के एफिल टॉवर पर इलेक्ट्रिक सिट्रोन नामक कम्पनी ने किया, यह विज्ञापन ढाई लाख छोटे बल्बों तथा 48 मील लम्बे तारों से तैयार किया गया था। इस विज्ञापन को 25 मील दूरी से भी देखा जा सकता था। यह घटनाएं बताती है कि विज्ञापन कैसे शुरू हुआ और आज इसका महत्त्व कितना बढ़ गया है। फेरीवालों के चिल्लाने से विज्ञापनों की शुरुआत हुई फिर दिवारों पर लिखाई-चिपकाई का काम शुरू हुआ। आगे चलकर मुद्रण कला जन्मी और आज उसका हश्र आपके सामने है।

आज भी विज्ञापन के नित नये तरीके ईजाद हो रहे हैं। ईजाद जारी है कि विज्ञापन चाहे किसी भी माध्यम से क्यों ने हो उसका सीधा असर उपभोक्ता के दिल-दिमाग पर पड़े। एक अच्छी विज्ञापन संस्था भाषा, संयोजन, डिजाइन, विवरण, उपभोक्ता सर्वेक्षण, बिक्री क्षेत्रों के चुनाव और उनके अनुरूप माध्यमों की तलाश पूरी एकाग्रता और तल्लीनता से करती है।

कुल मिलाकर आजकल के विज्ञापनों के बारे में यह कहा जा सकता है। कि वे धीरे-धीरे उस जगह पर जा रहे हैं जिसे जन आचार को चोट पहुँचाने वाला कहा जा सकता है, स्त्री आकृति का किसी भी रूप में चित्रण, उसके स्वरूप शरीर या किसी भी भाग का प्रदर्शन जिसका प्रभाव अश्लील, अप्रतिष्ठाजनक और भ्रष्ट हो तो उसे त्याज्य माना जाना चाहिए, और यदि विज्ञापन में नारी को दर्शाना हो तो उसे पच्चीस वर्ष की चुस्त गृहिणी, किचन सजाती नववधू, ममतामयी मां आत्म निर्भर या पतिव्रता के रूप में अर्थात नैतिक मूल्यों पर आधारित दर्शाना चाहिए न कि उसकी कमनीय देह दिखाकर उसका शोषण किया जाये।

***'विभावरी', जी–9, सूर्यपुरम, नन्दनपुरा, झांसी–284003***

## राष्ट्र चिन्तन

◆ आदिवासियों को आर्थिक व्यवस्था में स्थान देने में व्यवस्थागत असफलता रही है। जिसके नतीजे अब खतरनाक मोड़ ले रहे हैं। आदिवासियों के शोषण को अब और बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हाशिए पर मौजूद समुदायों के वैध अधिकारों को सुनिश्चित किए बिना समान विकास संभव नहीं है।

दशकों से जारी इस अलगाव ने देश के कुछ हिस्सों में खतरनाक रूप अख्तियार कर लिया है। जनजातीय समुदायों का शोषण तथा सामाजिक, आर्थिक भेदभाव लम्बे समय तक सहन नहीं किया जा सकता है। परंतु यह भी सच है कि बंदूकों के सहारे इसका कोई स्थायी हल संभव नहीं है। छत्तीसगढ़, राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात के वनवासी समुदायों के लोग वन अधिकार कानून को लागू नहीं किए जाने का विरोध कर रहे हैं। कुछ राज्यों में वन अधिकार कानून-2009 के तहत मालिकाना हक के वितरण में ढिलाई हुई है। जनजातियों की बसावट वाले इलाकों में निर्दयी घुसपैठ नहीं होनी चाहिए। इसे रोकने के लिए जनजातियों तक विकास का लाभ पहुंचना चाहिए।

**डॉ. मनमोहन सिंह**
प्रधानमंत्री

◆ जलवायु परिवर्तन के लिहाज से भारत सबसे संवेदनशील देश है। इसलिए इस क्षेत्र में जागरूकता लाने के साथ-साथ युवाओं को जोड़ने की आवश्यकता है। मानूसन की अनिश्चितता, हिमालयी ग्लेशियरों का पिघलना, देश में बड़ी तट रेखा व बढ़ता समुद्र स्तर और प्राकृतिक संसाधनों को निकालने के लिए जंगलों की कटाई के लिहाज से भारत विश्व में सबसे अधिक संवेदनशील देश है।

**जयराम रमेश**
केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री

# नारी जागृति प्रश्नों के घेरे में

• रूपनारायण काबरा •

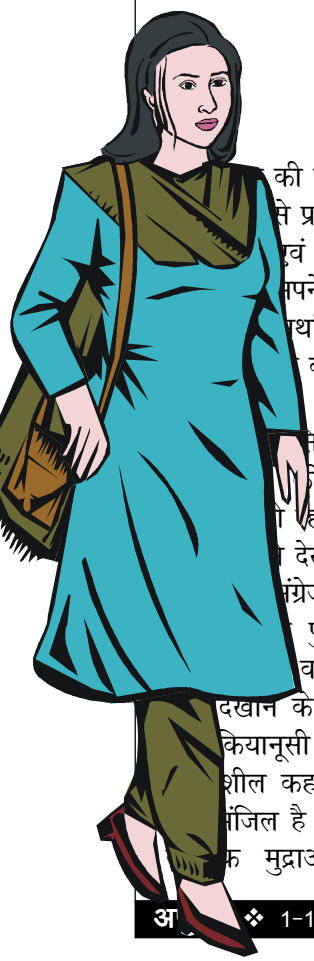

की फैशन-परस्त, अंग-प्रदर्शन से प्रभावित और मॉडलिंग को एवं विशिष्ट कैरियर मानने अपने हाव-भाव व वेश-विन्यास अर्थात् बिन्दास होती जा रही करके सिर उठाकर चलती उसने कोई बहुत बड़ी सल कर ली है। उसमें की अपेक्षा दंभ अधिक हा है। लज्जाशील को वह देखती है और बड़े गर्व एवं ग्रेजी में कहती है, 'बी बोल्ड पुरुष मित्र अथवा मित्रों वह बड़ी शान से करती है, दखान के लिये कि वह आधुनिक कियानूसी नहीं। उसकी निगाह में शील कहलवाने का यही मार्ग है, जिल है। बेबाक अंग-प्रदर्शन एवं क मुद्राओं द्वारा निर्दोष, भोले अवयस्क किशोरों को पतन के मार्ग पर जाने के लिये उत्प्रेरित करना अनुचित है। आज के किशोरों पर इसी कारण पाशविक, वासनात्मक आवेग हावी हो रहे हैं।

सिने-अभिनेत्रियां जो आज की किशोरियों एवं तरुणियों की आदर्श हैं वे आये दिन साक्षात्कार में साफ-साफ कहती हैं, ''मुझे खुलेपन से परहेज नहीं।' और अपने आपको ऐसे पेश करने लगी है कि वह उच्छृंखल विलास का साधन बनती जा रही है। लोगों की निगाहों को वासनात्मक बनाने का दोष स्वयं नारी का भी कम नहीं है। पुरुषों की यह बढ़ती अनियंत्रित वासना स्त्रियों के प्रति क्रूर व्यंग्य ही नहीं जीवन के प्रति विश्वासघात भी है और यही प्रवृत्ति यौन-उत्पीड़न को बढ़ावा देती जा रही हैं।

महादेवी वर्मा के अनुसार, ''नारी जीवन की विकृतियों के मूल में पुरुष की यही प्रवृत्ति मिलती है। अतः आधुनिक नारी नये नामों और नूतन आचरणों में भी इसे पहचानने में भूल नहीं करेगी। उसके स्वभाव में परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढाल लेने का संस्कार अब भी शेष है और उसके जीवन में दिनों दिन बढ़ता हुआ विद्रोह भी प्रवाहशील है। यदि वह पुरुष की इस प्रवृत्ति को स्वीकृति देती है तो जीवन को बहुत पीछे से लौटाकर एक श्मशान में छोड़ आती है और यदि अस्वीकार करती है तो समाज को बहुत पीछे छोड़कर शून्य में आगे बढ़ जाती है।'

वस्तुतः अब वह शून्य में नहीं एक सतत् विकासमान भीड़ के साथ बढ़ रही है। पाश्चात्यीकरण, भोगवाद एवं नारी स्वतंत्रता के नाम पर बहुत तेजी से परिवर्तन आ रहे हैं। स्त्री के जीवन के तार-तार को जिसने तोड़ कर उलझा डाला है, उसके अणु-अणु को जिसने निर्जीव बना दिया है और उसके सोने के संसार को धूल के मोल समझने वाली पुरुष की बढ़ती लालसा आज की नारी के लिये विश्वस्त मार्गदर्शिका नहीं बना सकेगी, यह भी सच है।

नारी मात्र सुंदर, सुघड़, कोमल, कमनीय मांस पिंड ही नहीं है। आदिम काल से आज तक विकास के पथ पर पुरुष की सहचरी बनकर उसकी यात्रा को सरल बनाना, उसके कष्टों को स्वयं झेलकर और परिवार और पारिवारिक सुख देना रहा है, और बदले में उसे भी तो मिलता रहा है संरक्षण, सुरक्षा, शारीरिक सुख और सम्मान। नारी पूंजीभूत सुख है पर पुरुष ने उसे मदिरा से अधिक महत्त्व नहीं दिया। उसने तो उसे मुख्यतः भोग्या ही माना है।

सौंदर्य तो नारी के कण-कण में अंतर्निहित है पर पुरुष बन जाने की होड़ में वह उसे खोती जा रही है। लज्जासंपूरित सौंदर्य को खोकर अब वह पुरुष की आंतरिक चाह का केन्द्र न होकर मात्र वासनात्मक चाह तक ही सीमित रह गई है। पुरुष को जो समर्पण चाहिये वह तथाकथित बिंदास नारी भला कैसे दे सकेगी!

नारी की स्वाभाविक, प्रकृतिगत प्रवृत्ति अधिकार जमाने की नहीं, अधिकृत होने की है, अर्थात् कोई उसे अपनी सम्पदा, अपना सब कुछ समझे। जहाँ

भी पुरुष की कमजोरी से अथवा नारी-स्वातंत्रय प्रेरणा से नारी बिंदास एवं अति वाचाल होने लगी है, वहीं यह अस्वाभाविक प्रक्रिया समस्यामूलक हो जाती है।

नारी साहित्य एवं कला सृजन की प्रेरक-उत्प्रेरक रही है, प्रेरणा स्त्रोत रही है और उनके सृजन का केन्द्रीय विषय भी रही है। पर स्वतंत्रता प्राप्त करके स्त्रीत्व खोकर वह पुरुष बनती जा रही है और वह नारी जिसकी पुरुष को चाह है वह प्रजाति लुप्त होती जा रही है। और इस प्रकार पुरुष-प्रकृति संतुलन गड़बड़ा रहा है। इसके परिणाम हैं दरकते घर-परिवार, असामंजस्य, संवेदनहीनता, असहिष्णुता और बढ़ते हुए तलाक तथा विवाह की लुप्त हो रही गरिमा और 'लिविंग टू गेदर' एक साथ रहना तथा 'सिंगल वुमेन' एकल नारी की ओर सहमति भी आने लगी है।

नारी को वस्तुतः आवश्यकता है महत्त्व की न कि पूर्ण स्वतंत्रता की। उसे अपेक्षित महत्त्व मिल जाये तो पुरुष बनने की अस्वाभाविक चाह नहीं होगी, ऐसा चाहना तो आंतरिक विद्रोह का प्रक्षेपण हैं यह सत्य है कि समर्पण में उसने जो कुछ अब तक खोया-पाया है उससे कहीं अधिक वह आजादी एवं पुरुष-प्रतिद्वन्द्विता में खोती जा रही है। नारी की सौम्य, सहिष्णु, सुंदर, आकर्षक, मातृ-स्वरूपा, पत्नी-स्वरूपा तस्वीर धुंधली पड़ती जा रही है और उभरती जा रही है बोल्ड, बिन्दास असहिष्णु नारी।

शिक्षित होकर संतान को सुशिक्षित करना, उसे संस्कार देना, स्नेह देना, गृहस्थी को सुव्यवस्थित चलाना, आवश्यकता पड़ने पर आर्थिक स्तर पर भी सहभागी बनना। यह सत्य तो अपेक्षित है पर प्रतिद्वन्द्विता के रास्ते पर बढ़ना, बढ़ते जाना और अहं से ग्रस्त होना घोर समस्यामूलक है। 'हम पुरुष से कम नहीं' भावना से प्रभावित होकर वह बढ़ तो रही है पर अपना विशिष्ट अस्तित्व, अपनी प्राकृतिक अस्मिता, अपना सहज सौंदर्य एवं स्वाभाविक स्वरूप खोकर।

युगों से नारी भाव, भावना एवं संवेगों की धुरी रही है और स्नेह, करुणा, लज्जा, समर्पण, सहिष्णुता त्याग, सौम्यता एवं कोमलता नारी की ईश्वर प्रदत्त दिव्यता है, वह विलुप्त होती जा रही है। अपने सहज सौंदर्य को खोकर कृत्रिम सौंदर्य ब्यूटी पार्लर्स में खोज रही है और अंग-प्रदर्शन में व्यक्त कर रही है। घर में पुस्तकें नहीं सौंदर्य-प्रसाधन सामग्री भरी पड़ी है। अब तो वह सौंदर्य की नई परिभाषा से प्रभावित होकर अपनी संतान को स्तनपान कराने की प्राकृतिक आनन्दानुभूति से भी परहेज करने लगी है। अब उसका आदर्श है तथाकथित आधुनिक समाज का पुरुष। उसी की तरह होटलों में वह भी 'सब कुछ' खाने पीने लगी हैं। देर रात तक क्लबों में पर पुरुषों के साथ नाचने लगी है, विवाहेत्तर संबंधों में भी वृद्धि होने लगी है। उसको अपना विकास, अपना अस्तित्व पुरुष की सहचरी एवं अर्द्धांगिनी बनने में नहीं, पूरक बनने में नहीं अपितु पुरुष की बराबरी करके अथवा उसे नीचा दिखाने में आने लगा है। इसीलिए संयुक्त परिवार प्रणाली का दम तो पहले ही घुटता जा रहा है और अब तो अपने स्वयं के एकल परिवार में भी सामंजस्य नहीं 'क्योंकि नारी जाग उठी है।' यह विकसित नारी का अहं है, जो कि उत्तरदायी है नारी में आ रहे मानसिक व शारीरिक परिवर्तनों के लिये। यह सच है कि नारी के स्वयं के प्राकृतिक स्वरूप में, सहज पहनावे में सहज वाणी और सहज आचरण में जो सौंदर्य और सौम्यता है, जो महानता है वह उसके आधुनिक स्वरूप में नहीं है। शिक्षित और सक्षम होकर उसमें जो परिवर्तन आ गये हैं उन्होंने नारी के जागने पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। कन्याओं की भ्रूणहत्या हो रही है। शिक्षित नारियां भी पुत्र लालसा से ग्रस्त हैं। नारी नारी नहीं रहना चाहती यह कैसा जागरण है? पुरुष-प्रकृति का यह असंतुलन एक गंभीर, चिंतनीय स्थिति है।

***ए–438, किशोर कुटरी, वैशाली नगर, जयपुर – 302021 (राजस्थान)***

## नारी की महिमा

**आज की नारी कितनी चमकीली, कितनी महान, कितनी ताकतवर**
**हर कदम, हर मोड़ पर पैर किस तरह पसार रही**
**संसद भवन में तहलका मचा रही ऊँचे पदों पर**
**आज की नारी कितनी शक्तिशाली बनती जा रही**
**पहले कुछ नहीं जानती थी, पर बाहर तक सीमित थी**
**आज की नारी हर क्षेत्र में ऐसे पैर जमा रही**
**हर कोने में नारी गूंज रही**
**पुरुषों को किस तरह आज पछाड़ रही**
**आज के इस युग में नारी की महिमा कितनी निराली**
**नारी आज कितना नाम रोशन कर रही है**
**धर्म-अध्यात्म की ज्योति में नारी ऐसी भूमिका निभा रही है**
**नारी की महिमा आज नया मार्गदर्शन दे रही है।**

जितेन्द्र कुमार बैद 'जीतु'
*कटला चौक, नोखामण्डी (राजस्थान) 334803*

# नारी की गरिमा का मूल्यांकन हो

● साध्वी जयमाला ●

नारी की परिभाषा करते हुए उदारता का अंकन करते हुए लिखा है पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील और कर्त्तव्यनिष्ठा, विश्व के लिए दया, जीव-मात्र के लिए करुणा, प्रमोद भावना संजोने वाली महाप्रकृति का नाम ही नारी है। महाकवि जायसी के अनुसार स्त्री और पुरुष विश्वरूपी अंकुर के दो पत्ते हैं।

नारी प्रत्येक दृष्टि से संसार एवं सृष्टि की पूजनीय रही है, क्योंकि उसने अपनी कोख से महापुरुषों को पैदा कर जीवन को धन्य बनाया है। भारतीय संस्कृति में नारी महात्मय का वर्णन बड़े-बड़े काव्यों में कवियों ने गाया है। यहाँ मातृशक्ति को उपास्य, आराध्य माना जाता है। जननी, धर्म पत्नी, भगिनी तथा पुत्री के चारों रूपों में नारी के प्रति भावभरा सहज सम्मान अभिव्यक्त होता रहा है।

माता की ममतामयी छांव में बच्चे का लालन-पालन होता है। माँ का वात्सल्य ही बच्चे को जीवनदान देता है। वह अंकुर से विराट रूप धारण करता है। माता ही बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है। बच्चे को जिस सांचे में ढालना चाहें वह ढ़ाल सकती है। बच्चे की प्रथम मार्गदर्शिका माता ही है। स्नेहमयी, अमृतलता विशेषण से सुशोभित होकर परिवार में सौख्य प्रदान करती है। वह सदा-सर्वदा स्नेह एवं सौजन्य की साक्षात् देवी एवं संतप्त हृदय की शीतल छाया है। परिवार निर्माण का उत्तरदायित्व नारी पर होता है।

महान दार्शनिक अरस्तु ने नारी गरिमा का बोध कराने के लिए कहा था नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है। बिहारीजी ने नारी की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है नारी सबकुछ कर सकती है। राधा ने ही श्रीकृष्ण को और सीताजी ने भगवान रामचन्द्र को शक्ति दी थी। शिव की शक्ति के अभाव में ''शव'' हो जाते हैं। यह शक्ति क्या है! उत्तर मिलेगा नारी।

पुरुष वर्ग नारी के प्रति अपना संकीर्ण दृष्टिकोण बदले और नारी की शक्ति को पहचानें, उसकी सहनशीलता, करुणा, ममता, त्याग, बलिदान, समर्पण भाव, विवेक, चातुर्य, सेवा भाव जैसे अनेकों सद्गुणों का अंकन कर मातृशक्ति को आगे बढ़ाने में सहयोगी बनें। विकास के हर क्षेत्र में महिलाओं का स्थान अग्रणी रहा है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर अब तक किसी न किसी रूप में वे पुरुषों की सहयोगिनी रही हैं। वर्तमान में महिलाएं सफलता के शिखर पर आरूढ़ हो रही हैं। कामयाबी के साथ उनकी सामाजिक तथा आर्थिक तस्वीर लगातार बदलती जा रही है। समाज के लगभग सभी पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्रों में आज शिक्षित महिलाओं ने शानदार प्रवेश किया है। पिछले दो दशकों की ओर मुड़कर देखें तो पता चलेगा कि वैश्विक परिदृश्य में स्त्रियों का ग्राफ कितना ऊँचा उठा है। परिवर्तन का यह नया दौर अनूठा एवं अद्भुत है। यह नया इसलिए है कि आज शिक्षा का क्षेत्र इतना विकास कर रहा है, उन सभी विषयों में लड़कियां बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। लड़कों की बनीस्बत अच्छे नम्बरों में लड़कियों ने कामयाबी प्राप्त की है। इसलिए महिलाएं समाज की तमाम बेड़ियों तथा विसंगतियों को पार करके आगे बढ़ रही हैं।

अखबारों की सूर्खियों में आज महिलाओं की सफलता जुबानी बोल रही है। विश्व की उभरती आर्थिक महाशक्ति के रूप में चीन एवं भारत जाने जा रहे हैं। इसका श्रेय मुख्यतः महिलाओं के कंधों पर है। विश्व का 20 प्रतिशत तथा एशिया का 26 प्रतिशत से अधिक व्यवसाय महिलाओं के नियंत्रण में है। अपने देश में 13 अरब डॉलर से अधिक का सूचना तकनीकि उद्योग और ढ़ाई अरब का कॉल सेंटर उद्योग बड़े पैमाने पर महिलाएं संभाल रही हैं।

ये आंकड़े महिलाओं को कालपाश में बांधने वाली पुरुष मानसिकता के उस कठोर नियंत्रण को कड़ी चुनौती देने वाले प्रतीत होते हैं। किसी युग में महिलाओं को घर की चार-दिवारी में कैद करके केवल घर की सार-संभाल और पुरुषों की सेवा के लिए ही प्रयुक्त किया जाता था। नारी की मौलिकता एवं स्वतंत्रत अस्तित्व को कोई स्थान नहीं था, उसे दोयम दर्जे की नागरिकता का रूप भर स्वीकारा।

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी का दौर महिलाओं के लिए काला युग के समान रहा। उनकी प्रगति एवं विकास के बाबत चिंतन ही नहीं किया गया तो उन्हें ऊँचा उठाने की बात ही बेमानी थी। महिलाओं के विकास के लिए कोई योजनाएं नहीं थी। योजनाएं सिर्फ पुरुष वर्ग के विकास एवं उत्थान के लिए ही बनती। महिलाओं को श्रम के क्षेत्र में कमजोर माना जाता रहा है। मगर आज महिलाओं ने प्रत्येक कार्य में अपनी ऊर्जा की कामयाबी के प्रदर्शन से जोखिम भरे काम कर पुरुषों को दिखा दिया है कि हम किसी से कम नहीं। महिलाओं ने अपनी सूझ-बूझ एवं बौद्धिक क्षमताओं को उजागर कर पुरुषों से दो कदम आगे बढ़ाया है।

बीसवीं सदी में तेजी से बढ़े इलेक्ट्रॉनिक उद्योग में सर्किट आधारित एसेंबली लाइन का जब विकास हुआ तो इसमें पुरुषों के भारी और वजनी हाथों के बदले महिलाओं की प्रतिभा अधिक कारगर साबित हुई। इसी कारण से जापान, वियतनाम, ताइवान, हाँगकांग, दक्षिणी कोरिया और फिलीपिंस में इलेक्ट्रॉनिक उद्योग तेजी से विकसित

हुआ, क्योंकि वहाँ महिलाओं की सहभागिता अधिक थी।

उन्नीसवीं सदी तक उद्योग और बाजारगत अर्थव्यवस्था पुरुष केन्द्रित थी। उन दिनों शिक्षा के अभाव में महिलाओं की स्थिति दयनीय थी। आजादी के पश्चात् साक्षरता अभियान जोरों पर चला। धीरे-धीरे महिला वर्ग पढ़ाई के पथ पर अग्रसर होने लगा। अपनी क्षमता एवं दक्षता से लक्षित मंजिल पाने में सक्षम हुआ। इसी कारण आज अपने में वर्चस्व पुरुषों की बनीस्बत महिलाओं का ज्यादा है। भारत में आंकड़े बता रहे हैं कि अन्य विकसित देशों की अपेक्षा महिला डाक्टर, सर्जन, वैज्ञानिक, प्रोफेसर, पत्रकार तथा तकनीकी विशेषज्ञ अधिक हैं। पायलट से लेकर सभी क्षेत्रों में महिलाएं विशेषज्ञ हैं। महिलाओं ने हर क्षेत्र में कुशलता हासिल कर ली है।

महिलाओं की अर्थ-व्यवस्था और कॉर्पोरेट दुनियां में भागीदारी का प्रारंभ आर्थिक उदारीकरण के साथ हुआ। अपनी कड़ी मेहनत और दक्षता से महिलाएं आज अनेक कंपनियों और प्रतिष्ठित संस्थानों की मैनेजिंग डायरेक्टर जैसे पदों पर आसीन है। बुकर पुरस्कार प्राप्त एवं सामाजिक कार्यकर्त्री अरूँधती राय एक मिसाल है। धनाढ्य महिलाओं में बायकॉन कंपनी की प्रमुख किरन मजूमदार एवं पेप्सी की इन्दिरा नूरी है। ऐसी अनेकों महिलाएं अनेकों क्षेत्रों में उच्च पदों पर भागीदारी देकर आगे कदम बढ़ा रही हैं।

वर्तमान में इंडियन सॉफ्टवेयर कंपनियों में एक-तिहाई महिला कर्मचारी हैं। नॉस कॉम में 38 प्रतिशत महिला कर्मचारी हैं। इलेक्ट्रॉनिक, कम्युनिकेशन, कम्प्यूटर, साइंस आदि क्षेत्रों में अधिकतर लड़कियां ही प्रशिक्षित हैं। इसी कारण सॉफ्टवेयर कंपनियों में लड़कियों की संख्या अत्यधिक है। 300 अरब डॉलर से अधिक का भारतीय सेवा उद्योग जिसमें बैंकिंग, बीमा, ट्रेवलिंग, ट्रांसपोर्टेशन आदि शामिल है। इन सभी क्षेत्रों में जिम्मेदार पदों के लिए महिलाएं तेजी से आगे बढ़ रही हैं।

सूचना तकनीकी के क्षेत्र में दस ऐसी महिलाओं को चुना गया है, जो भारत के किसी भी पुरुष प्रतिष्ठित पद से श्रेष्ठ तथा ऊँचा है। इनके चयन का आधार नेतृत्वक्षमता, निर्णयक्षमता, योजना संबंधी विचार, आर्थिक संबंध बनाना आदि था। इसमें जेंटा की प्रिया हीरानन्दिनी को माइक्रोसॉफ्ट के ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन का मैनेजिंग डायरेक्टर बनाया गया। और प्रतिष्ठित पदों में निलय धवन, मीना गणेश, रेखा मेनन, राधा शेलट, हेमा रविचन्द्र तथा कम उम्र की जेसी पॉल शामिल हैं। ये सभी महिलाएं किसी भी कंपनी को विश्व स्तर पर बनाने के लिए सक्षम हैं।

इन्हें ऐसे कार्यरत देखकर लगता है, जो कल तक घर की चार-दिवारी में सिमट कर जिंदगी गुजार रही थीं, आज वही नारी शक्ति आसमान की बुलंदियों को अपने श्रम तथा समझदारी से छूने लगी हैं। वर्तमान में नारी की यही ऊँची उड़ान काबिले तारीफ है। यह उपलब्धि महिलाओं की दूरदर्शिता, रमशीलता, साहस, दृढ़ मनोबल के साथ-साथ सूझ-बूझ ऊर्जा से भरपूर मनःस्थिति की सच्ची कहानी है।

जिस उम्र में घरेलू महिला दो-तीन बच्चों के साथ अपने एक छोटे-से परिवार को चलाने में सक्षम हो पाती थी, उसी उम्र में आज एक बड़ी कंपनी की अति विशिष्ट जिम्मेदारी को संभाल पाना एक सुखद परिदृश्य है। और वह भी आज प्रतिस्पर्द्धा बाजार में दृढ़ संकल्प से ही मंजिल प्राप्त करती हैं। कहा भी है

दृढ़ निश्चय से अपने पथ पर, इस दुनिया में जो भी चलता है।

मानव पर क्या, अखिल विश्व पर, विजयश्री वह वरता है।।

वस्तुतः दृढ़ निश्चय करके चलने वाली महिलाओं ने ही प्रगति के द्वार पर दस्तक दी है। इसमें उम्र का कोई ताल्लुक नहीं है। छोटी उम्र में एक बड़े कारनामें को अंजाम देने वाली बैंगलोर की श्वेता अपनी लगन-निष्ठा, सतत् अभ्यास से ही प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हुई है। वर्तमान में जिस गति से महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में कीर्तिमान रिकॉर्ड कायम कर रही है, उससे पता चलता है कि 21वीं सदी महिलाओं की सदी है। नियंता ने वैश्विक संचालन हेतु प्रमुख भागीदारी के रूप में महिलाओं का चयन किया है, इसी कारण से आज समाज, राष्ट्र और विश्व के हर क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका अग्रणी स्थान पर है।

नारी युग-युगांतरों से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में संसार को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ बनाती आई है। नारी के ऋण से परिवार, समाज, देश व राष्ट्र कभी उऋण नहीं हो सकता। किंतु कभी-कभी नारी की दुर्दशा देखकर आज ऐसा लग रहा है कि पुरुष नारी के अनुदानों को भूल बैठा है। अपने अहं के कारण कृतघ्नता का परिचय दे रहा है। यही आज की सबसे बड़ी सभ्यता, सामाजिकता एवं मानवता है कि पुरुष नारी के प्रति अपना संकीर्ण दृष्टिकोण बदलें, युग की नब्ज को पहचानें।

**नारी के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि वह अपने सही व्यक्तित्व और कर्तृत्व को न सिर्फ पहचाने बल्कि विवेकपूर्ण व समझदारी पूर्वक आचरण भी करें। आज नारियों को अपने उत्थान के लिए स्वयं को ही पहल करनी होगी।** समाज की संकुचित मनोवृत्तियों को बदलने तथा अपने सद्संस्कारमय स्वरूप को उजागर करने के लिए स्वयं के अंदर सद्गुणों का विकास दृढ़ आत्मबल, कर्मठता जागृत करनी होगी। नारी अपने स्वरूप को पहचानें। अपनी सभी जिम्मेदारियों के प्रति पूर्णतया जागरूक सतर्क एवं क्रियाशीलता रखें। जीवन का प्रबंधन करना सीखें।

यदि जीवन के विचार एवं भावनात्मक पक्ष का कुशलता के साथ उपयोग हो तो बाहरी सफलता के साथ आंतरिक सौंदर्य का संतुलन सहज प्राप्त किया जा सकता है। नारी अपनी अनुपम प्रज्ञा से कार्य करें। एक मुक्तक में कहा है

नारी ही समाज की शान है, नारी बिना समाज देश, राष्ट्र विरान है।

नारी भटक गई तो सब भटक गये, नारी ही समाज की आन-बान है।

# साम्प्रदायिकता उन्मूलन में स्त्री की भूमिका

• विभा प्रकाश श्रीवास्तव •

महिलाएं धार्मिक प्रवृत्ति की होती हैं, इसमें दो मत नहीं हो सकते। राम-राज्य रहा हो या मुगलकाल, धर्मपालन में महिलाएं सदैव आगे रही हैं। महिलाएं चाहे जितनी धार्मिक हों, परन्तु वे साम्प्रदायिक नहीं होतीं। वे कभी नहीं चाहती कि दंगा-फसाद हो। स्त्रियां विधवा और बच्चे अनाथ हो जायें, क्योंकि नारी तो ममता, त्याग, दया व प्रेम की मूर्ति है, चाहे वह किसी भी धर्म की क्यों न हों।

मुझे अपना बचपन आज भी याद आता है, जब हमारा और मिर्जाजी का परिवार परस्पर सटे दो मकानों में रहता था। दोनों परिवारों में निरंतर आना-जाना खाद्य पदार्थों का आदान-प्रदान चलता रहता था। कुछ सीखना-पूछना हो तो हम बच्चे झट से चचीजान के पास भागे जाते थे। दोनों परिवारों में कोई अंतर हमें नजर नहीं आता था। सभी परिवारों में ऐसे रिश्ते क्यों नहीं कायम रह सकते? नारी पर साम्प्रदायिक होने का आरोप लगाना बेबुनियाद है। महिलाओं की लड़ाई से कहीं साम्प्रदायिकता भड़की हो, ऐसी एक भी घटना नहीं हुई।

आजादी की लड़ाई में तो सभी धर्म के लोगों का खून समान रूप से बहा, तब ऐसे विवाद कभी नहीं उपजे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी स्वयं राम के उपासक थे। यदि हम इतिहास की तह में जायें तो पायेंगे कि हिन्दू, बौद्ध, जैन सभी समुदायों पर अत्याचार हुए। लेकिन इतिहास को न तो नकारा जा सकता है और न ही बदला जा सकता है। किसी भी ब्रिटिश स्मारक को हम इसलिये तो नहीं तोड़ सकते कि अंग्रेजों ने हम पर अत्याचार किये। बाबर या लोदी ने जो भी किया, वह हिंदू-मुस्लिम दोनों ही के लिए अर्थहीन है, क्योंकि वे जुल्म उन्होंने मुसलमान होने के नाते नहीं, बल्कि आक्रांता और विजेता के रूप में किये थे।

विगत दिनों हमारे देश में जो साम्प्रदायिक आग भड़की, वह गंदी राजनीति का घिनौना परिणाम है। वोट की राजनीति के चलते धर्मनिरपेक्ष व जनतांत्रिक विचारों को कमजोर करने की कोशिशों से मंदिर-मस्जिद विवाद भड़का है। वरना ईश्वर तो सर्वव्यापी है, उसे न मंदिर चाहिये न मस्जिद।

साम्प्रदायिकता का आरोप पूरे महिला वर्ग पर लगाना एक भारी भूल है। हमारे देश में गार्गी, मैत्रेयी, सीता, सावित्री और रानी लक्ष्मीबाई जैसी साहसी, विदूषी महिलाएं हुई हैं, जिन्होंने भारतीय नारी की अस्मिता को गौरवपूर्ण स्थान दिलाया है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई की निकट सहयोगी दो मुस्लिम लड़कियां थीं, जो उनके साथ ही वीरगति को प्राप्त हुई थीं।

भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व ऐसी ही महिलाएं करती है न कि वे जो धर्म के नाम पर घृणा-विद्वेष का प्रचार-प्रसार करती है। न केवल महिलायें, बल्कि देश के प्रत्येक नागरिक को यह बात आत्मसात् कर लेनी चाहिए कि हिंसा व रक्तपात किसी समस्या का हल नहीं है। आपसी सद्भाव ही देश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

महिलाएं सरल स्वभाव की होने के कारण कई बार जल्दी बहकावे में आ जाती है, उनकी विचारधारा का असर परिवार पर पड़े बिना नहीं रहता। महिलाओं को यह समझना चाहिए कि भारतीय जनमानस में बसे राम, प्रेम और दया के प्रतीक हैं, वे असत्य पर सत्य की विजय, विध्वंस पर शांति की विजय के प्रतीक हैं। देश की भुखमरी, गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी जैसी भीषण समस्याओं को हल करना पहले आवश्यक है। मंदिर बनाना तो एक गौण समस्या है। इतिहास से प्रेरणा लेकर नारी को देश में आपसी प्रेम, सद्भाव बढ़ाने में अपना बहुमूल्य योगदान देना चाहिए।

घर के झगडों से तंग आकर कई बार पति-पत्नी अपनी अलग गृहस्थी बसा लेते हैं, पर जहाँ ऐसा संभव नहीं होता, वहाँ घरेलू तनाव पति-पत्नी के बीच दूरी बढ़ाने लगता है। यदि पति-पत्नी नौकरीपेशा है तो घर व ऑफिस के काम की दोहरी मार उसे झेलनी पड़ती है।

यदि पति-पत्नी घर-परिवार से दूर जीविकोपार्जन के लिए दूसरे शहर में रहते हों तो कई बार बेटे के पूरी तरह हाथ से निकल जाने की आशंका से ग्रस्त सास, छोटे भाई-बहन को बॉडीगार्ड के रूप में साथ भेज देती है, परिणामस्वरूप स्त्री की स्वतंत्र जीवन जीने की लालसा टूटकर रह जाती है।

स्त्री द्वारा स्त्री का शोषण विचित्र लगता है, पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह क्रम चलता रहता है। अनेक घरों में दहेज के मसले पर प्रारंभ हुआ शीत युद्ध नव-वधू को जलाने और जान से मारने तक पहुँच जाता है, जिसमें अक्सर सास-ननद की अग्रणी भूमिका रहती है, परन्तु यदि स्वयं स्त्री ही स्त्री की दुश्मन बन जाएगी, तो पुरुषों के अत्याचार से स्त्री कब और कैसे मुक्त हो सकेगी?

*जी–9, सूर्यपुरम, नन्दनपुरा,*
*झांसी–284003 (उ.प्र.)*

# तुम्हारा मौन आमंत्रण

• बीना सिद्धेश •

आमंत्रण तुम्हारा
स्वीकार करूँगी मैं!
यदि स्वीकार कर सको तुम
मेरी थोड़ी-सी खुशी
मेरा थोड़ा-सा गम!
गहन स्याह रात को
रोशन कर दूंगी मैं
अपने माथे पर
चमक रही बिंदिया से....
टूट जाएगी खामोशी
मेरी कलाई की
खनक रही चूड़ियों से....
रोशन हो उठेगी
चांदनी रात
हमारे जिस्म की
मदमाती गमक से....

अपने आंचल में
समेट लूंगी मैं
दुनिया भर के चांद-सितारे
अगर मिल जाए मुझे
तुम्हारे प्यार का सहारा
हाँ! मेरे प्रियतम प्यारे!
मगर/जब
गम की आग में
जलती रहूँ मैं
सुख के अभाव में
तड़पती रहूँ मैं
चिंता के बिस्तर पर
करवटें बदलती रहूँ मैं....
और तुम
किसी गैर से
मांगते रहोगे

प्यार की भीख
जश्न मनाते रहोगे
गैर की महफिल में
मेरी विवशता को
अनदेखा कर
अपने जीवन को
करते रहोगे रोशन
तब कैसे
स्वीकार पाऊँगी मैं
तुम्हारा दिखावटी
संवेदनहीन मौन आमंत्रण?
कैसे कर पाऊँगी मैं
अपने भीतर पनप रहे
प्यार का समर्पण?

*अवसर प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं. 205,*
*करबिगहिया, पटना–800001 (बिहार)*

# रामगोपाल राही की दो कविताएं

## प्रायश्चित

हुई परायी मैं तो कब की-
कैसे कह दूं भूल गयी।
पर यह सत्य और वास्तविक,
मैं अपने को भूल गयी।।
क्यों मानूं, अतीत स्वयं जब,
जिंदा हूँ, किरदार अभी।
भला कहानी - सभी अधूरी,
हूँ जो तलबगार - अभी।।
जब तक जिंदा- उस अतीत का
साथ भाग तो होगा।
मैं विवाहिता आठ साल संग,
भोग, दाग तो होगा।।
दोष नहीं उनका ही सारा
दोष मेरा-ज्यादा था।
कोरा कागज - मेरा जीवन
उनका न ज्यादा था।।
नारी हूँ पर, नारी क्या
महत्त्व न जाना मैंने।
मैं पारस हूँ, पर पारस का
मूल्य न जाना मैंने।।
नारी संगत मैं बैठूं तो-
हो आता अहसास मुझे।
बिना पति नारी का जीवन,
खाक, हुआ विश्वास-मुझे।।
बसा बसाया घर भी उजड़ा
नैहर घर जीती हूँ।
आज हंसी भी कैद सी लगती,
घर नैहर रीती हूँ।।
आया-गया हवा का झौंका,
सच कोई-तूफान न था।
अपना ही था - घमण्ड वस्तुतः
वह मेरा ईमान न था।।
पात नहीं डाली खुद टूटी,
सचमुच जैसे कोई
सूख-सूख के ईंधन हो गई,
देख रहा हर कोई।।
मां से दूध नहीं वो मानो
विष का पान किया था।
विष कन्या मैं बन के रह गयी
हो अवधान पिया था।।

## आत्मबोध

माना मिले गुजारा भत्ता,
यह न सत्व - नारी का।
लगे दिवाला पन ही मेरा,
नारीत्व कहाँ नारी का।।
कैसा सच यह, सच नहीं लगता,
मैंने तो अपराध किया था।
झूठा कर दहेज-मुकदमा
पति पर घात किया था।।
निर्दोषों को सजा मिल रही-
मुझे गुजारा भत्ता।
यह तो है-अन्याय सरासर,
यह, नहीं हो सकता।।
पति स्वर्ग, पति ही ईश्वर,
पति ही जीवन साथी।
वह नारी क्या पत्नी होती,
बने पति की घाती।।
सचमुच पत्नी भी, हो सकती
पति घाती पहचाना।
पति-पत्नी के बीच का रिश्ता
आज भला यह जाना।।
पति बिना स्वछंद भला सुख
यह कैसा होता है।
सुख सुविधा आराम-नौकरी,
हृदय-दाह होता है।।
बेटी को शह-नैहर वालो
सुन लो कभी न देना।
बेटी हो ससुराल पिया घर-
मीना हो या मैना।।
अच्छा-बुरा पति का होना,
पति की नहीं कसौटी।
सत्य नहीं क्या साथ पति का
देना नार कसौटी।।
ग्रंथ-संत व ज्ञानी ध्यानी,
दे सीख रामायण।
पति-पति है, पत्नी उसकी
हो कर्त्तव्य परायण।।
प्रायश्चित करूँ तो किसका
उन सबका या मेरा।
आत्म बोध व मन का निर्णय,
घर अब भी वो मेरा।।
नहीं गुजारा भत्ता - मुझको
खोया- वो विश्वास मिले।
नारीत्व तो दे पति बस
मेरा मुझको खास मिले।।

*गणेशपुरा, वार्ड नं 4/5,*
*पोस्ट – लाखेरी 323615*
*(बूंदी–राजस्थान)*

नारी चेतना और प्रगतिशील आज की शिक्षित नारी

## नारी और अगरबत्ती

मस-मस कर जलती रही अगरबत्तियां
नारी की तरह।
कभी आस्था का रूप देकर
उन्होंने जलाई सुबह-शाम
अगरबत्ती जलती रही, धुआं उठता रहा
और उठते ही रहे, धुंधले विचार मन में
कितनी पावन, कितनी धन्य अगरबत्तियां
नारी की तरह।
स्वयं को जला वश में करती
खालिक और कन्हैया।
जलती अगरबत्ती
परिवर्तित होती रही राख में
और उसके साथ ही
राख होती रही भावनाएं।
अब
अगरबत्तियां जलती हैं, किन्तु
भावनाएं जन्म नहीं लेती
अगरबत्तियां जलाना उनकी नियती है
अगरबत्ती से उठने वाला धुआं
महकाता कमरे को,
मदमस्त करता महफिल को
नारी की तरह।
उसी मादकता के आदी होकर वो
दिन-रात जलाने लगे अगरबत्तियां।
फर्क इससे उन्हें कुछ नहीं पड़ता
चिंतित है, सिर्फ अपना अस्तित्व खोती
अगरबत्तियां, नारी की तरह।

■ **राजेश 'राज', *संपादक : शब्द प्रवाह***
***41, अरविंद नगर, उज्जैन (म.प्र.)***

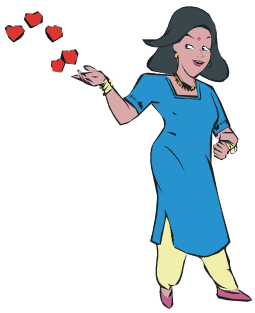

## कन्या भ्रूण

तुम हो पूजा तुम्हीं आरती हो,
तुम हो सीता तुम्ही भारती हो।
फिर भी अपने कलेजे को कैसे,
इतनी बेदर्द हो मारती हो।

चन्द टुकड़ों में घायल पड़ी हूँ,
अनकही दासतां की कड़ी हूँ।
तेरी आंखों से जो बह न पाई,
आंसुओं की मैं ऐसी लड़ी हूँ।

खून के ख्वाब कल रात देखे,
देखना मैं कहीं डर न जाऊँ।
तेज ख़ंजर चलाना ना मुझ पर,
माँ तुम्हारी कसम मर न जाऊँ

हो गया तन बदन टुकड़े-टुकड़े,
एक मन दो नयन टुकड़े-टुकड़े।
दिल था छोटा धड़कनें थीं छोटी,
छोटे-छोटे सपने टुकड़े-टुकड़े।

बन न पायी थीं आंखें हमारी,
बन न पायी थीं आंखों की पलकें।
दिल तो रोया बहुत चुपके-चुपके
पर निगाहों से आंसू न छलके।

होंठ नाजुक गुलाबी-गुलाबी,
देर थी बस जरा खोलने की।
हो सकी ये तमन्ना ना पूरी,
रह गयी प्यास माँ बोलने की।

पास मेरे नहीं हैं वो बाहें,
रोकने का तुम्हें काम लेती।
इन ऊँगलियों में ताकत नहीं है,
वरना आँचल तेरा थाम लेती।

पैदा होते ही मुझको कई बार,
रेत में गाड़ देते हैं अपने।
फेंक देते हैं बेदर्द होकर,
झील में मेरे संग मेरे सपने।

मेरे हिस्से का अमृत पड़ा है,
दूध के दर्द का क्या करोगी,
अपनी ममता की खाली निगाहें,
कौन से आंसुओं से भरोगी।

जिसकी सांसों ने सांसें संवारी,
फर्क सांसों में करने लगी हैं।
कैसे कर लूं यकीं इस जहाँ में,
मां भी पत्थर की बनने लगी है।

खून का खून सब कर रहे हैं,
कैसी रिश्तों की मजबूरियां हैं।
सौंप दी फूल-सी बेटियों को
जिनके हाथों में बस छूरियां है।

दुनियां वालो वो तूफान देखो,
किस दिये को बचाने चले हो।
बिन धरा का ये आकाश लेकर
कैसी दुनियां बसाने चले हो।

■ **ज्ञानचंद 'मर्मज्ञ''**
***13, तीसरा क्रॉस,***
***के.आर. लेआउट, छठवां फेज,***
***जे.पी. नगर, बैंगलोर – 560078***

# उन्मूलन दहेज का नहीं बल्कि अनीतियों का

• सविता लखोटिया •

क्या है दहेज जिसके उन्मूलन की हम बात करें? जहाँ तक इसका अर्थ शब्दकोशों से जानने का प्रयास किया तो दहेज की परिभाषा विवाह के समय कन्या एवं वर को दी जाने वाली सौगात के रूप में मिली। जब इस शब्द का अर्थ कानूनी संदर्भ में ढूंढा गया तो भी दहेज की यही दिशा इंगित हुई।

ऐसी स्थिति में कौन ऐसे माता-पिता हैं जो दहेज का उन्मूलन यानी जड़ सहित विनाश को अपनी नीति बनाएंगे या इसे कानूनी तौर पर स्वीकार करेंगे। जिस कन्या का वे पालन करते हैं, उसे शिक्षित बनाते हैं ताकि वह एक अच्छा जीवन जीने के लिए तैयार हो सके; उसे स्वतंत्र रूप से जीवन की सीढ़ियों पर चढ़ते समय अपनी क्षमता के अनुसार कुछ भौतिक साधनों का उपहार दे दें तो गलत क्या है? उस वर को, जो उस दिन से लड़की के माता-पिता का पुत्र-सम बन जायेगा, उस लड़की के परिवार का भी अभिन्न सदस्य बन जाएगा, दक्षिणा स्वरूप उपहार देने को कौन गलत ठहरा सकता है? वर को दक्षिणा या उपहार देना तो उल्लास की अभिव्यक्ति मात्र है। जिंदगी की प्रसन्नताओं को बढ़ाने के लिए हमारे देश में त्यौहारों पर उपहार लेने-देने की परम्परा है।

यहाँ एक बात दृष्टव्य है कि कन्या को सुयोग्य बनाना, सुसंस्कारित बनाना, दक्ष बनाना, कार्य-कुशल बनाना क्या माता-पिता का पुत्री को दहेज नहीं है? जब इस उपहार की उपस्थिति एवं इस उपहार का देना समाज कर्त्तव्य समझता है, सहर्ष स्वीकार करता है तो दहेज उन्मूलन की बात कैसी? कौन माता-पिता अपने पुत्र-पुत्रियों को जीवन का सहारा नहीं देना चाहते, जब तक बच्चे जीवन में अपने सहारे सक्षम नहीं हो जाते? नैसर्गिक रूप से दिया गया दहेज वधू को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के निमित्त नहीं होता, उसके वर्चस्व को प्रतिपादित करने के लिए नहीं होता, अपितु नए परिवेश में कुछ काल के लिए उसे स्वावलम्बी होने के लिए और नए गृह में परावलम्बी होने से बचाने के लिए और साथ ही उसके नव-सम्बन्धियों को सौगात दे पाने की क्षमता का एक प्रतीक बनता है। यह तो इस भांति एक सामाजिक नैतिकता की बात हुई।

इसलिए जब भी दहेज की बात उठे, विषय विवादित हो तो मुद्दा दहेज का नहीं, इसके लेन-देन की अनैतिकता का ही होना चाहिए। जी हाँ, अभी मैंने जिस सामाजिक नैतिकता की बात कही है, वही यदि सामाजिक अनैतिकता और शोषण का प्रेरक बन जाए तो निश्चय ही उसका सामाजिक, कानूनी एवं मानवीय अधिकारों के स्तर पर खंडन भी होना चाहिए और उन्मूलन भी। दुर्भाग्य है कि ऐसा बहुत बार हुआ है। नारे जुलूस हुए हैं, पुलिसिया कार्रवाई भी हुई हैं, कानून भी बने हैं पर अन्याय रुकता नहीं और वनिताओं की बलियां चढ़ती रही हैं।

वस्तुतः समय के अंतराल ने एक स्वस्थ और अच्छी प्रथा और परम्परा को कुप्रथा और अन्याय में बदल दिया। दहेज जो अच्छे समाज की रचना की प्रक्रिया की एक कड़ी बना हुआ था, समाज की बुराई का शिकार या यों कहें कि बुराई का खतरनाक प्रहार बन गया। यह समय-समय पर पनपने वाली सामाजिक विकृतियों की भांति समाज के लोभी-लालची और स्वार्थी लोगों तथा वर-पक्ष के परिवार द्वारा अपने पुत्र की योग्यता के हिसाब से मांगी जाने वाली कीमत वसूली बन गई जो कन्या के माता-पिता पर अपनी पुत्री को वर के घर तक पहुँचाने की शर्त बन गई। इन शर्तों में कमी अथवा वर-पक्ष के लोगों के लिए दिए जाने वाले उपहार में न्यूनता या तो कन्या के विवाह में अड़चन बन गई या विवाहिता पुत्री पर अत्याचारों का सिलसिला बन गई। धीरे-धीरे विकराल दुष्परिणामों में तब्दील होती यह स्नेह और स्वाभाविक सौगातों की परम्परा ऐसा अपराध बनी कि कभी-कभी रोज बनते उत्पीड़न उन्मूलन के कानून भी छोटे पड़ने लगे।

बात जब बुराई को जड़ से मिटाने की हो रही है तो पहले हमें जड़ को ही ढूंढ निकालना होगा और फिर उसे पूर्णतया जान लेना होगा। हर समस्या का एक आरंभ बिन्दु या जातिगत सरल कारण होता है अनीति का प्रादुर्भाव या दूसरे और सरल शब्दों में इंसान के मानवीय मूल्यों का स्तर गिरना, अहम् और अधिकार बोध की भ्रान्ति का जागना, उसका स्वार्थ और लिप्सा में गिरना और दूसरों की परवाह से मुक्त होना या सहानुभूति से पूरी तरह च्युत होना। मेरी निश्चित मान्यता है और आज के संत मनीषी भी बार-बार यही कहते हैं कि मूल्यों की रक्षा करो, जीवन रक्षित रहेगा; मूल्यों की शृंखला सहेजो, सामाजिक बुराइयों से बचो। फिर न बुराइयों का भय रहेगा और न ही उनके उन्मूलन की समस्या।

चूंकि भारतीय समाज में कालांतर में लड़की को लड़के की अपेक्षा कमतर एवं कमजोर माना जाने लगा, तभी से कन्या भ्रूण-हत्या, बाल-विवाह, स्त्री-शिक्षा की न्यूनता, पर्दा-प्रथा तथा अन्य नानाविध असमताएं और कुरीतियों ने अपने घर बसा लिए। लगने लगा कि यहाँ सब कुछ पुरुष-प्रधान ही है। तथ्यों का विवेचन भले ही सामाजिक इतिहास-वेत्ता

करें किंतु सामान्य जीवन प्रवाह में ऐसा अब भी प्रचुरता के साथ देखा जा रहा है। तब तक हम इस दिशा में सही प्रगति हासिल नहीं करेंगे, समस्या से मुक्त अच्छी परम्पराओं को भी समस्या के जाल में उलझाते रहेंगे और अभियानों के चलाने का मिथ्या अभिमान करते रहेंगे जब तक हम अपने आप में चरित्र की स्थापना और नैतिक मूल्यों का अंतर्बोध जागृत नहीं करेंगे।

ईश्वर ने पुरुष और नारी को अपनी-अपनी विशेषताएं दी, जिन्हें मात्र भिन्नताओं के रूप में पहचानना भी एक मानसिक विकृति और भौतिक भूल है। विशेषताओं को मिटाना किसी भी भांति समता की सार्थकता नहीं बन सकता। मैं नारी हूँ, प्रसन्न हूँ कि मेरे माता-पिता ने मेरे विवाह के समय यत्किंचित उपहार मुझे दिए, मेरे होने वाले परिवार को दिए; गर्वित हूँ कि मेरे पति परिवार में सादगी और सद्भाव था और है, इस परिवार में मुझे पूरा सम्मान मिला; विवशताएं कहाँ नहीं होती। मुझे हर्ष है कि हमारे पुत्र पुत्रियों के विवाह में दहेज के सौन्दर्य का, उसकी आत्मा का सुनिर्वाह हुआ और किसी ने अपनी सीमा न लांघते हुए पर्याप्तता की पूर्ण संतुष्टि बोध की।

शिक्षा और स्त्री को मिली सहज स्वतंत्रता, चरित्र की दृढ़ता और आस्थावादी स्वावलम्बन जहाँ स्थापित रहें, वहाँ अनीति का प्रवेश नहीं होता और कुरीतियों का अंत स्वतः हो जाता है। अभी जो कुरीतियां हैं, वे न तो केवल कानूनी विधान से मिटेंगी, न अभियानों से और न ही उपदेशों से। चेतना भी जगानी है तो प्रथमतया समानगत व्यक्तिगत चेतना जगानी होगी, मानना होगा कि किसी एक की बुराई सामाजिक बुराई का स्रोत बन सकता है और एक की अच्छाई का उदाहरण दूसरे के लिए प्रेरणा का उद्गम बन सकता है।

***विद्या विहार, ख–61–अ, भवानी नगर, सीकर रोड, जयपुर – 302023 (राजस्थान)***

# जब अपने ससुराल की दहलीज पर कदम रखा?

समाज में व्याप्त आडम्बरों के कारण मैं अपनी शादी से डरी हुई थी। मेरे भी मन में कई प्रश्न थे। कैसा होगा ससुराल? कैसे होंगे मेरे ससुराल वाले? लेकिन मुझे गर्व है अपनी ससुराल पर और ससुराल वालों पर। कहा जाता है कि ससुराल में पहला कदम पड़ते ही बहु के शुभ-अशुभ लक्षण देखे जाते हैं। मगर मेरे ससुराल में सारे अच्छे कार्यों का श्रेय मुझे ही मिलता रहा और बुराइयों की तरफ किसी ने मेरी ओर तिरछी नज़र भी नहीं की। सास और बहू के रिश्तों को बदनाम करने वाले परिवार संवाद और धारावाहिकों को मैं सच नहीं मानती, क्योंकि सास माँ की तरह होती है, बहू भी बेटी बन सकती है, यह मुझे अपनी ससुराल के प्रेममयी वातावरण ने सिखाया। मैं अपने अनुभव से कह सकती हूँ कि यदि ससुराल को और ससुराल वालों को अपने विचारों एवं भावनाओं से प्रभावित करना है, ससुराल को ससुराल नहीं 'घर' या यूं कहें 'मायका' बनाना है तो बहुओं को चाहिए कि वे 'संयमः खलु जीवनम्' को अपनायें, शिष्टाचार का ख्याल रखकर, रिश्तों की पवित्रता को समझें, सास-ससुर और पति की बातों का खास-ख्याल रखें, अपनी दिनचर्या सुव्यवस्थित रखें, कलह के कारणों को जन्मने न दें और सबसे जरूरी घर की मर्यादा का हमेशा ध्यान में रख कर चलें। ससुराल की दहलीज पर कदम रखने से पहले अपने मन की दहलीज पर दस्तक दी जाये और यह मानना चाहिए कि ससुराल और ससुरालवाले रिश्तों के बीच वो कड़ी है जहाँ से जिन्दगी का नया मोड़ शुरू होता है, फिर पायेंगे सब कुछ अपना-अपना दिखने लगेगा।

■ **प्रीति 'स्वीटी'**

***द्वारा : दिनेश प्रसाद सिंह, 'शैल– ' निवास, प्रभातनगर, रोड़ नं. – 1, गोबरसही चौक, भगवानपुर, मुजफ्फरपुर – 842001 (बिहार)***

# नारी कितनी सुरक्षित व स्वस्थ

● हीरालाल छाजेड़ ●

गणतंत्र दिवस पर परेड की सलामी लेते हुए भारतीय राष्ट्रपति के रूप में एक महिला जो देश की प्रमुख है वहाँ नारी कितनी असुरक्षित है? यह एक चिंतनीय बात है। अमरीका और फ्रांस जैसे विकसित देशों में भी अभी तक महिला राष्ट्रपति नहीं बन पाई। हमारे देश के लिए यह गौरव की बात तो है लेकिन तस्वीर के दूसरे पहलू पर गौर करने से सिर शर्म से झुक भी जाता है। एक शीर्ष स्थान पर पहुँची महिला के देश में आम साधारण महिला की स्थिति कैसी है? जवाब खोजने के लिए रोजमर्रा की जिन्दगी में झांकने, अखबारों की सुर्खियों और टी.वी. चैनलों की हेडलाइन पर नजर डालने भर की जरूरत है।

दहेज के लिए प्रताड़ित, बदसलूकी, छेड़छाड़, बलात्कार, बाल-विवाह व विधवा के प्रति घृणा अपशकुन जैसी कितनी ही नकारात्मक कहानियां छिपी रहती हैं। अपराधों की फेहरिस्त पर नजर डालें तो चौकाने वाली हैं। एक संक्षिप्त जानकारी के रूप में दहेज से जुड़े मामलों में मौतें 7618, प्रताड़ना 63128, बदसलूकी 36617, बलात्कार 17414, अपहरण 7618 राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड्स ब्यूरो की ताजा रिपोर्ट (वर्ष 2006) के आकड़े भयावह तस्वीर पेश करते हैं। रिपोर्ट के अनुसार बलात्कार करने वालों में 75 फीसदी लोग जान-पहचान वाले होते हैं जिसमें परिवार के सदस्य, अभिभावक, पड़ोसी और रिश्तेदार शामिल हैं।

भारत में रहने वाली महिलाएं तो अपराधों का शिकार बनती ही हैं, पिछले कुछ सालों में विदेशी महिला सैलानियों के साथ आपराधिक मामले भी तेजी से बढ़े हैं। पर्यटन स्थलों से ऐसे कई मामले सामने आते रहते हैं। इन अपराधों के पीछे सामाजिक, कानूनी और सांस्कृतिक कई कारण हैं। समाज इसका दोष सरकार व कानून पर डालकर पल्ला झाड़ लेती है वहीं कानून सामाजिक बदलाव की दुहाई देता है। अपनी सुरक्षा के लिए स्वयं नारी समाज को ही आगे आना होगा। वर्ना

*''नारी जीवन तेरी यही कहानी,*
*आंचल में है दूध और आंखों में पानी।''*

नारी के अपने भीतर छिपी शक्तियों को उजागर करना होगा। नारी माँ दुर्गा के रूप में शक्ति स्वरूपा है। आडम्बर, कुरीतियों, कुसंस्कारों, कुंठाओं का परित्याग कर शक्ति, शांति व सादगी के नये परिवेश में स्वाभिमान भरा सुरक्षित जीवन जीने की राह पर आगे बढ़ना होगा। ताकि कोई भी अपराध प्रवृत्ति का व्यक्ति आंख उठाकर देखने की जुर्रत न कर सके। नारी अगर उठ खड़ी हो तो क्या नहीं कर सकती है। आडम्बर, फैशन, तृष्णा, वासना का परित्याग कर अडिग विश्वास के साथ राष्ट्र निर्माण में व समाज की कुरीतियों को बदलने में पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर शत-प्रतिशत भागीदार बन सकती है।

स्त्री के कई रूप हैं बेटी, पत्नी और माँ। अपनी मातृरूप की सम्पूर्ण गरिमा को पहचाने। अपने कैरियर की चिंता में मातृरूप को गौण न करें, भावी पीढ़ी को संवारने के कार्य में नारी की अहम भूमिका होती है। अपनी संतान को योग्य नागरिक बनाने उसे संवारने में कोई कोर-कसर न छोड़े। नारी तो वह तुलसी का पौधा है जो सारे वातावरण को सुवासित कर देता है। अपने अनेक रूपों में मांगलिक कुमकुम की तरह अपनी आभा बिखेर सकती है। कवि के शब्दों में ''मैंने उसको जब-जब देखा, लोहा देखा, लोहे के सम तपता देखा, गलते देखा, ढलते देखा, मैंने उसको गोली जैसा चलते देखा।'' नारी में जज्बा है तूफानों से टकराने का, सिर्फ श्रद्धा नहीं तुम शक्ति हो सृष्टि की।

सजग प्रहरी बनकर नई दिशा, नई सोच व नई ऊर्जा के साथ स्वयं का आत्म-निरीक्षण करें व एक सुदृढ़ संगठन बनकर प्रकाश की नई किरणें बनकर धरा पर नया सवेरा लाएं ताकि नारी का सोया भाग जाग जाए। नारी अस्तित्व पर जो खतरा मंडरा रहा है, उसकी सुरक्षा नारी को स्वयं ही करनी है, अन्यथा अपराध के आंकड़ों में प्रतिदिन वृद्धि होती रहेगी।

नारी शक्ति को समर्पित महिला दिवस प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को मनाया जाता है लेकिन घर की चौखट से बाहर निकलना महिलाओं के लिए आसान नहीं रहा। आज भी अपने बुनियादी अधिकारों को हासिल करने के लिए स्त्रियों को पुरुष अहं, पितृसत्तात्मक, सामाजिक रूढ़ियों तथा संकुचित मानसिकता से टकराना पड़ता है फिर भी इन तमाम झंझावतों व तूफानों के बीच महिलाएं आज हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही हैं। राजनीति हो या कानून, आकाश हो या पाताल सभी क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। महिलाओं के लिए कुछ सुझाव

● आत्मविश्वासी रहें और खुद पर भरोसा रखें।

● हमेशा अच्छे कार्य/संस्थाओं से जुड़ी रहें। इससे आप अच्छे लोगों के साथ जुड़ी रहेंगी तथा खुद एक शक्ति का अहसास करेंगी।

● साहसी बने रहें, वर्तमान में हर काम को मन लगाकर मुस्तैदी से करें।

● आर्थिक आत्मनिर्भर बनने का प्रयत्न करें।

● अपने आदर्शों को सशक्त रखें।

● जागरूक रहकर अपनी भावनाओं को अपने नियम में रखें।

● सशक्त रूप में शारीरिक व मानसिक तौर पर आत्म निर्भर बनें।

**कामकाजी महिलाओं की समस्या :** ज्यादतर महानगरों में महिलाओं पर कमाने और घर चलाने के बढ़ते दबाव को देखते हुए 68 फीसदी महिलाओं में जीवन शैली से जुड़ी बीमारियां पायी गयी हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार 27 प्रतिशत महिलाएं कामकाजी हैं और उनके स्वास्थ्य का मुद्दा समाज और व्यवसाय दोनों के लिए ही बड़ी चिंता की वजह है। उद्योग चैंबर एसोचैम द्वारा कराये गये सर्वेक्षण के अनुसार 21 से 52 वर्ष तक की आयु की 68 फीसदी कामकाजी महिलाएं मोटापे, तनाव, पीठदर्द, मधुमेह, हाइपरटेंशन, इत्यादि जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों से ग्रस्त हैं।

सर्वेक्षण की रपट के अनुसार लंबी अवधि तक काम करना एवं समय सीमा के भीतर काम निपटाने जैसी अपेक्षाओं के चलते 75 फीसदी कामकाजी महिलाएं तनाव में रहती हैं। जिनमें 70 फीसदी कामकाजी महिलाएं डॉक्टर के पास जाने से परहेज करती हैं। उनकी डॉक्टर के पास न जाने की वजह व्यवस्था कार्यक्रम से समय का अभाव है। कामकाजी महिलाएं मल्टीविटामिन्स सहित पोषक सप्लीमेंट का भी सहारा लेती हैं। क्योंकि उन्हें भोजन का समय न मिलना पर्याप्त नींद न लेना, आहार में पोषक तत्वों की कमी और अत्याधिक अल्कोहल एवं अन्य मादक पदार्थों का सेवन है। कामकाजी महिलाओं को घर और कार्य स्थल पर संतुलन स्थापित करना होता है। अतः स्वास्थ्य को नजरअंदाज कर देती है।

कामकाजी महिलाओं में कुछ प्रतिशत महिलाएं अपने कार्यस्थल में शोषण का भी शिकार हो जाती हैं, जिसमें शारीरिक शोषण भी सम्मिलित होता है। कार्यस्थल तक जाने-आने में भी अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है।

प्रायः घर-गृहस्थी संभालने वाली महिलाएं भी अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह होती हैं। वे घर-गृहस्थी के कार्यों के अलावा अपने बच्चों व पतिदेव की सार-संभाल में इतनी व्यस्त रहती हैं कि स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति उसे सोचने का समय ही नहीं मिलता और अनेक बीमारियों से प्रभावित हो जाती हैं। घर-परिवार के साथ-साथ नारी को अपने स्वास्थ्य के प्रति भी सजग होना अति आवश्यक है। स्वयं के स्वास्थ्य को नजरअंदाज करने से उनके आसपास के वातावरण में काफी जटिलताएं पैदा हो सकती हैं।

***जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार, नन्दीशाही, कटक–1 (उड़ीसा)***

## झाँकी है हिन्दुस्तान की

### धारा 498-ए से सालाना 4500 करोड़ का नुकसान

दहेज उत्पीड़न के मामलों में गिरफ्तारी की वजह से हर साल करीब 4500 करोड़ रुपये का नुकसान होता है। दर्ज मामलों में ज्यादातर बाद में झूठे साबित हो जाते हैं। अगर फर्जी मामलों से बचा जाए तो इस नुकसान से बचा जा सकता है। ये नतीजा है सेव इंडियन फैमिली फाउंडेशन (एसआईएफएफ) की एक शोध रिपोर्ट का।

पुरुषों के अधिकारों और लिंग समानता की लड़ाई लड़ने वाले संगठन एसआईएफएफ से कर्नाटक लॉ कमिशन के हैड जस्टिस वी.एस. मलिमथ ने आईपीसी की धारा 498-ए (दहेज उत्पीड़न) पर विस्तृत रिपोर्ट देने और इसमें जरूरी बदलाव पर राय देने को कहा था। अगर किसी को उसका पति या पति के रिश्तेदार दहेज के लिए प्रताड़ित करते हैं तो आईपीसी की धारा 498-ए के मुताबिक उन्हें तीन साल तक की सजा हो सकती है। इसके दायरे में दूर-दराज के रिश्तेदार जैसे शादीशुदा बहन का पति (चाहे वह वहाँ रहता हो या नहीं) भी आ सकते हैं। यह संज्ञेय अपराध है। मतलब आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए अदालत का आदेश जरूरी नहीं होता। यह गैर-जमानती है इसलिए जमानत अदालत ही दे सकती है। इस कानून के दुरुपयोग की शिकायतें लंबे समय से की जा रही हैं। अदालतें भी कई बार इस तथ्य को स्वीकार चुकी हैं।

एसआईएफएफ की रिपोर्ट में 498-ए को जमानती और असंज्ञेय बनाने की सिफारिश की गई है। इस धारा का गलत इस्तेमाल हो रहा है। गैर जमानती होने के कारण निर्दोष लोग भी लंबे वक्त तक सलाखों के पीछे रहते हैं, जिसका असर उनकी जिंदगी में ही नहीं बल्कि समाज पर भी पड़ता है। इससे लोगों का सालाना करीब 4500 करोड़ रुपये का नुकसान होता है।

पुलिस परिवार परामर्श के लिए प्रशिक्षित नहीं हैं इसलिए जो भी मामले पुलिस के पास जाते हैं, वह केस में तब्दील हो जाते हैं। अगर वही मामले किसी दक्ष प्रशिक्षित के पास पहुँचें तो झूठे मामलों से बचा जा सकता है। आंकड़ों के मुताबिक धारा 498-ए के तहत गिरफ्तार 94 फीसदी लोग दोषी नहीं पाए जाते हैं।

**'नवभारत टाइम्स, 26 अक्टूबर, 2009 से' साभार**

# नारी : परिवार की धुरी

• कुसुम जैन •

नारी को परमात्मा का सबसे बड़ा जादू कहा गया है। उसने समूचे संसार को अपनी मुट्ठी में बांध रखा है, ऐसी स्थिति में पारिवारिक सुख और शांति की पूरी जिम्मेदारी उसी पर आती है। भारतीय नारी शक्ति, समृद्धि और बुद्धि की संवाहिनी के रूप में प्रसिद्ध है। उसके इन तीन रूपों की दुर्गा, लक्ष्मी और रूप में पूजा होती है। निस्वार्थ त्याग, सहज समर्पण, जागृत विवेक, निश्छल ममता और सचेतन सहिष्णुता आदि उसके ऐसे गुण हैं जिनसे अभिमंडित होकर वह अपनी चारित्रिक आभा को और अधिक प्रखर बना लेती है। उसके स्वभाव में मृदुता तैरती है और व्यवहार में विनम्रता झलकती है। ऐसी महिला मात्र घर की शोभा नहीं होती, घर को स्वर्ग बनाने वाली होती है।

घर की व्यवस्था और सौन्दर्य भी महिला के कुशल और अनुभवी हाथों पर निर्भर है। ईंटों, पत्थरों, सीमेंट से बना हुआ घर वास्तव में घर नहीं कहलाता, घर है स्त्री का दूसरा नाम। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस घर में स्त्री सुघड़ है, वही घर व्यवस्थित घर का रूप ले सकता है। इस सत्य को वे पुरुष अच्छी तरह से महसूस करते हैं जिनकी पत्नी कुछ समय के लिए मायके चली जाती है अथवा जिनको पत्नी का वियोग सहना पड़ता है। यदि वे पूरी ईमानदारी के साथ अपनी स्थिति का विश्लेषण करें तो उन्हें अपना समूचा घर अव्यवस्थित दिखाई देने लगता है।

घर और परिवार में स्त्री जितनी आवश्यक है, वह परिवार का उतना ही उपेक्षित पात्र है। पति या पुत्र सक्षम हो, आर्थिक दृष्टि से उनके सामने कोई समस्या न हो और उनके मन में पत्नी या माँ के प्रति कर्त्तव्य भावना हो तब तो स्त्रियों को सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार मिल जाता है। अन्यथा भारतीय नारी इतनी निरीह बनकर रह जाती है कि परिवार में किसी के साथ उसकी भावनात्मक साझेदारी नहीं रहती।

एक नौकरानी की भांति दिनभर मेहनत करना और उसके बदले में रोटी, कपड़े की व्यवस्था पा लेना, क्या एक औरत की यही नियति है। इतना भी तो सब औरतों को कहाँ नसीब होता है। जिनके पति या पुत्र के आय के स्रोत सीमित है, जो बच्चों की परवरिश और शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं कर सकते, उनके गुस्से का शिकार भी बहुत बार स्त्रियों को होना पड़ता है। जो पुरुष शराबी, जुआरी तथा अन्य किसी भी दुर्व्यसन के आदी होते हैं वे कुछ दिन तो स्त्री की व्यक्तिगत सम्पत्ति रुपयों और गहनों पर अपना हाथ साफ करते हैं। जब उसकी संपत्ति चुक जाती है अथवा वह कुछ सावधान हो जाती है तो उस पर पहले हाथ और फिर डंडा भी उठ जाता है। एक ओर अभावजनित पीड़ा, दूसरी ओर पति द्वारा गालियों की बौछार एवं मारपीट। इतना सब कुछ सहते हुए भी अधिकांश स्त्रियां दूसरे के सामने अपना मुंह नहीं खोलतीं। यदि उसकी किसी हितैषी को किसी स्रोत से स्थिति की जानकारी मिल जाती है और वह उसे अपने अधिकारों के लिए विद्रोह करने की बात कहती है तो वह उसे झटपट स्वीकार नहीं करती। शारीरिक और मानसिक यातनाएं झेलकर भी वह अपने पति को छोड़ना नहीं चाहती। पति द्वारा सताई गई ऐसी अनेक

महिलाएं हैं, जो चाहती है कि उनकी अंतरंग व्यथा कोई जान न पाए और वे अपनी जिंदगी के बाकी दिन पति के साथ अनबोल रहकर भी एक छत के नीचे बिताएं। क्या कोई भी स्वाभिमानी व्यक्ति इस प्रकार की जिंदगी को स्वीकार कर सकता है?

एक ओर आततायी पुरुषों का हिंसक मनोभाव, दूसरी ओर अपनी ही सजातीय महिलाओं का मारक ईर्ष्याभाव और तीसरी और सामाजिक रूढ़ियों की कारा, चौथी और अंधविश्वासों और कुसंस्कारों की चोट। चारों ओर से स्त्री जाति पर जो आक्रमण हो रहे हैं, उसकी मानसिकता क्षत-विक्षत हो रही है। ऐसे परिवेश में मेरे स्वप्न में महिला समाज का चित्र इस प्रकार है

- महिला अपने संपूर्ण व्यक्तिगत की स्वामिनी बने।
- महिला का चरित्र इतना साफ-सुथरा, उज्जवल और पारदर्शी हो कि उसमें उसके पूरे जीवन का प्रतिबिम्ब झलके।
- महिला भारतीय संस्कृति और धार्मिक संस्कारों की जीवंत प्रतिभा बनकर जीए।
- कोई भी महिला अशिक्षित न रहे, निरक्षर न रहे।
- देहात, गांव और ठाणी में रहने वाली महिला भी पर्दे में न रहें।
- सामाजिक कुरूढ़ियों और परिवार की कृतार्थ परम्पराओं की भार वाहक बनने वाली कोई भी महिला न रहे।
- आभूषणों के व्यामोह और फैशन के नए-नए तेवरों से महिला को मुक्ति मिले।
- विवाहित महिला अपने पति की दासी नहीं, सहचरी या साथी की पात्रता प्राप्त करे।
- कोई भी महिला हीन भावना से कुंठित न हो।
- पति के दिवंगत हो जाने पर वियोगिनी महिला की सामाजिक या पारिवारिक स्तर पर किसी प्रकार की दुर्गति न हो।
- प्रदर्शन और अंधानुकरण की दौड़ से अलग हटकर महिला अपनी सृजन चेतना को जगाए।
- व्रत जीवन के लिए सुरक्षा कवच है, इस अवधारणा के साथ महिला अणुव्रत की आचार-संहिता का पालन करें।
- सामाजिक वर्जनाओं और लक्ष्मण रेखाओं को एक सीमा तक अपनी सहमति देकर महिला अपने कार्यक्षेत्र को व्यापक बनाए।
- एक महिला दूसरी महिला के प्रति उदार, सहिष्णु, संवेदनशील और सहयोगी बनें। कम से कम वह उसके विकास में बाधा न पहुँचाए।
- महिला परिवार-निर्माण योजना की संचालिका बनें। इस योजना के अंतर्गत संस्कार-निर्माण, शांत सहवास, सेवा, स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि मूल्यों को जीवनगत बनाने के कार्यक्रम प्रस्तुत करे।
- दहेज की त्रासदी से मुक्त होने के लिए महिला कोई क्रांतिकारी पग उठाए और समाज में दहेज की मूल्यहीनता को प्रस्थापित करे।
- महिला अपने आत्म-विश्वास को जगाए और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में विवेक के साथ गति करें।
- घर की दीवारों से बाहर पहचान बनाने की तड़प से पहले महिला अपने घर में अपनी अस्मिता स्थापित करें और कर्तृत्व को उजागर करें।
- महिला अपने मौलिक गुण सहिष्णुता, विनम्रता और मृदुता को विकसित करती हुई अपने प्रति होने वाले अन्याय का प्रतिकार करें।
- महिला अपने चारित्रिक सौंदर्य को सुरक्षित रखती हुई विकास के नए द्वार खोलने का जहाँ तक संभव हो सके हर संभव प्रयत्न करे।
- समाज के गलत मूल्यों से संघर्ष का संकल्प लेकर चलने वाली महिला किसी भी कठिन परिस्थिति में अपने आपको दुर्बल होने से बचाए।

ये कुछ ऐसे सूत्र हैं जो भारतीय नारी की एक समग्र छवि का अंकन कर सकते हैं और उसे गौरव की दीप्ति से चमका सकते हैं।

***संपादिका : 'णाणसायर' (त्रैमासिक)***
***बी–5/263 यमुना विहार,***
***दिल्ली–110053***

**प्राकृतिक अन्तर को ध्यान में रखते हुए महिलाओं के विकास पर विशेष बल देने की अपेक्षा है।**

● आचार्य तुलसी ●

*संप्रसारक :*

**एम.जी. सरावगी फाउंडेशन**

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

# किसान महिलाओं की पहचान हो

● नरेन्द्र देवांगन ●

उत्तर प्रदेश के इब्राहिमपुर गांव की रहने वाली विमला सुबह जल्दी सोकर उठती है। खाने के लिए कुछ बनाती है। पति और परिवार को खाना देती हैं इसके बाद पति के साथ सुबह ही खेत पर काम करने चली जाती है। यहाँ वह खेत की गुड़ाई, फसल की निराई, सिंचाई, कटाई जैसे काम करती है। खेत में बीज बोने का काम भले ही उसका पति करता हो, लेकिन वह उसमें भी पूरी मदद करती है। यहीं खेत के किनारे ही उसका बच्चा भी खेलता है और जानवर भी चरते हैं। अगर जानवर चरने के लिए नहीं आए हैं, तो उनके खाने के लिए घास काटने का काम भी वह करती है। शाम को पति के साथ घर लौटती है। पति भले ही इधर-उधर लोगों के बीच बैठने चला जाता हो, लेकिन विमला शाम को खाने के लिए भोजन बनाने में जुट जाती है। जब घर के सभी लोग खाना खा लेते हैं, तो वह बर्तन साफ करके ही बिस्तर पर सोने के लिए जाती है। इस हाड़तोड़ मेहनत करने वाली औरतों को किसान का दर्जा नहीं दिया जाता है। खाता-खतौनी में आदमी का ही नाम होता है।

सुलोचना भीखमपुर गांव की रहने वाली है। शादी से पहले उसने 5 जमात तक की पढ़ाई की थी। माँ-बाप ने जल्दी शादी कर दी। सुलोचना अपने पति के घर आ गई, तो यहाँ उसको खेती के काम करने, खाना बनाने और बच्चों की देखभाल करने से ही समय नहीं मिलता था। कम उम्र में शादी करने और बच्चे पैदा करने से वह जवानी में ही बूढ़ी नजर आने लगी। उसको तमाम तरह की बीमारियों ने घेर लिया। पति भी दूसरी औरतों की तरफ झुकने लगा। एक दिन वह दूसरी औरत को घर ले आया। परेशान सुलोचना क्या करती, उसने किसानी करने में ही अपनी जिंदगी गुजार दी। इसके बदले उसको दो जून की रोटी और फटा-पुराना कपड़ा ही मिलता है। खेती की जमीन पर उसका कोई हक नहीं है। किसानी करने के बाद भी सुलोचना की अपनी कोई पहचान नहीं बन पाई। वह मजदूर से भी गई-गुजरी जिंदगी गुजर-बसर कर रही है।

सुल्तानपुर की रहने वाली पियरा देवी 8वीं जमात तक पढ़ी है। उसको पता था कि सुखी रहने व परिवार की तरक्की के लिए कम बच्चों का होना बहुत जरूरी होता है। इसलिए उसने एक बच्चे के बाद ही नसबंदी करा ली। वह अपने पति के साथ खेत पर काम करने जाती थी। पति से फसल कटने पर कुछ पैसा मांग लेती थी। शुरू में पति को पियरा देवी का यह काम बहुत खराब लगता था। एक बार पति को पैसों की जरूरत पड़ी, तो पियरा ने अपने बचाए पैसों से उसकी मदद की। पियरा ने अपने बच्चे को पढ़ाया। उसको सरकार पढ़ने के लिए वजीफा भी देती है। पियरा ने पति को समझाया कि वह शराब न पिया करे। पति समझदार था। उसने पत्नी की बात मानी। आज पियरा का परिवार खुशहाल परिवारों में गिना जाता है। अपने जमा किए पैसों से पियरा ने पत्तल बनाने का काम शुरू किया। जिन दिनों में किसानी का काम कम हो जाता है, पियरा अपने पति के साथ बाजार जाकर पत्तल और दोना बेच आती है।

गोरखपुर एनवायरमेंटल एक्शन ग्रुप के सहयोग से कराए गए एक सर्वे से पता चलता है कि किसानी में लगी औरतों के हिस्से में मेहनत तो आती है, लेकिन उसको कोई बड़ा फायदा नहीं मिलता है। वह एक मजदूर की तरह ही काम करती है। वर्ष 2001 की जनगणना के हिसाब से प्रदेश में 5 करोड़ कामगार हैं। इनमें औरतों की तादाद 24 फीसदी है। इन औरतों में से 41 फीसदी औरतें मजदूरी करती हैं और बाकी किसानी। अगर इन आंकड़ों की मानें, तो भी किसानी से जुड़ी औरतों की तादाद बहुत है। औरतों की सबसे बड़ी परेशानी यह है कि सरकार उनको किसान नहीं मानती। जमीन के कागजातों पर उनका नाम नहीं लिखा जाता, जिससे वह केवल मजदूर ही रह जाती हैं। किसानी से जुड़ी इन औरतों पर घर और खेती के काम की दोहरी जिम्मेदारी होती है। किसानी के साथ-साथ ये औरतें घर-परिवार के काम भी करती हैं। बच्चों का पालन, घर के कपड़े धोना, खाना बनाना और सास- ससुर व पति की सेवा करना वगैरह शामिल है। किसानी से जुड़ी बहुत सारी महिलाओं में एक बुराई यह होती है कि वे पान या फिर तंबाकू का सेवन जरूर करती हैं। कुछ औरतें तो बीड़ी, हुक्का और शराब तक भी पी लेती हैं। नतीजन, पूरा परिवार परेशान रहता है।

अपने घर-परिवार को स्वस्थ एवं सुचारु रूप से चलाने हेतु

- खेती से बचे हुए पैसों को डाकघर या फिर बैंक में जमा करें।
- हर फसल पर कुछ न कुछ पैसा जरूर बचाएं।
- अंधविश्वास और बाबाओं के जाल से बचकर रहें।
- डॉक्टरी इलाज कराएं, ओझाओं के जाल में न फंसे।
- घर के झगड़े घर में ही निपटाएं। इनको लेकर थाना, कचहरी और पंचायत में न जाएं।
- अपने बच्चों को जरूर पढ़ाएं।
- लड़कियों की शादी कम उम्र में न करें।
- परिवार छोटा रखें। छोटे परिवार का पालन-पोषण आसान होता है।
- अगर आप कुछ पढ़ी-लिखी हैं, तो अपनी जमीन के कागजात जरूर देखें। जमीन कहाँ पर और कितनी है, इसका भी हिसाब रखें।
- सिंचाई और मालगुजारी समय पर अदा करें, जिससे आने वाली परेशानी से बचा जा सके।

***नरेन्द्र फोटो कॉपी***
***पोस्ट : खरोरा – 493225 (रायपुर–छत्तीसगढ़)***

# विद्यादान सबसे बड़ा पुण्य

• डॉ. रामसिंह यादव •

पुराने समय की बात है। मथुरा नगरी में शिव शर्मा नामक ब्राह्मण रहा करते थे। वे बड़े ही विद्वान थे। धर्म शास्त्रों के धुरंधर विद्वान होने के कारण नगर के सभी व्यक्ति उनका आदर-सत्कार करते थे। उनके घर में किसी भी चीज की कमी नहीं थी। शिव शर्मा भी अपना अधिकतर समय वेद-पुराणों के अध्ययन में व्यतीत करते थे। बहुत से छात्र उनसे शिक्षा ग्रहण करते थे। वे बिना कुछ लिए ही छात्रों को पढ़ाते थे। उनके पढ़ाए हुए बहुत से छात्र पढ़-लिख कर उच्च कोटि के विद्वान बन गए। गुरु सेवा के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे, मगर शिव शर्मा ने तो अलाभ व्रत धारण किया हुआ था। वे किसी भी छात्र से कोई भी वस्तु नहीं लेते थे।

एक दिन उन्होंने दर्पण में अपना चेहरा देखा। सफेद बाल और मुख पर पड़ी हुई झुर्रियों ने शिव शर्मा को चौंका दिया। उन्होंने सोचा बुढ़ापे ने अब मुझे घेर लिया है। मेरी उम्र ढल चली है। पुण्य का काम मुझसे कोई हुआ नहीं। पढ़ने-पढ़ाने में ही आयु बीत चली है।

फिर वे अपनी पत्नी से बोले मुझे अब बुढ़ापे ने घेर लिया है। पढ़ते-पढ़ाते बाल पक गए। दान-पुण्य कुछ न कर पाया। प्रभु का स्मरण भी न किया। न कोई मंदिर-धर्मशाला बनवाई। न तीर्थ व्रत किया। अंत में अच्छे काम और प्रभु भक्ति ही सहायता करने वाली है क्यों न मैं तीर्थ यात्रा कर आऊँ?

परिवार का त्याग करके उन्होंने सन्यास धारण कर लिया। तीर्थ यात्रा पर निकल पड़े। चारों धाम करने के पश्चात वे हरिद्वार पहुँच गए। हरिद्वार आकर तपस्या में लीन हो गए। अन्न-जल कई दिनों तक ग्रहण नहीं किया। विष्णु उपासना में जुटे रहे। एक दिन दिव्य विमान आकाश से उतरा। उसमें से दूत निकले। शिव शर्मा के पास आकर वे अत्यन्त विनम्र भाव से बोले "महात्मन! यह विमान स्वर्ग लोक से आपके लिये आया है। कृपया आप इस विमान में बैठकर हमारे साथ स्वर्गलोक पधारें।"

उन दूतों की बातों को सुनकर वे आश्चर्य चकित हुए। वे सोचने लगे मैंने तो कोई भी पुण्य का काम नहीं किया। सारी आयु पढ़ने-पढ़ाने में ही बिता दी है फिर भी भगवान की बड़ी कृपा हुई जो उन्होंने स्वर्ग से यह विमान मुझे लाने के लिए भेजा है।

वे झट से विमान में बैठ गए। विमान तेज गति से उड़ने लगा। कई लोकों को पार करता हुआ विमान यमलोक में जाकर उतर गया। वहाँ पर उनके स्वागत के लिए यमराज खड़े थे। वहाँ शिव शर्मा को संदेह पैदा हुआ कि उसने कोई भी दान पुण्य व तीर्थ-व्रत नहीं किये और प्रभु अर्चना पूजा कुछ भी न की थी। अतः उसे यमलोक की यातनाएं अवश्य भोगनी पड़ेंगी। अभी वे सोच ही रहे थे कि यमराज बोले आप स्वर्ग में चलकर वहाँ की शोभा बनाएं।

आश्चर्य चकित शिव शर्मा बोले धर्मराज! मैंने अपने जीवन में कोई भी पुण्य का काम नहीं किया है। सारी आयु पढ़ने-पढ़ाने में ही व्यतीत कर दी। न तो मैंने हरि का भजन किया, न दान-पुण्य किया और न तीर्थ-व्रत किया। फिर भी आप मुझे स्वर्गलोक में स्थान दे रहे हैं?

यमराज बोले महात्मन! आप अपने कर्मों का खाता भली प्रकार देख सकते हैं। आपके नाम के आगे तो पुण्यों की एक लम्बी सूची बनी हुई हैं।

शिव शर्मा ने अपने कर्मों का खाता देखा तो यमराज की बात बिलकुल सच निकली। उन्हें आश्चर्य में डूबा देखकर यमराज फिर बोले दूसरों को विद्यादान देना सबसे बड़ा पुण्य कार्य है। बिना कुछ लिये विद्यादान करके आपने तो हजारों तीर्थों का पुण्य पा लिया है। इसलिए आपको अब स्वर्गलोक और बैकुंठ धाम में ही निवास करना है।

इतना सुनकर शिव शर्मा बड़े ही प्रसन्न हुए। उन्हें आभास हो गया था कि विद्यादान सबसे बड़ा पुण्य है।

*14 उर्दूपुरा, उज्जैन, (म.प्र.) 456001*

## जीवन विज्ञान रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेंटर शिलान्यास समारोह

# जीवन विज्ञान में अनुसंधान की जरूरत : आचार्य महाप्रज्ञ

**लाडनूं 9 अक्टूबर।** जैन विश्व भारती परिसर में अमृतवाणी के पीछे की जगह पर जीवन विज्ञान रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेंटर शिलान्यास समारोह में बोलते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जीवन विज्ञान एक ऐसी पद्धति है जिसमें अहिंसा की शिक्षा, नैतिकता की शिक्षा एवं आन्तरिक परिवर्तन की शिक्षा के तत्व समाहित हैं। सिद्धांतों के साथ–साथ इस शिक्षा पद्धति में प्रयोगों पर बल दिया गया है। जीवन विज्ञान के माध्यम से प्रशिक्षण का क्रम नियमित चल रहा है। प्रशिक्षण से लोगों को आश्चर्यजनक लाभ भी हो रहे हैं। लाभ क्यों हो रहा है, कैसे हो रहा है और क्या करने से और अधिक लाभ हो सकता है, इसका वैज्ञानिक अनुसंधान जरूरी है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जीवन विज्ञान रिसर्च एवं ट्रेनिंग सेंटर की कल्पना हुई। इस कल्पना को साकार करने वाले लोग साधुवाद के पात्र हैं।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जीवन विज्ञान सम्यक् जीवन जीने की कला सिखाता है। आज के युग की आवश्यकता है कि कैसे अच्छा जीवन जीया जाये। यह कला जीवन विज्ञान से संभव है। आगे उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान से सर्वांगीण विकास संभव है।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने कहा जीवन विज्ञान के अन्तर्गत कुछ ऐसे विशिष्ट प्रयोग हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति के भावों का रूपान्तरण हो सकता है। जो कभी रहस्य थे वे जीवन विज्ञान के प्रयोगों से उद्घाटित हो रहे हैं, अतः रहस्यों पर शोध जरूरी है। जीवन विज्ञान भविष्य की योजना है जो मनुष्य के व्यवहारिक जीवन के लिए जरूरी है। जीवन विज्ञान के प्रयोग के द्वारा व्यक्ति मानसिक तनाव को दूर कर सकता है।

*अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ से चर्चा करते हुए नागौर जिला कलेक्टर डॉ. समित शर्मा*

सुधर्मा सभा में आयोजित कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चौरड़िया ने अनुदानदाताओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि जीवन विज्ञान आचार्यप्रवर का महत्त्वपूर्ण आयाम है, जिसके द्वारा शिक्षा जगत में क्रांति आएगी जीवन विज्ञान भवन का शिलान्यास हुआ है इस भवन का उपयोग शोध और प्रशिक्षण के लिए होगा।

समारोह का प्रारम्भ रूस से पधारे अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग लेने वाले संभागियों द्वारा हिन्दी में प्रस्तुत आत्म साक्षात्कार गीत के मंगल संगान के साथ हुआ। इस अवसर पर दूर–दूर से पधारे अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता के छात्रों ने गीत की प्रस्तुति दी। समारोह के मुख्य अतिथिद्वय देवराज नाहर एवं मूलचन्द नाहर का साफा पहनाकर सम्मान क्रमशः जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया, मंत्री भीखमचन्द पुगलिया ने किया। संचालन डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने किया।

इस अवसर पर राजस्थान के कृषिमंत्री हरजीराम बुरड़क ने राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। करीब 40 मिनट तक आचार्यवर की उपासना में बिताने वाले बुरड़क ने कहा कि राजनीति मेरा विषय नहीं रहा। किन्हीं कारणों से जबरदस्ती मुझे ढकेल दिया। उन्होंने कहा कि मेरा परिवार बहुत धार्मिक है, धर्म के संस्कार बचपन से ही मुझे मिले हैं। कृषिमंत्री बुरड़क ने जैन विश्व भारती एवं लाडनूं के विकास पर ध्यान देने का संकल्प व्यक्त किया एवं राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु मार्गदर्शन प्राप्त किये।

आचार्यवर ने राजनीति में अच्छे लोगों का जमे रहना जरूरी बताया। उन्होंने कहा कि जब अच्छे लोग नहीं रहेंगे तो भ्रष्टाचार को रोक पाना कठिन हो जायेगा।

**लाडनूं 10 नवम्बर।** नागौर जिला कलेक्टर डॉ. समित शर्मा ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन किये। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ को सामाजिक चेतना से विकसित करने के गुर बताने का निवेदन करते हुए कहा कि क्षेत्र का शांति के साथ विकास होता रहे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें। कलेक्टर शर्मा ने खुद के शाकाहारी होने एवं उनोदरी तप करने की भी जानकारी दी। इस मौके पर आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन दर्शन, अपरिग्रह सिद्धांत इच्छा परिणाम, अनेकांत एवं सापेक्ष अर्थशास्त्र के अपने नये प्रारूप की जानकारी प्रदान कराने के साथ अमन चैन स्थापित करने के गुर बताये। इस मौके पर जैन विश्व भारती की ओर से निदेशक जितेन्द्र बोथरा ने शर्मा को साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। समित शर्मा ने आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तकों की सम्पादिका एवं अंग्रेजी पुस्तकों की अनुवादिका मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा से साहित्य के सन्दर्भ में जानकारी ली एवं अपने आपको आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य का प्रेम बताया। डॉ. शर्मा के साथ जिला परिषद के सी.ओ. एवं लाडनूं एस.डी.एम भी मौजूद थे। इसके पश्चात प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने कलेक्टर सुमित शर्मा को प्रेक्षाध्यान का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया।

# दशम अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता

**लाडनूं 9 नवम्बर।** अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास द्वारा आयोजित अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता के समापन सत्र में कार्यक्रम व पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधित करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि जैसे मक्खन को निकालने के लिए दूध को कभी गर्म किया जाता है कभी ठण्डा किया जाता है उसी तरह हमारा प्रयत्न मक्खन के लिए होना चाहिए। अणुव्रत को शिक्षा जगत में सरसता के साथ कैसे प्रवेश कराया जाये इस पर चिंतन होना चाहिए। न्यास द्वारा आयोजित इस संगीत के कार्यक्रम से अणुव्रत विद्यार्थियों में पहुंचाया जा सकता है। क्योंकि संगीत में सरसता होती है। जिससे नैतिकता की बात विद्यार्थियों के गले में सीधी उतर जाती है। उन्होंने विद्यार्थियों को अणुव्रत के गीतों में छिपे संदेश को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

*अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत करते अ.भा. अणुव्रत न्यास के अधिकारीगण एवं अन्य*

उन्होंने न्यास के कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि अणुव्रत विद्यार्थियों के निर्माण का सुंदर उपक्रम है। हमें इसके सभी पक्षों पर काम करना है जिससे आज के अनैतिक युग में नैतिकता के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान हो सके। उन्होंने कहा कि अणुव्रत जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान के व्यापक कार्य चारों तरफ चल रहे हैं। जिस तरह दूध, चीनी और चावल तीनों का स्वाद अलग होता है और जब तीनों को मिला दिया जाता है तो एक स्वाद हो जाता है उसी तरह अणुव्रत, जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान तीनों अलग–अलग नहीं है एक ही है।

उन्होंने कहा कि चाहे गीत संगीत के माध्यम से हो या अन्य किसी माध्यम से हो, समाज और व्यक्ति को अच्छा बनाने की दिशा में कार्य करना है और व्यक्ति समाज में नैतिक चेतना का विकास एवं आध्यात्मिक चेतना का जागरण करना है। इसके लिए सभी लोग परस्पर चिंतन करें जिससे एक निष्पत्ति सामने आ सकती है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि पिछले दो–तीन दिनों से गीतों की स्वरलहरियां गुंजायमान हो रही थीं उसमें तैयारी और श्रम बोल रहा था। गीत गाना बड़ी बात नहीं है उससे बड़ी बात है कि अणुव्रत के गीतों की प्रेरणा मनुष्य के भीतर तक चली जाए। एक तरफ निष्पत्ति और दूसरी तरफ संसाधन शक्ति दोनों का बैंलेंस बराबर रहे और यदि दोनों में से एक पलड़ा भारी है तो चिंतनीय बात हो सकती है। आवश्यक है तोलकर निष्कर्ष निकालकर भविष्य का चिंतन करना चाहिए।

इस अवसर पर अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया, अणुव्रत न्यास के प्रबन्ध न्यासी धनराज बोथरा, कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक विजयवर्धन डागा, न्यासी शांतिलाल जैन ने पुरस्कार प्रदान किये।

न्यास की ओर से कनिष्ठ एकल गायन में प्रथम रही वैंकटेश्वर पब्लिक स्कूल दिल्ली की छात्रा सुनंदिता पण्डित को 21 हजार का चैक एवं ट्रॉफी, द्वितीय स्थान प्राप्त गुरु तेग बहादूर स्कूल हल्दानी उत्तरप्रदेश की छात्रा को 11 हजार का चैक एवं ट्रॉफी वरिष्ठ में प्रथम रही कोटा की छात्रा हिमांशी जोशी को एवं द्वितीय स्थान पर डी.एल.एफ साहिबाबाद की छात्रा को पुरस्कार राशि एवं ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। कनिष्ठ समूह गायन में अहल्कान पब्लिक स्कूल दिल्ली द्वितीय सरपदकपद सिंघानिया स्कूल कोटा एवं वरिष्ठ समूह गायन में प्रथम इंडियन पब्लिक स्कूल छत्तीसगढ़ द्वितीय नक्सी स्प्रिंगडेल स्कूल कोटा को पुरस्कार प्रदान किया। सूरत के एक विद्यालय की विकलांग छात्रों को हमारा प्यारा हिन्दुस्तान गीत की सुन्दर प्रस्तुति पर विशेष प्रतिभा पुरस्कार से नवाजा गया। उनको इस पुरस्कार स्वरूप 11 हजार का चेक एवं मोमेंटो प्रदान किया गया। विकलांग द्वारा प्रस्तुत गीत 'हमारा प्यारा हिन्दुस्तान' साध्वी कनकश्री द्वारा रचित है। इस अणुव्रत गीत को दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने 2010 में होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों में गुंजायमान कराने की घोषणा की। इस मौके पर मुख्यमंत्री द्वारा प्रदत्त शुभाशीष संदेश का वाचन किया गया एवं प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा ने आचार्यवर को भेंट किया।

कार्यक्रम में अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने अणुव्रत को सर्वमान्य बैनर बताया। प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा, न्यासी शांतिजैन ने न्यास की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम को सफल बनाने में विजयवर्धन डागा, संपतमल नाहटा, गोविन्द बाफना, श्रीमती सायर बोथरा, विमल गुनेचा आदि का सराहनीय श्रम रहा। संचालन प्रमोद घोड़ावत ने किया।

## वर्तमान युग में अणुव्रत की प्रासंगिकता

**नई दिल्ली।** अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने नैतिकता शून्य उपासना को अधिक महत्व नहीं दिया था। धार्मिक उपासना के साथ जीवन में नैतिकता-प्रामाणिकता का होना आदर्श व्यक्ति की पहचान है। इस दृष्टि से अणुव्रत की प्रासंगिकता त्रैकालिक है। अणुव्रत की आचार संहिता में मानव को महामानव बनाने की क्षमता है। ये विचार मुनि सुमतिकुमार ने ओसवाल भवन के प्रांगण में दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित ''आज के युग में अणुव्रत की प्रासंगिकता'' विषयक संगोष्ठी में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा आचार्य तुलसी की जन्मशताब्दी अणुव्रत आंदोलन को त्वरित गति प्रदान करने का सुअवसर है। अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत न्यास, अणुविभा तथा स्थानीय अणुव्रत समितियों के कार्यकर्ता एकजुट होकर चिंतन-मनन द्वारा अणुव्रत की अनुगूंज पूरे विश्व में फैलाने का संकल्प करें। वर्तमान समय में सौ करोड़ भारतीयों में से लगभग 80 करोड़ लोग धार्मिक हैं, लेकिन नैतिक व्यक्ति एक करोड़ मिल जाये तो भी बहुत बड़ी बात होगी। अभी से ही वर्ष 2013-14 में अणुव्रत को व्यापक रूप देने की योजनाएं बनाई जाये, ताकि अणुव्रत द्वारा निरंतर प्रवाहित नैतिकता के निर्झर से समस्त मानवता आप्लावित हो सके।

शुभारंभ नचिकेता मुनि आदित्यकुमार द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मुनि देवार्यकुमार ने कहा एक हजार रुपये के नोट का प्रत्येक स्थिति में मूल्य है। वैसे ही अणुव्रती व्यक्ति की हमेशा मूल्यवत्ता बनी रहेगी। अतः हम अपनी पवित्रता बढ़ाएं तथा प्रायोगिक धर्म (अणुव्रत) को जीवन में उतारें।

अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा वर्तमान युग में पारिवारिक सौहार्द, सामाजिक सौहार्द तथा संस्थागत सौहार्द बढ़ाने में अणुव्रत अहम भूमिका निभा सकता है। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के पूर्व मुख्य न्यासी कन्हैयालाल पटावरी ने कहा अणुव्रत जीवन रूपी गाड़ी को कुरीतियों से बचाने का ''ब्रेक'' है तथा प्रगति पथ में प्रशस्त होने हेतु ''एक्सीलेटर'' है। उन्होंने अणुव्रत को जीवन जीने की कला बताते हुए दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ को दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति को सक्रिय बनाने हेतु बधाई भी दी। अणुविभा अध्यक्ष तेजकरण सुराणा ने विश्व शांति में अणुव्रत की भूमिका पर प्रकाश डाला।

अणुव्रत महासमिति के नवमनोनीत अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने अणुव्रत की गति में शक्ति भरने का आह्वान किया। दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति द्वारा इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास तथा अणुविभा के वर्तमान व निवर्तमान पदाधिकारियों का सम्मान समारोह रखा गया। डॉ. महेन्द्र कर्णावट का सम्मान बाबूलाल दूगड़ एवं राजकुमार सेठिया ने किया। निर्मल एम. रांका का सम्मान सुभाष सेठिया एवं डॉ. कुसुम लूणिया ने किया। कन्हैयालाल पटावरी का सम्मान विजयराज सुराणा तथा प्रकाश भंसाली ने किया। धनराज बोथरा का सम्मान बाबूलाल गोलछा तथा राजेन्द्र सिंघी ने किया। तेजकरण सुराणा का सम्मान शांतिकुमार जैन एवं अशोक बैद ने किया। सम्पतमल नाहटा का सम्मान भानुप्रकाश बरड़िया ने किया। विजयराज सुराणा का सम्मान राजीव बैंगानी ने किया। आभार ज्ञापन एवं संयोजन दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के मंत्री प्रकाश भंसाली ने किया।

## आचार्य तुलसी की महान देन है अणुव्रत

**गंगापुर।** अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने नैतिकता, प्रामाणिकता, मानवीय एकता एवं चरित्र शुद्धि की दृष्टि से अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। जिसका लक्ष्य जाति, धर्म, रंग, लिंग, भाषा, प्रांत इत्यादि भेदभावों से ऊपर उठकर मानव मात्र को आत्मसंयम की ओर प्रेरित करना है। अणुव्रत आंदोलन हृदय परिवर्तन का अभियान है। अपेक्षा है व्यक्ति अणुव्रत आंदोलन की आचार संहिता को अपने जीवन में संकल्प के साथ प्रवेश दे। ये विचार साध्वी सम्यक्प्रभा ने गंगापुर स्थित कालूगणी की समाधि पर आचार्य तुलसी के 96 वें जन्मदिवस ''अणुव्रत दिवस'' पर व्यक्त किये।

साध्वी मलयप्रभा ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में आचार्य तुलसी के जीवन वृत पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा सर्जित आयामों एवं अवदानों का उल्लेख किया।

अणुव्रत समिति के संरक्षक देवेन्द्र कुमार हिरण ने कहा आचार्य तुलसी का सम्पूर्ण जीवन मानवीय एकता, मानवीय संवेदनशीलता, भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता का पक्षधर रहा है। जीवन में आने वाले विरोधों, अवरोधों एवं संघर्षों का मुकाबला करते हुए वे लक्ष्य के प्रति सदैव सजग रहे।

कैलाश हिरण ने कहा आचार्य तुलसी एक युग पुरुष के रूप में देश में अवतरित हुए और देशवासियों को अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के रूप में एक नई दिशा दी।

अणुव्रत समिति गंगापुर के संयुक्त मंत्री रमेश हिरण ने कहा आचार्य तुलसी एक आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे। अणुव्रत जीवन जीने की कला है। स्वयं को देखने का दर्पण है। हम अणुव्रत को अपने जीवन एवं आचरण में लाने का प्रयास करें।

साध्वी संकल्पप्रभा ने मुक्तक व गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की। इस अवसर पर नानालाल बापना, रोशनलाल गोखरू, हस्तीमल नोलखा, नूतन नोलखा, प्रवीण नोलखा, नेमीचंद भंडारी, ऐश्वर्या मेहता ने अपने विचार रखे। अणुव्रत उद्घोष के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

## संत मानवता का उत्थान करते हैं

**रतनगढ़, 24 अक्टूबर।** अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 96वां जन्मदिवस स्थानीय गोल्छा ज्ञान मंदिर में ''अणुव्रत दिवस'' के रूप में मुनि राजकरण के सान्निध्य में आयोजित हुआ। मुनिश्री ने जीवन में प्रामाणिकता व ईमानदारी को अपनाने पर बल दिया। मुनि पूर्णानन्द व मुनि सुबाहुकुमार ने आचार्य तुलसी के विराट दर्शन व प्रेरणास्पद जीवन के प्रसंगों का उल्लेख किया। अणुव्रत समिति रतनगढ़ के अध्यक्ष वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी ने कहा संत चलते-फिरते तीर्थ होते हैं जो पदभ्रमण करते हुए मानवता का उत्थान करते रहते हैं। शिक्षाविद् भगवानदास सोनी, मोहम्मद अनवर कुरेशी व कुलदीप व्यास ने गणाधिपति के व्यक्तित्व व कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। समारोह में संतोष देवी आंचलिया, मंजू पटावरी, ऋषभ आंचलिया व नगर मंत्री महावीर प्रसाद सेवदा ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनि पीयूषकुमार ने किया। इस अवसर पर सुभाष बैद, अनिल आंचलिया, रमेशकुमार बैद, छगनलाल बोथरा इत्यादि उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन अणुव्रत गीत के संगान के साथ हुआ।

# मानवीय आचार संहिता है अणुव्रत

**देशनोक।** साध्वी उज्जवलरेखा ने राजकीय करणी कन्या विद्यालय देशनोक के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा आज के विद्यार्थी कल के कर्णधार हैं। विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ संस्कारों का बीजारोपण बहुत आवश्यक है। आज देश में हिंसा, आतंक एवं भ्रष्टाचार के बढ़ते कदमों को रोकने हेतु नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करनी होगी। अणुव्रत आंदोलन एक मानवीय आचार संहिता है। अणु का अर्थ है छोटा। व्रत का अर्थ है संकल्प। छोटे-छोटे संकल्पों से बहुत बड़ी क्रांति घटित हो सकती है। विद्यार्थियों के लिए एक व्रत है मैं परीक्षा में अवैधानिक तरीके से पास नहीं होऊंगा/होऊंगी, परीक्षा में नकल नहीं करूंगा। दूसरा नियम है कि जहां दहेज का ठहराव (मांग) होगा वहां मैं शादी नहीं करूंगा/करूंगी। तीसरे नियम में साध्वीश्री ने कहा तोड़-फोड़ मूलक हिंसात्मक प्रवृत्ति में भाग नहीं लेना। सार्वजनिक एवं सरकारी सम्पत्ति को हड़ताल आदि के समय नुकसान न पहुंचाएं। पर्यावरण की रक्षा के लिए हरे-भरे वृक्षों को न काटे। अश्लील साहित्य एवं शब्दों से बचें। 'विद्यार्थी अणुव्रत आचार संहिता' को अपनाने वाले विद्यार्थी अपने जीवन में कुछ नया कर सकेंगे। परिवार, समाज एवं अपने स्कूल के नाम को रोशन कर पाएंगे।

साध्वी अमृतप्रभा ने कहा जीवन विज्ञान सही जीवन जीने की कला है। मूल्यपरक शिक्षा का आयाम है। साध्वीश्री ने विद्यार्थियों को स्मृति विकास एवं स्वस्थता के प्रयोग करवाए। प्रारंभ साध्वियों के द्वारा मंगलाचरण से हुआ। प्रिंसीपल महोदय ने साध्वियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। साध्वी स्मितप्रभा ने हास्य रस से परिपूर्ण भावप्रधान कविता का संगान किया। संतोष सिपानी ने विचार रखे। कार्यक्रम में महिला मंडल एवं तेयुप कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

इस अवसर पर राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत शामसुखा एवं मंत्री मनोहर बाफना, कोषाध्यक्ष शुभकरण चौरड़िया, आसकरण पारख ने स्थानीय कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन दिया।

## 96 डायलिसिस हेतु घोषणा

**बैंगलोर, 20 अक्टूबर।** आचार्य तुलसी का 96वां जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में मनाया गया। साध्वी कीर्तिलता ने कहा जिस दिन मानव अणुव्रत का पालन शुरू कर देगा उस दिन धरती पर रामराज्य हो जायेगा। अणुव्रत की आचार संहिता को जीवन में उतार कर ही गुरुदेव तुलसी के जन्मदिवस ''अणुव्रत दिवस'' मनाने की सार्थकता होगी।

कर्नाटक के राज्यपाल हंसराज भारद्वाज ने कहा सांस्कृतिक उन्नयन में जैन धर्म ने आदिकाल से ही देश की एकता व अखंडता को मजबूत किया है। युग पुरुष महावीर के अहिंसा के सिद्धांत को परम धर्म बताया। परमार्थ को ही सर्वोपरि मानें। सिर्फ अपना हित न साधें, सिर्फ अपना हित न साधें, दूसरे भी सुखी रहें यह भावना जरूरी है।

इस अवसर पर महिला मंडल बैंगलोर ने 96 डायलिसिस करवाने की घोषणा अ.भा. महिला मंडल की अध्यक्ष कान्ता लोढ़ा ने की। कार्यक्रम में स्थानीय कार्यकर्ताओं के अलावा अ.भा. महिला मंडल की महामंत्री वीणा बैद, मंत्री पुष्पा गन्ना व अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

# अणुव्रत मानव मात्र के लिए उपयोगी

**लुधियाना, 26 अक्टूबर।** अणुव्रत प्रवर्तक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित आचार्य तुलसी का 96 वां जन्म दिवस ''अणुव्रत दिवस'' के रूप में इकबालगंज रोड सभा भवन में उल्लासपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम की अगुआई में 'प्रभात फेरी' निकाली गई, जिसमें भाई-बहनों व बच्चों ने जयकारे लगाते हुए आचार्य तुलसी की शिक्षाओं को प्रसारित कर रहे थे।

मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने सभा को संबोधित करते हुए कहा गुरु का नाम लेना व उनका स्मरण करना सबका कर्त्तव्य है, उपयोगी है। जीवन में धर्म का अवतरण हो, जीवन में रूपांतरण आए, संस्कार आए, यह नितांत जरूरी है। आचार्य तुलसी ने जो मार्गदर्शन दिया वह मात्र अपने संघ के लिए ही नहीं, पूरी मानव जाति के कल्याण हेतु है। आचार्य तुलसी ने जन-जन में नैतिक चेतना जगाने हेतु 'अणुव्रत आंदोलन' का प्रारंभ किया। जाति, वर्ग व संप्रदाय से मुक्त इस अणुव्रत आंदोलन ने सबमें हलचल पैदा की। युवाओं एवं महिलाओं में विकास के क्षितिज खोले। समाज सुधार में अहम् भूमिका अदा की। आचार्य तुलसी का जन्मदिन उनके मिशन को फैलाने के संकल्प के साथ मनाएं, जिससे पूरी मानव जाति लाभान्वित हो सके।

मुनि उदितकुमार ने अपने वक्तव्य में आचार्य तुलसी को महान् मनोवैज्ञानिक बताया। मुनि विजयकुमार, मुनि प्रशमकुमार, मुनि अनंतकुमार एवं संजय बरड़िया ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की। रायचंद चौरड़िया, प्रदीप दूगड़, मंजू सिंघी, श्यामलाल गुप्ता के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। संचालन संजय जैन ने किया।

## आचार्य तुलसी एक नक्षत्री पुरुष थे

**मंडी गोविंदगढ़, 26 अक्टूबर।** मुनि कमलकुमार के सान्निध्य में आचार्य तुलसी का जन्मदिवस ''अणुव्रत दिवस'' के रूप में उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। मुनिश्री ने कहा आचार्य तुलसी एक नक्षत्री पुरुष थे। बाल्यावस्था में ही दीक्षा ग्रहण कर उन्होंने स्वल्प समय में ही इक्कीस हजार पदों को कंठस्थ करके सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

आचार्य तुलसी की विनम्रता, गुरुभक्ति, पापभिरूता, समिति गुप्तियों की प्रतिपालना में जागरूकता देखकर अष्टमाचार्य कालूगणि के दिल में विशेष जगह बनायी। अष्टमाचार्य कालूगणि ने उनकी जागरूकता देखते हुए मात्र 22 वर्ष की अवस्था में ही आपको संघ के आचार्य पद पर आसीन किया। आचार्य तुलसी के मार्गदर्शन में संघ ने जो उन्नति की उसे शब्दों का जामा पहनाना मेरे लिए ही नहीं बड़े-बड़े लोगों के लिए भी असंभव है। उन्होंने केवल जैन समाज को ही नहीं जन-जन के उत्थान के लिए अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, नया मोड़, समण श्रेणी इत्यादि का जो क्रम बनाया वह प्रशंसनीय ही नहीं अन्यान्य लोगों के लिए भी अनुकरणीय है। पदलिप्सा के युग में अपने आचार्य पद का विसर्जन कर जन-जन को बोधपाठ दिया।

इस अवसर पर तरसेम बंसल, त्रिभुवन गोयल, पुष्पा देवी जैन, पद्मादेवी जैन, शिखा जैन इत्यादि ने अपने विचार प्रकट किये।

## विराट व्यक्तित्व के धनी थे आचार्य तुलसी

**पदराड़ा।** मुनि अर्हत्कुमार के सान्निध्य में आचार्य तुलसी का जन्मदिवस ''अणुव्रत दिवस'' के रूप में मनाया गया। प्रातः अनुशासन रैली का जुलूस पूरे गांव में निकाला गया। यह रैली सभा भवन में पहुंच कर सभा के रूप में परिवर्तित हो गयी। प्रारंभ दीक्षित बाफणा द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

मुनि अर्हत्कुमार ने कहा व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व इतना विराट था, जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन ही नहीं महाकठिन है। गुरुदेव तुलसी ने लघुवय में संयम को प्राप्त कर जीवन को वह ऊंचाई दी, जिसकी हरेक व्यक्ति कल्पना भी नहीं कर सकता। 22 वर्ष की उम्र में संघ का आचार्य बनना इतिहास की एक विरल घटना है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर अणुव्रत मिशन के प्रचार-प्रसार हेतु पूरे देश की लगभग एक लाख किलोमीटर की पदयात्राएं की। उनका मानना था कि पहले इंसान इंसान - फिर हिन्दू या मुलसमान। उन्होंने नैतिक उत्थान के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

मुनि भरतकुमार ने कहा आचार्य तुलसी ने अपने जीवन में अहंकार को स्थान नहीं दिया। उन्होंने आचार्य पद का विसर्जन कर नूतन इतिहास का सृजन किया। सुरेश बाफणा ने कहा आचार्य तुलसी युगद्रष्टा, दूरद्रष्टा व भविष्य-द्रष्टा आचार्य थे। कार्यक्रम में सेराप्रांत, सायरा, सेमड़, कमोल, ढ़ोल, नान्देशमा, रावलिया के सैकड़ों भाई-बहन उपस्थित थे। संचालन सुरेश बाफणा ने किया।

## महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस पर स्वेटर वितरण

**सरदारशहर।** अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के अलंकरण दिवस के अवसर पर अणुव्रत समिति सरदारशहर के तत्वावधान में स्वेटर वितरण का क्रम रहा। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत शामसुखा की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में शासन गौरव साध्वी राजीमती ने विद्यार्थियों को शक्ति अर्जित कर सुसंस्कारित नागरिक बनने का संकल्प दिलाया। उन्होंने बच्चों को नशे से दूर रहकर अपना जीवन संवारने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में उद्योगपति मूलचंद मालू, उम्मेदमल दूगड़, समिति के अध्यक्ष रावतमल सेनी, डालचंद चिंडालिया, मनोहरलाल बाफणा, प्राचार्या सुमित्रा शर्मा, मांगीलाल छाजेड़, चिमनलाल बुच्चा आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर उम्मेदमल आनंद कुमार दूगड़ जौहरी परिवार की ओर से स्कूली बालिकाओं को स्वेटर वितरित किए गए।

● सभा भवन में 26 अक्टूबर 09 को सभा भवन में जिला स्तरीय अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन साध्वी राजीमती व ललितप्रभा के सान्निध्य में रखा गया। प्रतियोगिता में चुरू जिले के सात विद्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। निर्णायक के रूप में श्यामसुंदर सर्राफ, अशोक लोढ़ा, मनीष पटावरी ने सेवाएं दी। इस अवसर पर डालचंद चिंडालिया, सम्पतराम सुराणा, पृथ्वी सिंह कल्याणपुरा, विकास पारीक, मेघराज ने विचार रखे। संचालन सम्पतराम सुराणा ने किया।

● अणुव्रत समिति सरदारशहर की ओर से नशामुक्ति रैली चुरू जिला अणुव्रत समिति के कार्यकारी अध्यक्ष डालचंद चिंडालिया के नेतृत्व निकाली गयी। रैली में तेयुप, महिला मंडल एवं समाज के लोगों ने भाग लिया।

## तीन दिवसीय अणुव्रत बालोदय शिविर

**राजसमंद, 2 नवंबर।** बालोदय प्रकल्प अणुव्रत विश्व भारती, राजसमंद में आयोजित तीन दिवसीय आवासीय शिविर का समापन समारोह डॉ. बालकृष्ण 'बालक' की अध्यक्षता व व्यवहारविज्ञ नरेन्द्र 'निर्मल' के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि नरेन्द्र 'निर्मल' ने कहा अणुविभा बालोदय के माध्यम से बालकों की भावात्मक शिक्षा के विकास के लिए जो कार्य कर रही है वह आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। अणुविभा के पास इस हेतु उपयुक्त संसाधन व विद्या है जिसके कारण भावात्मक सम्प्रेषण अधिक प्रभावशाली ढंग से किया जा रहा है।

सर्वांगीण विकास को लक्ष्य रखकर आयोजित विविध कार्यक्रमों के अंतर्गत 'मेरे जीवन के अनुभव मेरा बालकों को संदेश' में संगीतादेव, सुरेश कावड़िया, एडवोकेट संपत लढ्ढा व आशा माण्डोत ने अनुभव आधारित अपने जीवन के सत्व का सम्प्रेषण किया। नरेन्द्र 'निर्मल' द्वारा भावात्मक विकास हेतु संवाद कमल शर्मा द्वारा अभिनय, जमनालाल पंवार द्वारा संगीत बालमुकुन्द सनाढ्य द्वारा जीवन मूल्य आधारित भावात्मक संवाद, क्विज प्रकाश तातेड़, साबिर शुक्रिया द्वारा जीवन विज्ञान प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ ही परिचय बढ़ाओ - मित्र बनाओ, कक्ष प्रवृत्ति अवलोकन, फिल्म प्रदर्शन, स्लाइड शो, मॉक पार्लियामेंट, क्विज, वन भ्रमण, खेल, खुला सत्र, कठपुतली प्रदर्शन, पुस्तकालय व विधि कार्य संवाद प्रवृत्ति व खेल के माध्यम से कराये गये। शिविर में 'प्रज्ञा यात्रा' फिल्म के निर्माता आनन्द भारती, प्रबल महतो व अणुविभा के महामंत्री संचय जैन का सान्निध्य रहा।

अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. बाल कृष्ण 'बालक' ने कहा जीवन मूल्यों को जीवन में उतारने के लिए आयोजित शिविर बालकों के लिए वरदान के रूप में है। शिविर में श्रेष्ठ बालक के रूप में खुशीन व अन्य विजेता बालकों को पुरस्कृत किया गया। शिविर में राजसमंद के 8 विद्यालयों के 61 बालक-बालिकाओं की सहभागिता रही। संचालन बालोदय निदेशक बालमुकुन्द सनाढ्य के निर्देशन में साबिर शुक्रिया, संगीता ठाकुर व प्रभा सनाढ्य द्वारा किया गया। समापन कार्यक्रम का संचालन साबिर शुक्रिया ने किया।

## अणुव्रत दिवस समारोह

**सूरतगढ़।** अणुव्रत समिति सूरतगढ़ के मंत्री अनिल रांका के निवास पर आचार्य तुलसी के जन्मदिवस पर 'अणुव्रत दिवस' कार्यक्रम रखा गया। प्रारंभ अणुव्रत गीत से हुआ। समिति के अध्यक्ष डॉ. एस.के. सिद्धा ने अणुव्रत नियमों की जानकारी दी तथा सभी को इससे जुड़ने का आह्वान किया। जयश्री रांका ने कहा हमें सिर्फ नियमों की जानकारी ही नहीं लेनी है, अपितु भावनात्मक रूप से भी अणुव्रत आंदोलन से जुड़ना है। घनश्याम शर्मा ने गंगानगर जिले को पंजाब सीमा से लगे होने के कारण बच्चों को विशेष रूप से नशे से दूर रहने तथा अभिभावकों को जागरूक रहने की बात कही। अनिल धानुका ने संयम का विशेष महत्व बताया। लक्ष्मी देवी नौलखा ने गीत के माध्यम से आचार्य तुलसी के पुरुषार्थ का बखान किया। नीतू बैद ने भ्रूणहत्या की निंदा की तथा कविता के माध्यम से भ्रूण हत्या न करने, न करवाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन अनिल रांका ने किया।

## 'जस की रेखा' पुस्तक का विमोचन

**सूरत, 31 अक्टूबर।** 'अणुव्रत सेवी' जसराज जैन निवासी सायरा, प्रवासी सूरत के जीवन की आत्मकथा पर आधारित पुस्तक 'जस की रेखा' जसराज जैन परिवार के सदस्यों ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ को 27 अक्टूबर 09 को लाडनूं में लोकार्पण हेतु समर्पित की। नूतन भरतकुमार मेहता व मुनि सुखलाल ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर युवाचार्य महाश्रमण एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा उपस्थित थे।

● 1 नवंबर 09 को सभा भवन सूरत में साध्वी सुमनश्री के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान उपस्थित जैन विश्व भारती लाडनूं की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रभा को भी यह पुस्तक भेंट की गयी। इस अवसर पर पुस्तक के संपादक जीतूभाई मेहता, सहयोगी अणुव्रत सेवी मीठालाल भोगर का जसराज जैन ने साहित्य भेंट कर सम्मान किया।

## जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण

**सूरत, 1 नवंबर।** अणुव्रत समिति सायरा के उपाध्यक्ष बाबूलाल कावडिया के सान्निध्य में रा.सी.उ.मा.वि., रा.मा.बा.वि., रा.उ.प्रा.बा.वि., रा. आदर्श प्रा.वि. सायरा के लगभग 500 छात्र-छात्राओं ने वर्ष 2007-2008 में जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत की परीक्षाओं में भाग लिया। इन परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरण किये गये। परीक्षा प्रभारी राजेन्द्र गोरवाड़ा ने संचालन किया। रा.सी.उ.मा.वि. के प्रधानाध्यापक ने अपने विचार व्यक्त किए। विद्यार्थियों के साथ-साथ कुछ शिक्षकों ने भी परीक्षाओं में भाग लिया, उनका भी सम्मान किया गया। इन परीक्षाओं की आयोजना में 'अणुव्रत सेवी' जसराज जैन का सराहनीय श्रम रहा।

## प्रेक्षाध्यान शिविर

**मऊ।** समणी निर्देशिका मंजूप्रज्ञा ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा भारतीय संस्कृति में आत्मा को अजर-अमर माना गया है। ध्यान की प्रक्रिया उस तक पहुंचने का प्रमुख साधन है। शरीर से परे चेतना का अपना जगत् है। प्रेक्षाध्यान आत्म साक्षात्कार का उत्तम आयाम है। साध्वी स्वर्णप्रज्ञा ने कहा जब आत्मा का आह्लाद जागता है, तब मन के संस्कार सुप्त होते हैं। प्रेक्षाध्यान विभावों को हटाकर विधेयात्मक भावों का संचार करता है। इस एक दिवसीय शिविर में दीर्घश्वास, कायोत्सर्ग, चैतन्य केन्द्र का प्रायोगिक अभ्यास करवाया गया। संभागियों ने आगे भी ऐसे शिविर लगाने की मनुहार की।

## प्रेक्षाध्यान जीवन विज्ञान की अनुगूंज

**सूरत।** वीर नर्मद साउथ गुजरात विश्वविद्यालय सूरत में आयोजित एन.एस.एस. के साप्ताहिक मेगा शिविर में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण दिया गया। 55 कॉलेजों से आए हुए लगभग 3000 विद्यार्थियों एवं शिविर के अधिकारियों ने प्रतिदिन ध्यान एवं योगाभ्यास किया।

समणी निर्देशिका प्रतिभाप्रज्ञा ने विशाल छात्र समूह एवं शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा प्रेक्षाध्यान भारत की जैन योग के संदर्भ में प्राचीन विरासत है। आचार्य महाप्रज्ञ ने इसे आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत कर आबाल वृद्ध के लिए अत्यन्त सरल और उपयोगी बनाया है। तनाव भरे इस युग में विद्यार्थियों का मानसिक एवं भावनात्मक विकास हो सके तथा सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण हेतु शिक्षा जगत् में उन्होंने जीवन विज्ञान का उपक्रम प्रस्तुत किया। प्रतिदिन के इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम योगाभ्यास, प्राणायाम, यौगिक क्रियाएं, प्रेक्षाध्यान अनुप्रेक्षा, कायोत्सर्ग एवं संकल्प आदि प्रायोगिक अभ्यास कराए गए। इसके साथ-साथ सैद्धांतिक पक्ष पर भी वक्तव्य हुए।

कार्यक्रम में विशेष रुचि लेते हुए वीर नर्मद साउथ गुजरात विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर प्रो. बी.ए. प्रजापति ने सपरिवार प्रेक्षाध्यान, योग कक्षाओं में नियमित अभ्यास किया। प्रशिक्षण हेतु जैन विश्व भारती के प्रद्युम्न शाह, युवराज, रामदेवराम, अशोक, हेमलता गुलगुलिया एवं विद्यार्थिनी संगीता का विशिष्ट योगदान रहा। सूरत के जीवन विज्ञान विषय में एम.ए. किए हुए छात्र-छात्राओं की सहायक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

शिविर के शैक्षणिक कार्यक्रम में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा का विशिष्ट वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। समणीजी ने सकारात्मक सोच और व्यक्तित्व विकास पर प्रभावी वक्तव्य दिया।

शिविर में सूरत शहर के मेयर सांसद तथा अन्य महानुभाव समय-समय पर उपस्थित हुए। समणी प्रतिभाप्रज्ञा ने उद्घाटन सत्र एवं समापन सत्र में अपने सारगर्भित वक्तव्य दिये। समणी पुण्यप्रज्ञा ने सुमधुर संगीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की आयोजना में सूरत सभा एवं अणुव्रत समिति सूरत की उल्लेखनीय सहभागिता रही। वीर नर्मद विश्वविद्यालय के बुलेटिन में प्रकाशित आचार्य महाप्रज्ञ के संदेश का वाचन 'अणुव्रत सेवी' बालूभाई ने किया। कार्यक्रम की सफलता में बालूभाई, अंकेशभाई एवं विनोद बांठिया का सराहनीय श्रम रहा।

## लुधियाना में ज्ञानशाला का आयोजन

**लुधियाना, 2 नवंबर।** ज्ञानशाला के राष्ट्रीय प्रभारी मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', सहप्रभारी मुनि उदितकुमार के सान्निध्य में ज्ञानशाला का उपक्रम सुनियोजित ढंग से चल रहा है। इसमें 80 बच्चों ने पंजीकरण कराया। प्रति रविवार औसतन 70 बच्चे भाग ले रहे हैं। मुनि प्रशमकुमार नियमित प्रशिक्षण दे रहे हैं। ज्ञानशाला में विविध प्रतियोगिताएं होती रहती हैं। अलग-अलग व्यक्तियों के द्वारा बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप पारितोषिक दिए जाते हैं। स्वलप समय में ज्ञानशाला ने अच्छी छाप छोड़ी है। ज्ञानार्थी बच्चों ने अपनी शानदार प्रस्तुति दी।

'ज्ञानशाला हम जाएंगे' शीर्षक से लघु नाटिका प्रस्तुत की। नाटिका का संचालन रीना जैन ने किया। बच्चों ने गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन ममता सुराणा ने किया। सभाध्यक्ष महेन्द्रपाल गुप्ता ने बच्चों को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार दिए। प्रशिक्षुओं को भी सम्मानित किया गया।

## कारागृह में नशामुक्ति अभियान

**मिर्जापुर।** समणी निर्देशिका मंजूप्रज्ञा ने केन्द्रीय जेल के कैदियों को संबोधित करते हुए कहा जब व्यक्ति प्रेम, करुणा, मैत्री तथा ईमानदारी आदि गुण अपनाते हैं, तब वह महानता की श्रेणी में आता है और वही व्यक्ति चोरी, हिंसा, भ्रष्टाचारी, आतंक आदि अवगुण अपनाता है, वह शैतान बन जाता है। कारागृह सुधारगृह भी बन जाता है यदि जीवन सुधारने का संकल्प लें। गलत कार्य करने वाले कभी कानून को धोखा देकर बच जाते हैं, पर कुछ लोग कानून के हत्थे चढ़ जाते हैं। समणी सम्प्रतिप्रज्ञा ने कहा कि व्यक्ति परिस्थिति, प्रमाद, आवेश, आवेग, गरीबी तथा बदले के भाव से परिभूत होकर ऐसा कार्य करते हैं, वस्तुतः ऐसे व्यक्ति भी साधु-संतों की संगति पाकर देश के उज्जवल भविष्य कर्ता बन जाते हैं। समणी मंजूप्रज्ञा ने प्रेक्षाध्यान के प्रायोगिक प्रयोग करवाये तथा अणुव्रत नियमों की विशद चर्चा की। परिणामतः सैकड़ों कैदियों ने व्यसनमुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। जेलर यादव ने कहा यह स्थान नक्सलवादियों का संवेदनशील स्थान है। आप लोगों की प्रेरणा से यह स्थान सुधारगृह बन जाये तो देश के प्रति अभूतपूर्व कार्य होगा। इस कार्य के संपादन कें पूनमचंद बरड़िया, अनूप पुगलिया और महावीर जैन का सराहनीय श्रम रहा।

## 130 बहनों ने भ्रूणहत्या न करने का संकल्प लिया

**कोलकाता, 6 नवंबर।** साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में गिरीश पार्क हरियाणा भवन में कन्या सुरक्षा अभियान के अंतर्गत कार्यशाला का आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने संभागी बहनों को संबोधित करते हुए कहा आज सर्वत्र नारी जागृति की चर्चा है। पर जाग्रति की पहली निष्पत्ति है महिलाओं की सामाजिक सोच बदले। लड़के और लड़की के बीच जो भेदपरक दृष्टिकोण सदियों से चला आ रहा है, उसे समाप्त करने में अपनी दक्षता का उपयोग करें। महत्व इस बात का नहीं कि शिशु लड़का है या लड़की? महत्व इस बात का है उसे शिक्षा-दीक्षा और संस्कारों द्वारा किस रूप में समर्थ और आत्मनिर्भर बनाया जाये। जिससे वह परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बन सके। साध्वीश्री के आह्वान पर सभी बहनों ने भ्रूणहत्या न करने का संकल्प लिया।

साध्वी मधुलता ने बहनों को सशक्त आह्वान करते हुए कहा कन्याओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी स्वयं कन्याओं पर है। वर्तमान में कन्याओं को संस्कारी बनाने की महती आवश्यकता है। पश्चिमी संस्कृति का बढ़ता प्रभाव, वैज्ञानिक संसाधन, सह-शिक्षा, असंयम और आत्मानुशासन के बढ़ते प्रभाव के कारण कन्याओं के कदम गलत दिशा में अग्रसर हो जाते हैं। एक समझदार और दायित्वशील माँ का कर्त्तव्य है कि अपनी बेटियों को स्वतंत्रता के साथ सीमाओं का बोध कराए। क्योंकि सीमा का अतिक्रमण ही समाज और परिवार को रुग्ण बनाता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तारा दूगड़ एवं उनकी टीम ने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा रचित कन्या सुरक्षा गीत का संगान किया। मृदुला कोठारी, प्रसन्न चोपड़ा ने कविताएं प्रस्तुत की। सरिता आंचलिया, समता चोपड़ा, सरला दूगड़, हेमलता कोठारी, गुलाब चोरड़िया, शांता भूतोड़िया, राज बैंगानी एवं अमराव बैद ने विचार रखे। जतन बैंगानी ने सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। संचालन कमला छाजेड़ ने किया।

## नशामुक्ति कार्यक्रम

**मंडी गोविंदगढ़।** मुनि कमल कुमार के सान्निध्य में नशामुक्ति पर विशेष कार्यक्रम चला। मुनिश्री ने कहा नशे की बीमारी प्रांत-प्रांत में ही नहीं घर-घर में फैल रही है। भाईयों के साथ-साथ कहीं-कहीं बहने भी व्यसनों से ग्रस्त नजर आती हैं। अज्ञानता और अविवेक के कारण आज सर्वत्र तबाही हो रही है इससे बचने के लिए सत्संग सत्साहित्य सुगुरु शरण संकल्प शक्ति आदि का अगर सहारा लिया जाएगा तो व्यक्ति इस दावानल से बच सकता है। स्वयं के दृढ़ संकल्प द्वारा ही इस समस्या से बच सकते हैं। जब तक स्वयं का दृढ़ संकल्प नहीं होगा तब तक इन पर नियंत्रण करना अति दुश्कर है। इस अवसर पर अग्रवाल युवा संगठन के अध्यक्ष सज्जन गोयल एवं अन्य महानुभावों की प्रमुख उपस्थिति रही। कार्यक्रम में इन्द्रसेन जैन, संदीप जैन, राजकुमार जैन, प्रवीण जैन, त्रिभुवन गोयल, सुरेन्द्र मित्तल, लक्ष्मी मित्तल, पद्मा जैन, निशा बंसल ने अपने विचार रखे। अतिथियों का स्वागत रमेश मित्तल ने किया। संयोजन पंकज जैन ने किया।

● मंडी गोविन्दगढ़ में 2 नवंबर 09 को मुनि कमलकुमार के सान्निध्य में 'साम्प्रदायिक सद्भाव सम्मेलन' का आयोजन हुआ। शुभारंभ लक्ष्मी मित्तल और मधु जैन द्वारा मंगलाचरण से हुआ। रमेश मित्तल ने समागत प्रतिनिधियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के संयोजक संदीप जैन थे। इस अवसर पर आर्य समाज के आचार्य नरेन्द्र संत निरंकारी मिशन के सुरिन्दर शारदा, गायत्री आश्रम के परमानंद शुक्ल, गायत्री योग संस्थान के स्वामी राजकुमार भारती, सनातन धर्म के पंडित अशोक कुमार और आदि धर्म समाज के राजेश शाह ने सम्मेलन के आयोजन हेतु स्थानीय सभा की प्रशंसा करते हुए कहा निस्संदेह मानव जन्म दुर्लभता से मिला है। हमें इसको व्यर्थ न गंवाकर इसकी सफलता के लिए सतत प्रयत्न करना चाहिए।

मुनि कमलकुमार ने कहा व्यक्ति अपने प्रमाद को दूर करके, अपने सद्व्यवहार, सदाचार, विनम्रता द्वारा अपने जीवन का कल्याण कर सकता है। यदि व्यक्ति की मति अच्छी होगी तो निश्चय ही उसकी गति भी अच्छी होगी। आत्मज्ञान, आत्मस्नान और आत्मशक्ति से बढ़कर कुछ भी नहीं है। आज विद्या के साथ विनय का अभाव है। इसलिये लोगों में तनाव बहुत है। त्रिभुवन गोयल ने सभी का आभार व्यक्त किया। सुरिन्दर मित्तल ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी।

## प्रेक्षाध्यान के बढ़ते कदम

**श्रीडूंगरगढ़।** मुनि राकेशकुमार की प्रेरणा से प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम आगे बढ़ रहा है। तुलसी मेडिकल एवं रिसर्च सेंटर में मुनिश्री की प्रेरणा से 'प्रेक्षा सेंटर' का प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर मुनि राकेशकुमार ने कहा प्रेक्षाध्यान की साधना तनाव मुक्ति की रामबाण औषधि है। प्रेक्षाध्यान से हम आत्मदर्शन के सोपान पर चढ़ सकते हैं। मुनि सुधाकर एवं मुनि दीपकुमार ने प्रेक्षाध्यान के महत्त्व पर प्रकाश डाला। शंभुदयाल टाक ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए। 'प्रेक्षा सेंटर' में सुबह 6 से 7 बजे तक प्रेक्षाध्यान की कक्षा लेते हैं। अणुव्रत समिति श्रीडूंगरगढ़ द्वारा शहर के स्कूलों में प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराये जाते है। इन प्रयोगों से विद्यार्थियों में उत्साह का संचार हुआ है।

## हृदय रोग : कारण और निवारण

**कोलकाता, 29 अक्टूबर।** वर्तमान युग में बढ़ती जा रही व्यापक समस्या है अस्वस्थता। शरीर की बाहरी चिकित्सा के प्रभाव में व्यक्ति यह भूल जाता है कि बीमारी के कारण हमारे भीतर ही हैं। ये विचार साध्वी कनकश्री ने कोलकाता सभा द्वारा हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. बिमल छाजेड़ के निर्देशन में आयोजित "हृदय रोग कारण और निवारण" विषयक शिविर में व्यक्त किये। शिविर में 500 संभागियों ने भाग लिया। मुनिश्री ने आगे कहा आधुनिक चिकित्सा पद्धति ऐसी स्थिति में स्थायी समाधान प्रदान नहीं करती है और न ही यह व्यक्ति को रोग से अरोग्य की ओर ले जाती है। आरोग्य से बचने के लिए प्रतिदिन नियमित प्रेक्षाध्यान, योगासन, प्राणायाम का अभ्यास जरूरी है। डॉ. बिमल छाजेड़ ने अपनी चिकित्सा पद्धति में हृदय रोगियों के लिए प्रेक्षाध्यान, आसन, व्यायाम, सात्विक आहार आदि का प्रयोग कर प्रभावशाली परिणाम प्राप्त किए हैं।

डॉ. बिमल छाजेड़ ने अपने वक्तव्य में हृदय रोग के कारणों की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कम्प्यूटर के माध्यम से हृदय, रक्त प्रवाह, धमनियां इत्यादि की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी की प्रेरणा से ही मुझे अपने अनुसंधान की ओर कदम बढ़ाने हेतु ऊर्जा प्राप्त हुई। आचार्य महाप्रज्ञ की प्रेक्षाध्यान पद्धति मेरी चिकित्सा पद्धति की आधारशिला बनी है।

शिविर की आयोजना में कोलकाता सभा के पदाधिकारियों एवं सहसभा के मंत्री नरेन्द्र मणोत का सराहनीय श्रम रहा। आभार व्यक्त करनसिंह नाहटा ने किया। डॉ. छाजेड़ का सम्मान देवेन्द्र कुमार दूगड़ एवं भंवरलाल घोड़ावत ने किया।

## जीवन विज्ञान दिवस समारोह

**दिल्ली।** मुनि ताराचंद, मुनि सुमतिकुमार के सान्निध्य में ओसवाल भवन में 'जीवन विज्ञान दिवस समारोह' अणुव्रत महासमिति एवं दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के तत्वावधान में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में डॉ. वी.के. मोंगा निगम पार्षद कृष्णानगर, नीमा भगत पार्षद गीता कॉलोनी, मंजु त्रिवेदी विद्या भारती स्कूल की प्राचार्या, डॉ. सुशीला शर्मा, इन्द्रमोहन, अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

मुनि सुमतिकुमार ने कहा जीवन विज्ञान जीने की कला है। आज बौद्धिक विकास पर बल दिया जा रहा है लेकिन मानसिक व भावात्मक विकास नहीं हो पा रहा है। सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास हेतु जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण जरूरी है। मुनि देवार्यकुमार ने कहा जीवन विज्ञान व्यक्तित्व को कांतियुक्त बनाने की प्रेरणा देता है। अणव्रत महासमिति की शिक्षामंत्री एवं योग प्रशिक्षिका राज गुनेचा ने जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए। उन्होंने कहा कि शिक्षा में जीवन विज्ञान को लागू किया जाये। इसकी शुरुआत नगर निगम स्कूलों से की जाय। डॉ. वी. के. मोंगा ने कहा विश्व स्वास्थ्य संगठन कहता है कि शारीरिक एवं भावात्मक स्वस्थता हेतु जीवन विज्ञान का शिक्षा में समावेश जरूरी है। पार्षद नीमा भगत ने कहा कि साधु-संतों के कारण ही आज हमारे देश की संस्कृति सुरक्षित है। इस अवसर पर कई स्कूलों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुसुम लूणिया ने किया।

## प्रेक्षाध्यान शिविर

**बनारस।** समणी निर्देशिका मंजुप्रज्ञा के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ। समणी मंजूप्रज्ञा ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा बनारस धार्मिक तथा ऐतिहासिक नगरी है। काशी के नाम से इसकी प्राचीनता स्वयंसिद्ध है। गंगा के नीर से सिंचित इस धरती पर प्रेक्षाध्यान के बीजों को अंकुरित कर नये मानव का सृजन करना है। प्रेक्षाध्यान का उद्देश्य आत्मा से आत्मा का साक्षात्कार करना है। व्यक्ति के मन की विषम धरातल पर नकारात्मक भाव पैदा होते हैं और वही विचार आभामंडल को दूषित करते हैं। प्रेक्षाध्यान के माध्यम से साधक मन को एकाग्र करके, उसकी शक्तियों को जागृत करता है।

समणी सम्प्रतिप्रज्ञा ने कहा प्रेक्षाध्यान के द्वारा आभामंडल को सुंदर एवं स्वस्थ बनाया जा सकता है। प्रेक्षाध्यान के विभिन्न आयाम आत्म साक्षात्कार में सहायक है। इस अवसर पर शिविरार्थियों को एक्यूप्रेशर, कायोत्सर्ग, यौगिक क्रियाएं तथा रंग चिकित्सा के प्रयोग करवाए। संभागियों ने बड़े उत्साह के साथ प्रत्येक सत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करवायी।

## डायबिटिज कार्यशाला

**भदोही।** समणी निर्देशिका मंजुप्रज्ञा ने डायबिटिज कार्यशाला में उपस्थित संभागियों को संबोधित करते हुए कहा यह बीमारी पाचन संस्थान विशेष रूप से पेनक्रियाज के ठीक ढंग से काम नहीं करने पर होता है। पेनक्रियाज इन्सुलिन नाम का स्राव छोड़ती है। परिणामतः शर्करा ग्लूकोज में परिवर्तित होकर रक्तकोशों में पहुंचती है। इसके अभाव में रक्त में शर्करा की मात्रा बढ़ जाती है। इन्सुलिन चाबी है, जो कोशिका में ग्लूकोज के लिए दरवाजा खोलती है। अधिकांशतः आरामदायी जीवन जीने वाले व्यक्ति को यह बीमारी होने की संभावना बढ़ जाती है। इस अवसर पर समणीजी ने आसन, प्राणायाम के प्रयोग करवाए। कार्यक्रम का शुभारंभ बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

## मुझे अच्छा इन्सान बनना है

**सरायपाली (छत्तीसगढ़)।** समणी विपुलप्रज्ञा ने स्थानीय प्रतिभा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों को अच्छे विद्यार्थी बनने एवं सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की बातें बताते स्मरण शक्ति बढ़ाने संबंधी ज्ञानमुद्रा, महाप्राण ध्वनि इत्यादि का अभ्यास करवाया। उन्होंने छात्र जीवन को स्वर्णिम काल बताते हुए टी.वी. में कम एवं पढ़ाई में ज्यादा समय देने की बात कही। साथ ही अनुशासन में रहते हुए शिक्षकों का आदर सम्मान करते हुए अध्ययन में जुटे रहने का आह्वान किया, ताकि प्रतिभा पब्लिक स्कूल में कई अर्जुन पैदा हो सकें। अंत में गीत की कुछ पंक्तियों द्वारा विद्यार्थियों को समझाया।

इस अवसर पर छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक-शिक्षिकाएं बड़ी संख्या में उपस्थित थे। प्राचार्य सुरेश मेहर और अवदेश अग्रवाल ने समणीजी के प्रवचन से प्रभावित होकर कहा कि हमें कम समय में अधिक ज्ञान प्रदान किया। कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठ लोग भी उपस्थित थे। महेन्द्र जैन, मोहन जैन, मनोज जैन, मंजुदेवी जैन, ममता संचेती, सुनीता जैन इत्यादि का कार्यक्रम की आयोजना में सराहनीय योगदान रहा।

## संस्कारवान बच्चे ही राष्ट्र के निर्माता

**गंगापुर, 4 नवम्बर।** बच्चों के जीवन में सुसंस्कारों का प्रवेश आवश्यक है। संस्कारवान पीढ़ी ही देश को ऊंचाइयां दे सकती हैं। इसके लिए अपेक्षा है कि शिक्षक वर्ग एवं अभिभावकगण अपने बच्चों को संस्कारवान बनाने में अपने कर्त्तव्य का वहन करें। अणुव्रत एक ऐसा सूत्र है जो व्यक्ति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता है। ये विचार साध्वी सम्यक्प्रभा ने अमित बोलिया विद्या निकेतन प्रांगण में अणुव्रत समिति गंगापुर के तत्वावधान में चन्द्रसिंह, अशोक कुमार कोठारी के सौजन्य से आयोजित विद्यालयी गणवेश वितरण समारोह में व्यक्त किए। मुख्य अतिथि अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका थे। अध्यक्षता राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामशुखा ने की। विशिष्ट अतिथि शंकरलाल पीतलिया, वित्त प्रभारी तुलसी सेवा संस्थान भीलवाड़ा एवं मनोहर लाल बाफना थे। कार्यक्रम का प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश बोलिया एवं संरक्षक देवेन्द्र कुमार हिरण ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया एवं विद्यालय परिवार के छात्र-छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। साध्वी मलयप्रभा ने कहा बच्चों को चारित्रिक पोशाक की अपेक्षा है। वे अणुव्रत के द्वारा अपने जीवन निर्माण का लक्ष्य बनाएं। साध्वी संकल्पप्रभा ने भी अपने विचार रखे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि निर्मल रांका, राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष सम्पतमल सामशुखा, विशिष्ट अतिथि पीतलिया एवं मनोहरलाल बाफना ने अणुव्रत दर्शन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा आतंकवाद, उग्रवाद एवं अलगाववाद का मुकाबला अणुव्रत द्वारा ही संभव है। समिति के परामर्शक शंकरसिंह राणावत ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समारोह में अतिथियों द्वारा 222 विद्यार्थियों को विद्यालयी गणवेश दिये गये। विद्यालय की शिक्षिका सुनिता रांका ने आभार ज्ञापित किया। संचालन मदनलाल मंडोवरा ने किया। कार्यक्रम का समापन संयम ही जीवन है के उद्घोष के साथ हुआ।

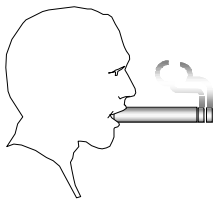

आपका मुँह
ऍश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

## अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर लाडनूं

**लाडनूं 6 नवम्बर।** प्रेक्षाध्यान के प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में चल रहे 8वें अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में अनुवादक के तौर पर पीछले 5 सालों से भाग ले रही रूस की माजुका मारिया ने बताया कि मैं आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तकों का अनुवाद कर रही हूं। उनके साहित्य को पढ़ने से मेरे जीवन में बदलाव आया है। उनके विचारों से रूस के लोग लाभान्वित हों इसलिए मैंने अब तक ''वाई मेडिटेट'' तब होता है ध्यान का जन्म, 'कैसे सोचें' 'मिरर ऑन द सेल्फ' पुस्तकों का रूसी भाषा में अनुवाद किया है।

टूरिज्म क्षेत्र से जुड़ी मारिया ने कहा कि मैंने ध्यान के प्रयोग अनेक जगहों पर किये हैं, पर उन सबसे ज्यादा प्रेक्षाध्यान वैज्ञानिक एवं शक्तिशाली लगा। इसके अभ्यास से व्यक्ति अपने जीवन को तनावमुक्त बना सकता है और नई ऊर्जा पा सकता है। उन्होंने भारतीय संस्कृति और रूस की संस्कृति के संदर्भ में कहा कि यहां की संस्कृति रूस से भिन्न है। रूसी परिवार को महत्त्व नहीं दिया जाता है। उन्होंने भारत के विकास में बाधक तत्त्वों पर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि भारत ने पिछले सालों में बहुत विकास किया है। पर भ्रष्टाचार के कारण जो गति होनी चाहिए वह नहीं है।

मारिया ने कहा कि मुझे भारत में एक व्यवस्था अच्छी नहीं लगी। जब मैं 18 साल की थी तब यहां आई थी। उस समय मुझे पहली बार लड़की होने का अहसास हुआ। रूस में महिला-पुरुष में कोई भेद नहीं देखा जाता है। यहां पर पुरुष प्रमुख व्यवस्था है इसे मैं पसंद नहीं करती हूं। सब मानव हैं, इसलिए सबको समान दर्जा मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि मुझे हिन्दुस्तान के लोग बहुत अच्छे लगे। उनका मधुरतापूर्ण व्यवहार भारत में बार-बार आने को मजबूर कर देता है।

शिविर में कजाकिस्तान से आई नात्रिया ने कहा कि प्रेक्षाध्यान शिविर में चौथी बार आई हूं। यहां पर पुनर्जन्म के बारे में जानकर आश्चर्य हुआ। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं अपने पूर्व जन्म को जान सकती हूं। इस शिविर ने भारत की यात्रा को यादगार बना दिया है। मैंने कभी ध्यान नहीं दिया था। यहां पर एक अदभूत अनुभव हुआ है।

शिविर के एक अन्य सहभागी ऋषभ दुधोड़िया ने कहा कि जैन साधना पद्धति में रूचि रखता हूं पर कभी ध्यान का प्रयोग नहीं किया था। रिस्तेदारों से अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर की सराहना सुनी थी इसलिए इसमें भाग लिया। यहां पर मुझे बहुत कुछ नया मिला है। आचार्य महाप्रज्ञ के अनेकांतवादी दृष्टिकोण ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। मैं उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाने में अपनी शक्ति का नियोजन करूंगा।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग ले रहे विदेशी शिविरार्थियों ने तुलसी कला दीर्घा का अवलोकन किया। उन्होंने जब वहां प्रदर्शित आचार्य महाप्रज्ञ के शिष्य-शिष्याओं द्वारा निर्मित काष्ठकला के अद्भूत नमूने, हस्तनिर्मित सूत की मालाओं, प्राचीन ताड़पात्र सचित्र पाण्डुलिपियां, जीवन को दिशा देने वाले चित्रों को देखा तो खुशी से उछलते हुए कहने लगे वाह! वेरी ब्यूटीफूल आर्ट। विदेशी दल को मुनि कीर्तिकुमार, मुनि जयंतकुमार, मुनि विनीत कुमार, मुनि गौतमकुमार ने तुलसी कला प्रेक्षा में प्रदर्शित कला कृतियों के बारे में जानकारी दी। देश की प्राचीन संस्कृति, प्राच्य विद्या एवं विलक्षण कला को समेटे यह कला दीर्घा विदेशियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रही। उनकी प्रत्येक कला को गहराई से जानने की उत्सुकता कलाओं की श्रेष्ठता सिद्ध कर रही थी। विदेशी दल ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय द्वारा संचालित वर्धमान ग्रंथागार में प्रदर्शित 60 हजार से भी ज्यादा पुस्तकों को देखकर आश्चर्य व्यक्त किया और उन्होंने ग्रंथागार को अखूत ज्ञान राशि को समेटने वाला ग्रंथागार बताया।

# कामयाबी के 30 जीवन मूल्य

● एल.आर. भारती ●

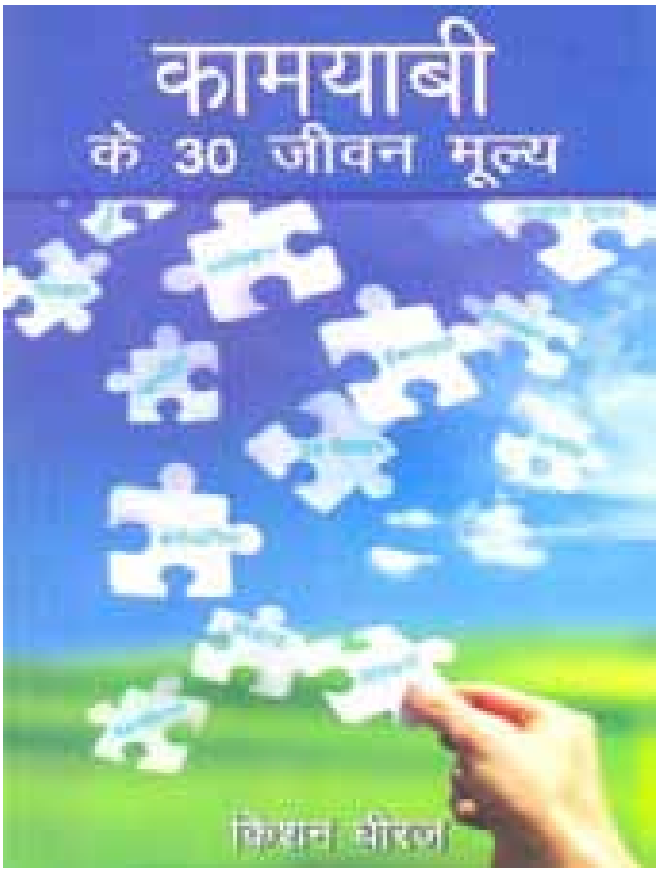


जीवन मूल्यों पर आधारित 'कामयाबी के 30 जीवन मूल्य' प्रस्तुत पुस्तक में दुनिया के अनेक महापुरुषों के जीवन प्रसंगों का जिक्र किया गया है। जिन्हें पढ़कर आज के युवक-युवतियां प्रेरणा प्राप्त कर अपनी सामर्थ्य का सही उपयोग कर सकते हैं। क्योंकि दुनिया के हर व्यक्ति में कुछ न कुछ गुण छिपे होते हैं और प्रतिभा होती है। प्रश्न उठता है कि उक्त प्रतिभा का प्रकटीकरण कैसे हो। इसके लिए कोई गुरु चाहिए जो अपने गुरुमंत्र द्वारा आदमी में छुपी प्रतिभा को बाहर ला सके। मनुष्य जीवन के साथ अनेक भ्रांतियां जुड़ी हुई हैं। उन्हें दूर करने की दिशा में क्या करें, क्या न करें की विषम परिस्थिति उत्पन्न हो तो महापुरुषों द्वारा दिए गए मार्गदर्शन और उनके अनुभवों से कुछ सीखा जा सकता है। यही हैं वे गुरु मंत्र जो इस पुस्तक में लेखक किशन धीरज ने संकलित कर कामयाबी का रास्ता सुझाया है।

पुस्तक में अनेक महापुरुषों के प्रेरणादायक संस्मरण देकर पाठक को नकारात्मकता से दूर रखने का प्रयास किया गया है। पुरुषार्थ एवं उद्देश्यपरक जीवन का मंतव्य लेखक का रहा है। जिससे पाठक अपने विवेकपूर्ण चिंतन के बाद जीवन में कामयाबी की डगर को अपनाने हेतु उक्त प्रतिभा को सकारात्मक दिशा में ले जाने योग्य हो जाए। चाणक्य ने कहा है जिस व्यक्ति को अपनी योग्यताओं का भान हो जाता है वही अपने पुरुषार्थ का समूचा सदुपयोग कर पाता है। हमारे जीवन की जो भी समस्याएं हैं, उसका कारण अपने में अन्तर्निहित दोष और दुर्गुण ही है। जब तक अपने अंतः को दोष-दुर्गुण से ग्रसित किए हुए हैं तब तक समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। बल्कि इन दोष-दुर्गुणों से ग्रसित रहने के कारण अनेक नयी समस्याओं का जन्म होता ही रहता है। क्योंकि जो लोग बहिर्मुखी होते हैं वे अपने दोष और दुर्गुण को नहीं देख पाते हैं।

यदि व्यक्ति अपने दोष और दुर्गुणों को दूर करते रहने का अभ्यास करता रहे तो वह सारी समस्याओं का समाधान कर सकता है। आदमी का सबसे बड़ा शत्रु अहंकार है जो किसी न किसी दिन उसका पतन कर देता है, चाहे वह भौतिक क्षेत्र का हो या आत्मप्रशंसा का। पर अहंकार है पतन का रास्ता, इससे बचने का आग्रह किया है। आदमी अपनी असफलता को अपना दुर्भाग्य मान बैठ असफलताओं के दुखद अनुभवों से समझौता कर लेता है। कामयाबी केवल अपने ईमानदार प्रयास से संभव है जिसके हेतु निष्ठा, साहस, समर्पण व ईमानदारी की आवश्यकता है। अच्छी पुस्तकें पढ़ना, सद्संगति में रहना स्वाध्याय और चिंतन करने पर लेखक ने जोर दिया है। जिससे निराश व्यक्ति भी अपने भीतर नये उत्साह और आत्मबल का अनुभव करेगा। लेखक ने ठीक ही किया है कि प्रस्तुत पुस्तक में दुनिया के अनेक महापुरुषों के जीवन के प्रेरणास्पद, प्रसंग देकर उनके श्रेष्ठ कथनों का जिक्र किया।

पुस्तक का आवरण आकर्षक है। स्वच्छ मुद्रण व सुदृढ़ जिल्द के साथ-साथ यह एक पठनीय कृति है जो सभी के लिए पढ़ना हितकारी होगा।

| | |
|---|---|
| पुस्तक | : कामयाबी के 30 जीवन मूल्य |
| लेखक | : किशन धीरज |
| पृष्ठ | : 100 मूल्य : 125 रुपये |
| प्रकाशक | : पुस्तक सदन, 231, बापू बाजार उदयपुर (राजस्थान) |

*रोशनारा रोड, सब्जी मंडी, दिल्ली–7*



www. Terapanthinfo.com